श्रीवीतरागाय नमः ।

कहानी संग्रह

भाग २ रा

संग्रहकर्ता—

श्री विदुषीरत्न ब्र० पं० चंदाबाईजी, संपादिका—
"जैन महिलादर्श" और संस्थापिका—संचालिका
जैन बालाविश्राम, धर्मकुञ्ज, आरा।

प्रकाशक—

मूलचंद किसनदास कापड़िया,
दि० जैन पुस्तकालय, गांधीचौक—सूरत SURAT.

श्रीमती पुत्रवधू राजेश्वरीदेवी ध० प० स्व०
बाबू चक्रेश्वरकुमारजी जैन रईस—आराकी
ओरसे "जैन महिलादर्श" के
ग्राहकोंको भेट।

प्रथमावृत्ति] वीर सं० २४९० [प्रति १२००

मूल्य—दो रुपये

इस कहानीसंग्रहको भी प्रेम प्रदान करेंगे। पहली पुस्तक 'कहानी' संग्रह अब दि० जैन पुस्तकालय सूरतमें बहुत कम रही है अतः जिनको चाहिये सूरतसे मगा लेना चाहिये अन्यथा दूसरी आवृत्तिके लिये इन्तजार करना होगा।

पहली कहानीसंग्रहकी समालोचना सभी जैन पत्रोंने उत्तम की है, उनको यहां देना पृष्ठ संख्या बढाना ही होगा अत देना व्यर्थ है। व्यक्तिगत पत्रोंसे भी कहानीसंग्रहकी प्रशंसा प्राप्त हुयी है। श्रीमान् पण्डितप्रवर जगन्मोहनलालजी शास्त्री कटनी लिखते हैं कि 'यह पुस्तक महिलाओंके लिये अमृतका प्याला है' इसी प्रकार अन्यान्य महानुभावोंने भी लिखा है। अतः हम सबकी आभारी हैं। यह कहानीसंग्रह दूसरा भाग पुत्रवधू राजेश्वरीदेवी ध० प० स्व० बाबू चक्रेश्वरकुमार जैन रईस आराकी ओरसे पाठक पाठिका वृन्दोंको सादर भेट की गयी है जो कि अनुकरणीय है।

सं० २०२१ ज्येष्ठ सुदी ५] -ब्र० चन्दाबाई, आरा।
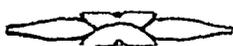
—: निवेदन :—

कहानी संग्रह भाग १ हम गत वर्ष प्रकट करके "जैन महिलादर्श" के ग्राहकोंको भेंट बांट चुके हैं। अब इसका दूसरा भाग भी श्री० ब्र० प० चन्दाबाईजी आराके प्रयाससे श्री पुत्रवधू राजेश्वरीदेवी, ध० प० स्व० बाबू चक्रेश्वरकुमारजी जैन रईस आराकी ओरसे 'दर्श'के ग्राहकोंको भेंट बांटा जा रहा है। इसकी कुछ प्रतियां विक्रयार्थ भी निकाली गई हैं आशा है इस दूसरे भागका भी शीघ्र प्रचार हो जायेगा।

वीर सं० २४९०
ज्येष्ठ सुदी १०
ता० २०-६-६४ } मूलचंद किसनदास कापड़िया,
—प्रकाशक।

श्री वीतरागाय नमः।

कहानी संग्रह

भाग २

(१)
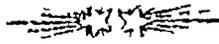
पतिव्रता ललना

एक दिनका सवेरा था कि नववधू विमलादेवी अपने श्वसुरगृहमें पदार्पण कर रही थी। उसके नयनोंसे अश्रुधाराएं बह रही थीं। कोई कहेगा पति घर जाते समय सभी रोया करती हैं, विमला भी वैसे ही रोती होगी, परन्तु नहीं। विमलाका

विवाह दस वर्षकी अवस्थामें ही हो गया था। अब वह १७ वर्षकी हो गई थी। उसने सुना कि उसके पति महेन्द्रकुमार वेश्यागामी हो गये हैं अतः यही उसके नयनाश्रु बहानेका कारण था।

विमला जैसी रूपवान, गुणवान, विद्यावान और सुशील वधूकी प्राप्तिसे उसके सास ससुर भूरि-भूरि प्रशंसा करते थे और शिक्षाप्रद उपदेश देकर उसका मन बहलाया करते थे।

एक दिन आँगनमें निर्मला, शिवादेवी (सास) राधाचरण (ससुर) की छोटी पुत्री अपनी सहेलीके साथ खेल रही थी। इतनेमें एक कर्मचक्र पर चढ़ा हुआ आदमी जो अति गरीब था नौकरीके लिए चक्कर लगा रहा था, उसका नाम मनमोहन था। वह कुलीन, सद्गुणी, प्रामाणिक, कृतज्ञ व पढ़ा लिखा था। लेकिन उसपर लक्ष्मीदेवीके प्रसन्न न होनेके कारण दूर-दूर जाकर नौकरीकी खोज करनी पड़ती थी। इतनेमें खेलती हुई राधाचरणकी पुत्री निर्मलाको देखकर उसके करीब जा पहुँचा। उसे अपना सारा हाल कह सुनाया। निर्मलाको उसपर दया आई और गाँव आदिका पूरा पता पूछ लिया। उसे एक चवन्नी देकर कहा—मैं अपने पिताजीसे पूछकर नौकरीपर रखवा लूंगी, अभी तुम जाओ।

खेलना छोड़ वह घरमें आई। उसके पिताजी आराम-कुर्सीपर लेटकर आरामसे वर्तमान पत्र पढ़ रहे थे। निर्मलाने बड़ी विनयके साथ गरीब मनमोहनके समाचार सुनायें व उसे

नौकरीपर रख लेनेके लिए प्रार्थना की। राधाचरण भी बड़े उदार दिलके आदमी थे। अपनी पुत्रीकी बात मानकर दूसरे दिन उसे बुलवाया। पुत्रीके कहे अनुसार वह भला मनुष्य जान पड़ा। अतः २०) के वेतन पर रख लिया। मनमोहनने भी प्रामाणिक रीतिसे काम करना शुरू किया।

महेंद्रकुमारका मित्र कालिचरण था (यथा नाम तथा गुणाः) एक दिन कालिचरण महेंद्रकुमारको एक वेश्याके घर ले गया। यह वही वेश्या थी जिसे महेंद्रकुमारके लग्न-मंडपमें नाचनेके लिए बुलाया गया था। वेश्याका नाम था कामलता। वेश्याने हावभाव देखकर नाच-गाना सुनाया। फिर कालिचरणके संकेतसे महेंद्रकुमारको अपने जालमें फंसाना शुरू किया। कारण वह सोनेकी चिड़िया था।

कामलता—(महेंद्रकुमारसे) सेठजी! आप तो कभी यहां आते ही नहीं। आज आपके मित्र कालिचरण आपको यहां ले आये अतः मैं भाग्यदेवीके समक्ष तीनोंके उपकारकी आराधना करूंगी।

महेंद्रकुमार—मुझे यहां आनेकी कोई आवश्यकता नहीं और न ही मुझे शौक है।

कामलता—आपको तो मेरी जरूरत नहीं पर मुझे तो आपकी जरूरत है (स्वगत–धमकी)

महेंद्र—क्यों?

कमलता—अजी सेठ साहब! आपके लग्नको आज तीन

वर्ष हो गए। जब मैंने आपको लग्न मंडपमें पाया तभी गुप्त रीतिसे आपके गलेमें वरमाला डाल दी थी। प्रथम प्रत्यक्षमें विमलाने वरमाला पहनाई। और मैंने गुप्त रीतिसे हृदयमाला आपको पहना दी। तभीसे मेरे नयन आपकी इंतजारी कर रहे हैं। विमलाको हृदयमें स्थान देनेके पहले आप मुझे अपनाइये। अभी वह नादान अबोध बालिका है। ऐसे-ऐसे मीठे वचन बोलकर हररोज महेंद्रको अपने जालमें खींचती। कुछ ही दिनोंमें महेंद्र कामलताके कुत्सित प्रेम और मोहजालमें मछलीकी तरह फंस गया। और धनके साथ-साथ मान-मर्यादाको भी बरबाद करने लगा।

घरमें जब विमलाने नववधू बनकर प्रवेश किया तो अपने नाथकी ऐसी दशा देख बहुत दुःखी हुई। अब महेंद्र विमलासे नहीं मिलता और न बातचीत ही करता। वह बड़े दुःखसे दिन बिताने लगी। महेंद्रको धनकी बड़ी आवश्यकता रहती थी। कुछ न कुछ बहाना बनाकर पितासे रुपया लाया करता था और वेश्याको दिया करता था। मगर जब उसके पिताको मालूम हो गया कि यह सारा धन वेश्याकी तिजोरीमें जा रहा है तो राधाचरणने महेन्द्रको रुपया देना ही बंद कर दिया।

फिर एक दिन राधाचरणके पास एक आदमी चेकके रुपये लेनेको आया। चेक देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ। चेक १० हजारका था तथा महेंद्रके उस पर दस्तखत थे। राधाचरणने

उससे कहा—मैं रुपया नहीं दे सकता, यहांसे चले जाओ। इस धनदौलत महलादिकको जला दूँगा अथवा दान कर दूँगा मगर महेंद्रके लिए कुछ न रखूंगा। वह आदमी चिट्ठीका चाकर था। कुछ न बोलकर चला गया। यह काम भी महेंद्र और वेश्याका ही था।

जब वह व्यक्ति खाली हाथ आया और वेश्याके कहनेसे महेंद्रके द्वारा रुपये न मिले तो उसने महेंद्रके पिताके यहां चोरी करके धन लानेको कहा। पहले तो महेंद्रने इनकार किया। महेंद्रके इनकार करने पर कामलता बिगड़ी और अनेक कुवचन सुनाए और महेंद्रको छोड़ने पर तैयार हो गई। तब महेंद्रने कहा—प्यारी मैं तेरे लिए चोरी भी कर सकता हूँ पर तुझे न छोड़ूंगा। शराब तो पीना वह शुरूमें ही सीख गया था अब चोरी ही करनी बाकी थी वह भी शुरू हो गई।

दूसरे दिन चोरका बाना पहन चुपकेसे महल पर चढ़ा। जिस कमरेमें वह आया विमला वहीं सो रही थी। आवाज होनेसे वह जाग उठी। पतिको देख उसे आनंद हुआ। परंतु चोरी करनेकी बात सुनकर अति रंज हुआ। आखिर वह विमलाके पिताके यहांका मिला हुआ हीरेका हार लेकर जाने लगा तो कुछ खट-पट सुनकर मातापिता जाग उठे। विमलाके कमरेमें आये। महेंद्रको हर तरहसे समझाया पर वह माता-पिताके कहेको टालकर भाग गया।

एक दिन राधाचरण चिन्तामें बैठे थे। सोच रहे थे कि

अब महेंद्र तो बिगड़ गया है, करना क्या चाहिये ? उसे सुधार कौन सकता है ? सुनकर बहू पास आई और बोली—पिताजी ! घबराइये नहीं आजसे उन्हे सुधारनेका बीड़ा मैं उठाती हूँ। मेरे साथ सहायताके लिए एक आदमी चाहिए और गाय भैसोंका प्रबन्ध आपको कर देना होगा।

उन्होंने विमलाको अपना विश्वासी नौकर सुपुर्द किया। मनमोहन अब नौकरके समान न था, उसने अपने सद्गुणों द्वारा सारे घरपर अपना विश्वास जमा लिया था। सब मनुष्योंकी अपेक्षा निर्मलाका हृदय मनमोहनकी तरफ अधिक आकर्षित होता जाता था। वह दिन रात ईश्वरसे प्रार्थना करती है प्रभु अगर मुझे पति देना हो तो इन्हें ही देना। यदि पुनर्जन्म भी हो तो मैं प्रभुसे याचना करूँगी कि इन्हींको पति देना। निर्मला जैसी भोली लडकी यह नहीं जानती थी कि—

वीतरागी सच्चिदानन्द परमात्मा कर्त्ता नहीं है हम जैसा कर्म करते है वैसा फल भोगते हैं। आचार्यवर कहते हैं—

बोधास्ति न किंचित्कार्य यद् दृश्यते मलात्तन्मे।
आकृष्टे यंत्रसूत्राद्वारूनरः स्फुरति नटकानाम् ॥

अर्थ—जो कुछ कार्य दिख रहे हैं, जो कुछ कार्य मैं कर रहा हूं वो सब कर्मके उदयसे कर रहा हूं ज्ञानसे कुछ कार्य नहीं करता। दृष्टांत नट पुतलियोंको डोरको जैसे खींचता है वो वैसे ही नृत्य करती हैं।

विमलाने अब एक युक्ति सोची, उसने थोड़ी गाय भैंसे खरीदी, दूध दही करके बेचने लगी। वह खूबसूरत ग्वालनके कपड़े पहन नखड़ेदार मटकी लेकर दहीमें दूध केशर, इलायची, शकर डालकर बेचने निकलती। वह और कहीं कभी कदा जाती लेकिन कामलताके दरवाजेपर आकर प्रतिदिन आवाज लगाती— "दही लो कोई दही लो, अनमूल कोई दूध लो।" कई दिन वह इसी तरह आती रही।

एकदिन उसके पति महेंद्रकुमारने नखरीली ग्वालनको देखा, असलमें वह खूबसूरत बाला थी, उसपरसे सुन्दर वस्त्र पहनकर निकलती थी कि पतिका मन आकर्षित हो। और हुआ भी ऐसा ही। ग्वालनको देख महेन्द्रकुमारने नौकर द्वारा उसे बुलवाया। ग्वालनके आने पर दही-दूधकी कीमत पूछी। उत्तरमें ग्वालनने कहा-यह दही-दूध अनमोल है इसको जैसे-तैसे मनुष्य नहीं खरीदते। इसको तो कोई विरला मनुष्य ही ले सकता है, और कीमत दे सकता है। मैं आपको दही नहीं देती। महेन्द्र उसकी बात सुनकर दिग्मूढ हो गया। उसकी सुन्दर मुखाकृतिको देख कर उसका जी लुभा गया। वह कुछ बोल न सका। ग्वालन भी विना दही दिए चली गई, लेकिन महेन्द्रके मनको भी चुरा-कर लेती गई। महेन्द्रने दिन-रात जैसे-तैसे काटी और दूसरे दिन फिर ग्वालनकी राह देखता रहा। दूसरे दिन वह और भी सुन्दर वस्त्राभूषण पहनकर आई। दही लो दही अनमोल कोई दही लो। ऐसा कहकर वह जाने लगी। आज महेन्द्रने उसे

नौकर द्वारा नहीं बुलाया बल्कि खुद बुलाया। वह आई। फिर उनकी बातचीत हुई। महेन्द्रका मन आकर्पित हो रहा है ऐसा देख वह बहुत खुश हुई। "अंधा क्या चाहता है, दो नेत्र"। आज ग्वालनने उन्हें स्वादिष्ट गरम दूध पिलाए और सामने ही पीनेको भी कहा। महेन्द्रने बड़े चावसे दूधको पी लिया। वस्तु स्वयं अच्छी और फिर उसमें हृदयके भाव (प्रेम) मिले हो तो वह और भी अच्छी बन जाती है। देखो, विचार करो। सुवर्ण चमकीला है। कीमतवान् है और सुन्दरता बढ़ानेवाला है। इनके अलावा अगर उसमें सुगंध भी होती तो उसकी कीमत और भी बढ़ जाती। ग्वालनने धीरे धीरे बड़ी कुशलतासे महेन्द्रको अपना बनाना शुरू किया। और कामलता पर अरुचि पैदा करा दी।

इसी अवसरमें कालीचरण (महेंद्रका मित्र) एक दिन महेंद्रके बगीचेमें गया. वहां महेन्द्रकी बहन निर्मला फूल तोड़ रही थी। कई दिनोंसे निर्मला पर उसकी कुदृष्टि जमी थी। अवसर पाकर और निर्मलाको अकेली जानकर कालीचरणने उससे कहा—तेरे भाईको तो (वेश्या) कामलताने बन्द कर रखा है इसलिए कि उसने रुपये नहीं दिए। उससे मिलना हो अथवा उसे छुड़ाना हो तो मेरे साथ चलो। वह विचारी बंधुवत्सला यह नहीं जानती थी कि कालीचरणके पेटमें कपटरूपी काली छुरी है। वह निर्मलाको मोटरमें बिठाकर ले गया। बगीचेमें माली काम कर रहा था, उसने

कालीचरणके साथ निर्मलाको जाते देख लिया। इतनेमें अनायास मनमोहन निर्मलाके शुभ कर्मोदयसे बगीचेमें आ पहुँचा। मालीने निर्मलाके जानेका समाचार दिया। मनमोहन कालीचरणके कपटरूपी जालको अच्छी तरह जानता था। किस तरफ मोटर गई है ऐसा पूछकर तुरत दूसरी मोटर पर सवार होकर पीछा किया।

कालीचरण शहरसे बाहरगावके एकांत बंगलेमें ले गया। बंगलेमें जाते ही निर्मलाने पूछा—मेरे भाई कहां है ? वह तो वेश्याके यहां मौज कर रहा है। प्यारी ! मै तो तेरे सुन्दर रूपको देखकर कबसे इस सुअवसरकी खोजमें था। पापीकी बात सुनकर निर्मलाको आश्चर्य हुआ। निर्मलाने हिम्मतसे कहा—नराधम ! क्या गांवमें वेश्याओंकी कमी है कि मुझे यहां ले आया है ? पापी तेरी मनोकामना कभी भी पूरी नहीं होगी। सती स्त्रियोंका सिरताज परमेश्वर उनके साथ ही रहता है। कालीचरणने उसे अनेक तरहसे मीठे वचनों द्वारा समझाया परन्तु उसके न माननेपर सताने लगा। इतनेमें वहां मनमोहन पहुंच गया। दरवाजेको तोड़ अन्दर घुस गया। कालीचरणके साथ बहुत देरतक मारपीट चली। कालीचरण पृथ्वीपर गिर पड़ा और ठंडी सांस लेने लगा। मनमोहन निर्मलाको लेकर चला आया। निर्मला अपने रक्षक या भावी पतिका मन ही मन उपकार मनाने लगी।

युक्ति प्रयुक्तिसे मनमोहन कामलताके यहां नौकर रहा।

इधर निर्मलाको उसके काममें सहायता देता। महेंद्रको वेश्यासे होते हुए नुकसानको गायनों द्वारा समझाता निर्मलाको संकटसे बचाना और हर काममें होशियारीसे पेश आना मनमोहनका ही काम था। राधाचरणका मनबहलाव भी वही करता। निर्मलाको छुड़ा लानेके बाद वह महेंद्रके पास पहुंचा। और उससे कहा—

कालीचरण तुम्हारा मित्र है या शैतान? कालीचरण तुम्हारा मित्र नहीं है, परन्तु मित्रका स्वांग धर अंदर ही अंदर वह तुम्हारा शत्रु है। उसीने तुम्हें वेश्यागामी बनाया, धनहानि करवाई, जगमें अपयश फैलाया और वही तुम्हारी बहन निर्मलाको भगा ले गया था और उसके शील हरण करनेके प्रयत्नमें था। तभी मैं वहां पहुँच गया और उसके चंगुलसे छुड़ाकर घर ले आया।

यह सुनकर महेन्द्रको उसपर गुस्सा आया और ऐसा लगा जैसे एक ही बार उसकी आँख खुल गई हो। उसने सोचा कामलता (वेश्या) धनसे प्यार करनेवाली है, मनुष्यसे नहीं। वेश्याने ही मदिरा पीना सिखाया, पिताके यहांसे चोरी करना सिखाया और धन-दौलतकी बरबादी करवाई, धिक्कार है ऐसी वेश्याको।

फिर महेन्द्र कामलताके पास गया। कालीचरण वहीं था, तीनोंमें बड़ी तकरार हुई। कालीचरणको वेश्याका साथ था, अतः दोनोंने कुवचनों द्वारा महेन्द्रका अपमान किया और धक्का

देकर मार गिराया। वेश्या बोली देखती हूं अब तुझे कौन रखता है। है न तेरे पास अब धन ? पिता भी तुझे नहीं रखेंगे, भीख मांगना और गली गली घूमना। मनमोहन नौकरके ही वेशमें यह सब नाटक देख रहा था। इतनेमें वही ग्वालन आई और उसने पतिकी हालत देखी। ग्वालनने वेश्याके वचन सुन लिए थे कि देखती हूं तुझे कौन रखता है ? उसने झटसे उत्तर दिया—इन्हें मै रखूंगी। इतनेमें मनमोहन अपना वेश बदलकर आया और वेश्याको सचेत करता हुआ कालीचरणके दुर्गुणोंका ब्यान कर गया। वेश्याको कालीचरणसे घृणा हुई। उसने कहा सभी चले जाओ अब मुझे सोचने दो कि मुझे क्या करना चाहिए ?

ग्वालन महेंद्रको अपने नए मकानमें ले गई। और स्नानादिक करवा भोजन दे विश्रामके लिए कहा। आनंदके साथ नित्य क्रियासे निवटी और स्वतः मनमें कृतकृत्य हो प्रभुका उपकार माना।

इस समय महेंद्र गाय-भैंससे लाड़-प्यार कर रहे थे। इसी समय पीछेसे आकर ग्वालनने महेंद्रकी आंखें मूंद लीं। उसने पूछा—बताओ तो मैं कौन हूं ? महेंद्रने कहा—तूं मेरे नयनोंकी ज्योति है। आंख बंद होने पर भी मै तुझे देख सकता हूं। और तू कहां है बता ? हां बताओ। मेरे हृदयके गहरेसे गहरे अंतःस्थलमें बिराजमान है।

ग्वालन आनंदके मारे फूली न समाई। आंखों परसे हाथ उठा लिए। फिर बोली—नाथ! मैं अभी विमलाको दूध देने गई थी। वह अपने प्यारे पतिका स्मरण कर फूट-फूट कर रो रही थी। विमला राधाचरणके पुत्रकी बहू है।

महेंद्र बोले—क्यों रोती है, पूछना था। ग्वालन बोली—मैंने पूछा था। कहती थी—मैं अपने भाग्यको रोती हूं। कई बार पूछने पर बताया—क्या बताऊं? सखी! पति तो वेश्याके यहां मौज उड़ा रहे हैं और मैं यहां वियोगके मारे तड़प रही हूं। ग्वालनके वचन सुनकर महेंद्र दंग रह गए। महेंद्र विमलाको अच्छी तरह पहचानते भी नहीं थे—क्योंकि विवाह होनेके तीन वर्ष बाद विमलाका गौना हुआ था। उस समयमें आनंदके पहले ही कामलताके मोहजालमें फंस चुका था।

अब क्या किया जाय? अपने मनको बार बार धिक्कारने लगे। वेश्याके जालमें फंसकर सतीरत्नको ठुकराया। चोरी करनेको जब पिताके यहां गया था उस दिन तरुणी रूपवत विमलाको देखा था, कुछ बातचीत भी हुई थी। महेंद्रको उस अवसरका स्मरण हो आया। विमलाका रूप और उसकी उदारता आंखोंके सामने आई, परन्तु करता क्या? इधर अपने दिलको ग्वालनके प्रेममें जकड़ा पाया। कुछ उपाय न सूझा। शोकाच्छादित हो गये।

ग्वालन महेंद्रको उदास देख बोली—कुमार! क्या सोच रहे हैं? तब निरुपाय हो मनकी सारी दुविधा कह सुनाई।

फिर महेंद्र बोले—प्यारी! तुझे छोड़ नहीं सकता, फिर भी अब मुझे विमलापर दया आती है। क्या तुम उससे मेरा मिलाप करा दोगी? मैं उसी सती-साध्वीका पति हूँ। ग्वालनने कहा जब आप चाहें तभी मैं उन्हें यहां बुला सकती हूँ। महेंद्रका जी विमलाको मिलने और अपने अपराधोंके लिए क्षमा मांगनेको व्याकुल हो उठा। महेंद्र बहुत नम्रताके साथ बोला—अभी उसे बुला दो। ग्वालन बोली—मैं उसे अभी १५ मिनटमें जादू द्वारा बुला देती हूं, तब तक आप आंख पर रूमाल बांध लीजिए। मैं बोलूं तब आंखें खोलिएगा। महेन्द्रने ऐसा ही किया।

ग्वालनने अपने वस्त्र बदल लिए और वही साफ़-सुथरे कपड़े पहन लिए। महेन्द्रके पास ही आनेवाली थी कि अधीर हो महेन्द्रने आंखोंका रूमाल खोल दिया। विमलाको देख महेन्द्र बहुत खुश हुआ उसके पैरों पर गिरने ही वाला था कि विमलाने रोक दिया। बोली—नाथ! अघटित कार्य न कीजिए। मैं आपके चरण कमलोंकी पूजा कर सकती हूँ न कि आप मेरी। फिर आनंदसे बातचीत हुई। एकाएक महेन्द्रको ग्वालनकी याद आई। वे विमलासे कहने लगे—जो ग्वालन तुझे बुलाने गई थी वह कहाँ है? उसने कहा—मेरे ही साथ वह आई थी देखो, ढूंढ़ो इसी घरमें कहीं छिपी होगी। महेन्द्र घरमें इधर-उधर ग्वालनको ढूंढ़ने लगे। कहीं पता न लगा। विमलाको हंसते देख बोले-तूने ही उसे छुपाया है। बता तुझे

उसका उपकार मानना है। उसीने तेरे साथ मिलाप कराया है। विमला बोली—आंखें बन्द करो हाथ सामने करो। मैं अभी उसका हाथ आपके हाथमें देती हूं। महेंद्रने ऐसा ही किया। विमलाने ग्वालनकी चुन्नी ओढ़ ली और महेंद्रके हाथपर हाथ रख हंसने लगी। आंख मिलनेपर और जोरकी हंसी आई। फिर विमलाने अपने सर्व कपटाचारका वर्णन किया। दोनोंने आनंद मनाया, विमला अपने श्वसुरके घर पतिके साथ गई। इनके साथ विमलाका सहायक मनमोहन भी था। राधाचरणने पुत्रको विमलाके साथ आते देखा तो बहुत खुश हुआ। दोनोंने राधाचरणके पैरोंपर मस्तक झुका दिया। राधाचरण बोले—पुत्री विमला! तेरे साहसकी प्रशंसा कहांतक करूं? कोई न कर सके ऐसा काम तूने कर दिखाया है। धन्य है तू! यह घर बार, धन संपत्ति तुम्हारी है। इसे लो और आनंद मनाओ।

इधर कालीचरणको भी वेश्याने निकाल दिया था कालीचरणको यह अपमान सहन न हुआ। महेन्द्र पर तो गुस्सा था ही। वैर लेनेके लिए कालीरातमें काले कपड़े पहन कालीचरण काले काम करनेको चला। वेश्याके यहां पहुंचा। कामलताके पलंग पर कामलताकी मुंहबोली बहन सो रही थी। बिना देखे बिना सोचे एकाएक उसने गर्दन पर तलवार चला दी यह सोचकर कि कामलता ही इस पर सोई है। सिर धड़से अलग हो गया। चेहरा देखकर उसे पश्चाताप हुआ, पर कर ही क्या सकता था? वह उसका कटा सर लेकर भाग खड़ा हुआ। कामलताने दूसरे

कमरेसे उसे देख लिया था। उसने भी सोचा कि कालीचरणने मुझे सोई हुई समझकर ही खून किया है। धिक्कार है ऐसे संसारको और मेरे नीच कार्यको। उसे वैराग्य हो आया। मनमोहनके उपदेश पर बार बार विचार करने लगी। वह दूसरे दिन धन वैभव छोडकर गांवसे बाहर गुप्त स्थानमें एक छोटी कुटिया बनाकर रहने लगी और प्रभुभक्तिमें दिन व्यतीत करने लगी।

कालीचरणने उस सिरको किसी गुप्त स्थानमें फेंक दिया। कुछ दिन बाद कामलताको नगरमें न देखकर लोगोंने यह चर्चा फैलाई कि महेन्द्रने कामलताका खून किया है। एक दिन दोनोंमें तकरार हुई, वेश्याने उसका तिरस्कार किया। महेन्द्र तिरस्कार न सह सका अतः उसने उसका खून कर डाला।

कुछ ही दिनोंमें यह मामला कोर्टतक पहुँच गया। वादी प्रतिवादीके वकील मुकर्रर हुए। न्यायाधीश न्यायासनपर विराजमान हुए। महेन्द्रसे पूछा गया कि क्या तुम्हीं ने खून किया है? उत्तरमें जवाब मिला—मैं निर्दोष हूँ। और भी कई प्रश्न हुए और उत्तर मिले। फिर कालीचरणको खड़ा किया गया। उससे भी प्रश्न पूछे गए। कालीचरणने खून किया था अतः उसका जी घबड़ा उठा, तो भी संभलकर उत्तर देता गया। कालीचरणके झूठे आरोपोंसे सचमुच महेन्द्रको फांसीकी सजा

मिली। लेकिन तुरत विमला कोर्टमें आ धमकी और बोली—खून मैंने किया है महेन्द्रने नहीं।

पूछा गया कि यह खून क्यों किया गया ? उत्तर मिला कि वेश्याने मेरे पतिको बिगाड़ा है धनमालकी हानि की अतः मैंने खून कर दिया है। न्यायधीशने पूछा कि अबतक तू क्यों नहीं बोली ? विमलाने उत्तर दिया—मुझे मरनेका खौफ था। लेकिन पतिपर तोहमत आ गई है अतः पतिव्रता स्त्री इसे कैसे सहन कर सकती है ? तभी मैं अपना दोष प्रकट करनेको कचहरीमें आई हूँ। महेंद्रने कहा—विमला तू बिना मौत मेरे लिए क्यों मरती है ? विमला बोली—नाथ ! आपके लिए अपने सर्वस्वका बलिदान देना यह हम नारियोंका कर्तव्य ही है।

आप कुछ चिंता न करें। कोर्टके सारे लोग अचम्भेमें पड़ गए। कारण एक तरफ महेंद्र खूनी ठहराया गया, दूसरी ओर एक अबला अपने पतिके लिए जानकी आहुति देनेको तैयार है। न्यायाधीशने इसका फैसला दूसरे दिनके लिए छोड़ कचहरी बरखास्त कर दी।

इतने समय तक एक प्रमाणिक नौकर मनमोहन गुपचुप नहीं बैठ सका। कामलताकी पुरानी नौकरानीसे मित्रता जोडी। और पूछा कि सच बता तू कामलताके घर पर थी ? कामलताका खून किसीने किया था ? दासीने उत्तर दिया—खून कामलताका नहीं हुआ वरन् उसकी बहनका खून कालीचरण द्वारा किया गया है। तब मनमोहन बोला—सच बता तो तुझे

इनाम दूंगा। बता अब कामलता रहती कहां है।

दासीने कहा—आप मेरे साथ आइये मैं उनका गुप्तस्थान बता देती हूं। वहां पहुंचे तो देखा, सफेद वस्त्रोंमें लिपटो कामलता माला फेरकर प्रभुका ध्यान किये हुई है। मनुष्यकी आहट सुन कामलताने आंखें खोली। सामने मनमोहनको पाकर बोली—बोलो भाई! मेरा क्या काम पड़ा है? मनमोहनने उत्तर दिया—कामलता! तुम जीती-जागती हो और तुम्हारे ही लिए महेन्द्र और विमलाकी जान जा रही है। इतने दिनोंका बीता हाल कह सुनाया। कामलताने कहा—अब मुझे क्या हुक्म फरमाते हो?

मनमोहनने कहा—कल मेरे साथ कोर्टमें आना। वहां वकील जो-जो पूछे उसका सच्चा उत्तर देना। इसीमें तुम्हारी भलाई है और दुष्कर्मोंका प्रायश्चित है। कामलता हर कामके लिए तैयार हो गई।

तीसरे दिन फिर कचहरी भरी। कामलताका खून किसने किया है इसके लिए परामर्श होने लगा। इतनेमें मनमोहनने नम्रतासे आकर कहा—महाशय! आप लोगोंके समक्ष एक कठपुतली हाजिर करता हूं। वह सारा हाल सुनाएगी कि कामलताका खून किसने किया है।

कामलता हाजिर हुई। कामलताको देख कालीचरण सहित सब लोग अचंभेमें पड़ गए। कामलतासे कई प्रश्न पूछे

गए । उसने सबका सत्य उत्तर दिया । कोर्टके न्यायाधीश व वकीलोंको मान्य हुए । महेंद्र और पतिव्रता ललना–विमला निर्दोषी समझे गए । वे आनंद मनाते हुए घर आए । माता–पिताको प्रणाम किया और मंगल मनाया । सभी अपने अपने स्थान पर जाने लगे तो निर्मलाने मनमोहनको जानेसे रोका ।

निर्मला इन सब कामोंमें मनमोहनकी बहादुरी देख फूली न समाती थी । मनमोहनने भी उसकी मूर्ति चवन्नी पर खुदाकर गलेमें लटका रखी थी । जो कि प्रथम दिन निर्मलाने गरीव मनमोहन पर दया कर दी थी । विमलाने निर्मलाकी इच्छा जानकर बड़े समारोहके साथ मनमोहनके साथ पाणिग्रहण करा दिया ।

निर्मला—नाथ ! मैं धन्यवादके लायक नहीं हूं लेकिन आप ही हैं, कारण कि सच्चे प्रेम रसकी पहचान आपने ही करवाई । प्रेम क्षुधा उत्पन्न कर उसकी तृप्ति आपने ही कराई है । निर्मलाके मुख रूपी चन्द्रसे ये वचनामृत निकले थे । ये जैसे तैसे भाव न थे । ये थे हृदयके गहरेसे गहरे भाव । इस मर्मको समझकर मनमोहन फूले अंग न समाये । मुंहसे कुछ बोल न सके, पर इसका उत्तर दो नेत्रोंने हर्षाश्रु बरसाकर दिया । निर्मलाके हाथोंको अपने हाथोंमें ले दोनोंने प्रेमसमाधि लगाई ।

— श्री प्रभावतीदेवी ।
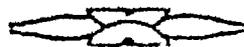
(२)

एक कंजूसका गधा

संसारमें मनुष्य कई प्रकारके होते हैं जैसे कोई धनी जोकि
ठ कहलाते हैं कोई दरिद्र जो रात दिन अन्न-अन्न करते मरते
। पेटके खातिर गलीमें फेंकी हुई जूठी पत्तलें चाटकर दिन
यतीत करते है। परन्तु धनी भी दो प्रकारके होते हैं। एक
। वे जो अपने धनको अनेकों व्यापारोंमें तथा दान-धर्म
रोपकारादिमें लगाकर अपने जीवनको सफल बनाते हैं। दूसरे
जो व्यापारादिसे कमाया हुआ धन और पैतृक द्रव्य आव-
यकता पड़नेपर भी खर्च नहीं करते। न अपने सुखके लिए
ौर न कुटुम्बियोंके लिए। केवल पृथ्वीमें गाड़कर रख देते हैं
ौर देवता समझ नित्यदिन उसकी पूजा करते है। वे समझते
कि धनके पूजनसे ही परमार्थ बन जायगा।

इतिहासमें भी देखा जाता है। सिकन्दर जैसा धनी, पर
न्तमें क्या हुआ? कुछ भी साथमें नहीं ले गया। न कोई
ुछ लेकर आया है न लेकर जायगा। केवल भावके ऊपर
लकी प्राप्ति होती है। मरते समय उसे धनको देख केवल
ोना पड़ा। मनुष्य मुट्ठी बांधे आता है और हाथ पसारे चला
ाता है।

क्या ऐसा धनी होना अच्छा है? यह सब धनकी माया
। धन आदमीको अंधा बना देता है। निम्नलिखित कहानीसे

आपको दोनों तरहके मनुष्योंमें साफ-साफ अंतर मालूम हो जायगा।

एक समय (अफ्रीकाके) केरो शहरमें राजीव नामका एक मनुष्य रहता था। उसके माता-पिता उसके पास २००० पासर्चस छोड़कर संसारसे सिधार गये थे। लोग उसे जितना अमीर समझते थे वह उतना अमीर न था। बड़ा होनेपर उसका चित्त अपना घर बसानेका हुआ। उसने एक युवती कन्याको कुंआपर देखकर उसके साथ ही विवाह करनेका निश्चय करके उसके माता-पिताके पास कहलाया कि आप अपनी लड़कीका विवाह मेरे साथ कर दीजिए। उसके माता-पिताने कहा मैं उसी व्यक्तिके साथ अपनी लड़कीकी शादी करूंगा जिसके पास कमसे कम ५००० पासचर्स होंगे। ऐसी बात सुनकर उसका गला सूख गया। फिर गिड़गिड़ाकर कुछ दिनकी मुहलत मांगी। प्रार्थना भी स्वीकार हो गई। वह सोचने लगा, आठ-आठ आंसू रोया और पागलोंकी तरह बड़बड़ाने लगा कि कितना अच्छा होता अगर मैंने जब तक इस धनको किसी कारोबारमें खर्च किया होता। मैं क्या से क्या बन जाता। मेरी ऐसी हालत कदापि नहीं होती।

अब वह मूर्खोंकी तरह अपने पासचर्सको बार बार गिनने लगा कि शायद कुछ धन बढ़ गया हो अथवा बार-बार गिननेसे बढ़ जाय। रात दिन उसे उसीका भूत सवार रहता। रातकी निद्रा और दिनका चैन भी हराम हो गया। रातमें

सोचता छत फट कर रुपये गिर जाते तो कितना अच्छा होता। सोच-विचारसे वह सूखकर कांटा हो गया। उसे एकाएक ख्याल आया कि मेरा चाचा धनी योसफ जो कि पास ही खरतूममें सेठ है अगर उसके पास जाऊं और ३००० पासचर्सकी भीख मांगू तो वह इन्कार नहीं करेगा। पैदल ही वह खरतूमके लिए चल पड़ा।

शहरमें पहुंच कर उसने धनी योसफके घरका पता लोगोंसे पूछा। सबलोग हंसे और बोले धनी योसफ न कहो कंजूस योसफ कहो। सिर्फ कंजूस ही नहीं बल्कि ऐसा कंजूस जो एक सड़ी-बुसी चीजको बार-बार निकालता और फिर रख लेता है। यह सुनकर उसका जी धकसा रह गया। सोचा कहीं मेरे विचारों पर सचमुच ही पानी न फिर जाय। वह घरका पता पूछकर एक बालकके साथ योसफकी कुटी पर पहुँचा। वहाँ जाकर उसने आवाज दी चाचाजी दरवाजा खोलो। चाचाजी बोले—कौन हो नाम बताओ।

राजीव—मेरा नाम राजीव है, मैं केगेसे आया हूं।

योसफ—अच्छा ठहरो आते हैं।

राजीव दरवाजे पर खड़ा था। एक कमजोर बूढ़ेने दरवाजा खोला और बोला—क्यों साहब आप मुझसे क्या चाहते हैं? इतना सुनना था कि राजीव खुशीसे फूला न समाया और सोचने लगा कि अब तो मेरी जरूरत पूरी हो जायगी। अब उसने यह उचित समझा कि मैं इनसे दूसरी बातें करूं।

राजीवने योसफसे कहा—चाचाजी मैं इतनी दूरसे आपको देखने आया हूँ। क्या हाल-चाल है।

योसफ—समाचार तो अच्छा है पर गरीब हूँ गरीब।

इसके बाद योसफ राजीवको अंदर ले गया। एक कोनेसे फटी चटाई निकाली और बिछाकर बोला—बैठो राजीव। राजीव बैठ गया।

शहरसे राजीवके लिए योसफ १ पैसेका मट्ठा लेने गया।

योसफको दुकान पर सौदा लेते देखकर लोग हंसे, और सोचने लगे कि कहीं योसफ पागल तो नहीं हो गया है जो आज दुकानसे सौदा मोल ले रहा है। घर आकर योसफने राजीवके सामने एक फटी पत्तलमें सूखी रोटीके टुकड़े और मट्ठा रख दिया।

ऐसा खाना देखकर राजीवको घृणा हुई। परंतु करता क्या, पेटमें चूहे कूद रहे थे। लाचार होकर भोजन किया। तत्पश्चात् मतलबकी बात छेड़ी। बात सुनते ही योसफ ताड़ गया कि हो न हो यह मुझसे कुछ रुपये ही लेने आया है। बात काटकर योसफने कहा मैं गरीब हूँ गरीब। मैंने सचमुच आखरी अद्धीको तुम्हारे भोजनमें खर्च किया है। तुम अपना भाग्य समझो जो कि मेरे पास कुछ था जो तुम्हारी इतनी भी खातिर कर सका।

यह सुनकर राजीवको बड़ा दुःख हुआ। उसने साहसकर फिर एक बार बात छेड़ी पर उस कंजूसने कुछ ध्यान न दिया।

हारकर राजीवने योसफसे बाहर घूमनेकी इजाजत मांगी। योसफने कहा—मेरे पास एक गदहा है जिसे मैं बेचना चाहता हूं जिसे अंत तक चलाना है।

राजीव—तो फिर मैं क्या करूं चाचाजी ?

योसफ—तुम मेरे साथ चलो और शहरमें बिकवा दो। राजीव और योसफ दोनों गधेके अस्तबलमें गए। राजीवने एक दुबले-पतले कमजोर गधेको देखा। वह ताड़ गया कि गधेकी यह हालत अन्नके विना हुई है। वह तुरत शहर गया और चना चीनी और घास गदहेको लाकर दिया। गदहा खाकर खुश हुआ और टिकटिकी लगाकर राजीवकी ओर देखने लगा। मानों कह रहा हो दयालु राजीव तुम ही मुझे ले लो।

दोनों गधेको ले बाजारकी ओर गए। गधा बार-बार राजीवका मुख देखता। राजीवका दिल पसीज गया। उसने उस गधेको लेनेका विचार किया। शहरमें पहुंचकर गधेका मोल किया। किसीने १०० किसीने १५० और किसीने २०० पासचर्स उसका दाम लगाया।

राजीवने यह समझा कि मेरा बूढा चाचा २०० पासचर्स पर गदहेको बेचनेवाला है पांच और बढ़ानेसे गधेका मालिक मैं जरूर हो जाऊंगा। ऐसा सोच उसने पांच पासचर्स और बढ़ा दिए। परन्तु चाचाजी कंजूस थे, उन्होंने कहा क्यों जी तुम इसे क्या करोगे ?

राजीव—चाचाजी मैं इसे पालूंगा।

योसफने कहा—अच्छा, जबतक तुम ५०० पासचर्स मुझे न दोगे तुम अपनी इच्छा पूरी नहीं कर सकते ।

यह सुनकर राजीवके कान खड़े हो गए और गधेसे घृणा होने लगी । लेकिन गधेका बार बार देखना शायद उसे लेनेके लिए विवश कर रहा था । राजीवकी इच्छा उसे लेनेकी थी अतः बोला चाचाजी यह तो बहुत अधिक कीमत है ।

योसफ—बस तुम्हारे लिए यही दाम होगा ।

राजीव—चाचाजी कुछ तो कम कर दीजिए ।

योसफ—तुम्हारे लिए मुनासिब दाम ही मैंने कहा है ।

राजीव सोचमें पड़ गया कि चाचाजी अब कानी कौडी भी कम न करेंगे । गधेकी डोर पकड़ चल पड़ा । चाचाजी बोले–अजी गधा तो ले लिया दाम तो देते जाओ ।

राजीव—चाचाजी बेसबर न होइये । घर बन्द कर आया हूं चलिए मैं नगद दाम देता हूं । चाचाजी भी राजीवके साथ केरोके लिए रवाना हो गए ।

योसफ भर रास्ते यही कहता गया कि बस मेरे पास यही अंतिम धन है इसीसे सारी उमर काटनी है ।

केरो पहुंच कर राजीवने चाचाकी अच्छी खातिर की । स्वादिष्ट भोजन दिया और मुलायम बिस्तर, तीन दिन तक रहनेके पश्चात् योसफ लौट आया । रास्तेमें डाकुओं द्वारा योसफ लूटा गया और जानसे खत्म कर दिया गया । खबर मिलने

पर राजीवको बहुत दुःख हुआ। वह गधे पर सवार होकर चाचाके घर रवाना हुआ। रास्तेमें ही उसे चाचाकी लाश मिली। बड़ी धूमधामसे चाचाकी कर्म–क्रिया की गई। तत्पश्चात् चाचाकी कुटीमें धनकी उम्मीदसे गया।

उसने गधेको टीनके नीचे बांध दिया, खुद अंदर गया। घरमें तमाम ढूंढा मगर उस टूटी चटाईके सिवा कुछ न मिला। वह निराश हो गया। लेकिन गधा खूब जोरसे चिहड रहा था और पैरोंसे जमीन कुरद रहा था। राजीवने सोचा शायद भूखसे इस तरह कर रहा है। खानेको दिया, पर उसने नहीं खाया। डाक्टरको दिखाया पर कोई बीमारी भी न थी। अंतमें राजीवने उसका इशारा समझ लिया और जमीनको खोदना शुरू किया। गधा भी चुप हो गया। जमीन खोदने पर एक लोहेका घड़ा रुपये और अशर्फियोंसे भरा मिला। राजीवको आशा बंधी जमीन और खोदी तो एक बड़े बरतनमें अनगिनित रत्नोंसे भरा खजाना मिला। गधेने फिर चिहड़ना शुरू किया। राजीव उसका इशारा न समझ सका। काफी देर बाद समझा वह चिहड़ रहा था इसलिए कि अब धन और नहीं है।

अब सारा धन गधे पर लादकर घरकी ओर चल पड़ा। रास्तेभर दान करता हुआ घर पहुँचा और अति प्रसन्न हुआ। उसने कुछ रत्नोंको थालीमें सजाकर उस लडकीके माता-पिताके पास भेज दिया। उन रत्नोंको देख वे प्रसन्न हुए और पुत्रीका

विवाह राजीवसे कर दिया। दोनों आनंदसे रहने लगे। गधा भी आनंदसे दिन बिताने लगा।

दुनियांमें दया सबसे बड़ी चीज है। दयालुकी दया अपार है। वह जो चाहता है कर सकता है। दयालुके बसमें संसार है, दयालुकी सदा जय होती है।

कंजूसकी दुनियांमें ऐसी दुर्दशा होती है कि न वह खुद सुख पाता है और न दूसरोंको सुख देता है। धन स्वस्थ्य शरीरको पाकर परोपकारमें लगाना ही दयालुता है।

नोट—पासचर्स यहांके दस पैसोके बराबर होता है।

—श्री सितारा-सुन्दरी जैन, आरा।

(३)

कुमुद

भाग्यचक्र तू सबसे बली है। अपने चलित चक्केके नीचे राजा, रंक, बली, निर्बल, मूर्ख, पंडित सभीको पीसता है। तेरे कठिन दांतोंसे तपस्वियोंको भी रिहाई नहीं हुई है। स्याहसे सफेद और सफेदसे स्याह यही तेरा काम है। दीन–दुखियोंकी पर्णकुटीसे लेकर पृथ्वीपतिकी उच्चोच्च अट्टालिका पर्यंत सर्वत्र तेरा अखंड राज्य है। कर्म, दैव, विधि इत्यादि नामधारी भाग्य एकवार स्त्री अपने पतिको, शिष्य गुरूको, सेवक स्वामीको, मन्त्री राजाको प्रसन्न करनेका प्रयत्न न करे पर तुझे प्रसन्न करनेके लिए सभी अनवरत परिश्रम करते रहते हैं, फिर भी तू इने–गिनेके सिवाय सभीसे अप्रसन्न रहता है। ठीक है, भारत-वासियोंसे तेरा मनोमालिन्य तो दिन–प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। इसीसे तो बेचारे दिनभर परिश्रम करते हैं तौ भी शामको सूखी रोटीके लिए तरसते हैं। निर्दयी भाग्य तुझे इतना अभिमान है कि जरा किसीसे बिगड़ा कि पुनः उसे पनाह मिलना कठिन हो जाता है। क्षणभरमें मुलायम गद्दो पर सोनेवाले और कीमती शाल ओढ़नेवालोंको एक कम्बलके फटे टुकड़ेका भी ठिकाना नहीं रहता। षटरस भोजन करनेवालोंको सूखी रोटी भी नसीब नहीं होती।

जिसके आसरे उसकी दयादृष्टिके लिए सैकड़ों मनुष्य खड़े रहते थे उसे आज कोई देखना भी नहीं चाहता।

कहाँ तक कहा जाय, तेरी लीला अपरम्पार है। संसारमें यदि कोई बड़ी वस्तु है तो तू ही है। मेरे देखनेमें तो तुझसे बड़ा कोई नहीं है। भाग्य तेरे ही रूठनेसे एक समृद्धिशाली परिवार आँखों देखते देखते अधःपतनकी सीमापर पहुँच जाता है। हालकी ही बात होनेसे उदाहरण स्वरूप लिखी जाती है।

भाग्यचंद्र एक बहुत बड़े व्यापारी एवं जमींदार थे, सहस्रोंका आवागमन रोज होता था। जमींदारी भी चालीस-पचास हजार बचत की थी। इनकी स्त्री दयावतीसे एकमात्र कन्या थी, जिसका नाम कुमुद रखा गया था। इतने बड़े वैभवशाली पिताकी इकलौती पुत्रीके लाड़-प्यारका क्या ठिकाना था? परंतु भाग्यचंद्र पढ़े लिखे समझदार मनुष्य थे। धर्मनिष्ठा भी अच्छी थी। उन्होंने कन्याको पढ़ाने लिखाने एवं दस्तकारीका अच्छा प्रबंध कर दिया। कभी२ स्त्रीसे कुमुदको पाककला भी सिखानेकी ताकीद रखते थे। उन्हें बी. ए., एम. ए. की डिग्री दिलवानी लड़कीके लिये व्यर्थ प्रतीत होती थी।

प्रत्युत् वह उसका संस्कृत विद्यामें निपुण होना पसंद करते थे। एम० ए० तक कुमुदकी शिक्षा घर पर ही दिलवाई गई। पास पड़ोसकी लड़कियोंको स्कूल जाते देख कुमुदकी मांको भी अपनी कुमुदको ठाटसे पहना-ओढ़ा कर स्कूल भेजनेकी इच्छा होती। बालोंमें क्लिप लगा, कपड़ोंसे सजकर और पौडर

लगाकर भेजनेको उत्सुक होती। एक दिन भाग्यचन्द्रसे कहने पर उन्होंने उत्तर दिया–तुम्हारी यह भूल है। केवल फैशन करने और गाडीमें बैठकर जानेसे ही शिक्षा नहीं मिल सकती, जानती हो आजकल स्कूल एवं कालेजमें पढ़नेवाली लड़कियोंका कैसा अधःपतन हो रहा है। वे स्वच्छन्द रहना चाहती हैं। थोडी आयमें उनके व्यर्थ व्ययकी पूर्ति नहीं हो सकती। सास–ससुर किस खेतकी मूली हैं, पति भक्ति क्या वस्तु है, इससे उन्हें कुछ प्रयोजन नहीं रह जाता। मर्दोंसे बात करना तो मानों उनकी आदत सी हो जाती है। वे इसीमें अपना गौरव समझती हैं। सिनेमा, थिएटर, क्लबमें मनोविनोद, घरमें बैठकर उपन्यास पढ़ना मानों उनकी दिनचर्या हो जाती है। बच्चे तो भार स्वरूप होकर किसीके पास पड़े रहते हैं।

दयावती—यह तो आपने कहा परन्तु भारतके हर व्यक्तिके पास इतने रुपये कहाँ हैं जो इनके पीछे इतना व्यय ससुरालवाले कर सकेंगे क्योंकि भारत एक गरीब देश भी तो कहा जाता है।

भाग्यचंद्र—प्रिये! तुम्हारा यह कहना ठीक है। वे कुटुम्बी व्यय नहीं कर सकते और हमारे देशके अधिकांश घरोंका वातावरण भी ऐसा ही है कि टेबुल पर बैठकर पतिके साथ खाना, शामको सैर-सपाटेके लिए निकलना पैसा रहते हुए भी नहीं हो सकता।

इससे यही होता है कि आधुनिक शिक्षा प्रणालीसे जो

उनके हृदयमें कूट-कूटकर विलासिताके ऐसे भाव भर देती है इसके फलस्वरूप उनका हृदय सूखी लकड़ीकी भांति सुलगता रहता है। बिचारे पतिदेव भी इनकी लपटसे नहीं बचते और उन्हें भी ताने सुनने पड़ते हैं। वे कहती हैं—मेरी तो तुम्हारे साथ जिन्दगी बरबाद हो गई। बिचारी बूढ़ी सास अलग माथा ठोकती है। जब वह रसोईके पास जूते पहने जाने लगती है तो "हें हें सारी रसोई गई" कहकर दौड़ती हैं। पानके डब्बे इत्यादिमें बहूका हाथ लगाना बुरा समझती हैं। क्योंकि आधुनिक लड़कियाँ उंगलीके नाखून बढ़ाना फैशन समझती हैं और सदैव उन्हें दांतो तले दबाती रहती हैं। इससे सासका ध्यान रहता है कि बहूके हाथ जूठे हैं। गृह-सुख स्वप्न हो जाता है।

दयावती हंसकर कहने लगी—मालूम पडता है आप औरतोंसे भी बढ़कर घरकी बातोंमें ख्याल रखते हैं। सचमुच सूक्ष्म दृष्टिसे देखनेपर आपको आधुनिक शिक्षाका दुष्परिणाम ज्ञात हो गया है। मैं तो केवल उनके फैशन देखकर, मेरी कुमुद भी ऐसी सुन्दर लगेगी और अंग्रेजी पढ़नेमें बी. ए. हो जाय तो इसका अधिक आदर हो जायगा आदि सोचकर आपसे कहने आई हूं। अब मेरा भ्रम दूर हो गया, एक बात मैं आपसे और पूछने आई हूं। क्या प्रत्येक लड़की ऐसी ही होती है?

भाग्यचन्द्र—नब्बे प्रतिशत हुई और दस न हुई तो इससे क्या? वह नहींके समान है।

दयावती—आपके विचार बहुत उच्च हैं, मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई ।

भाग्यचन्द्र—अब थोड़ा और सुन लो, जिससे फिर कभी भ्रममें न पड़ो । तुम्हारी कुमुदको मैं कैसी बनाना चाहता हूँ यह भी जान लो । अन्यथा कहीं मुझपर रुष्ट न हो जाना कि मेरी लड़कीसे रसोई बनानेको कहते हैं, अलबर्ट फैशन बाल बनाती है तो खुश नहीं होते, सीने पिरोने पर भी ध्यान रखते हैं इत्यादि ।

दयावती—आप तो मेरी हंसी उड़ाते हैं । लीजिए मैं अब यहां नहीं बैठती, जाती हूं ।

भाग्यचन्द्र—अच्छा सुनो-सुनो अब न कहूंगा । मेरा उसके प्रति क्या अभिप्राय है । तुम्हें पूर्णरूपसे सुनाना चाहता हूं । प्रसंग वश आज यह बात छिड़ गई है तो साफ हो जाना चाहिए ।

मेरे विचारसे कन्याओंको संस्कृतके साथ-साथ धार्मिक शिक्षा भी देना आवश्यक है । देखो इस बार कुमुद मध्यमा और सोलापुरकी परीक्षामें तत्वार्थसूत्रमें उत्तीर्ण हुई है । कल प्रमाण पत्र आया है । कुछ जरूरी काममें फंस जानेके कारण तुमसे कहना भी भूल गया । अभी इसे आचार्य परीक्षा और धर्मकी उच्चोच्च परीक्षा दिलवाऊंगा । तुम्हारे जिम्मे कार्य सौंपता हूं कि पाकविद्या, विनय, लज्जा इत्यादिकी शिक्षा यथासमय दिया करो, बाकी मैं स्वयं ही पुस्तकोंके आधारसे सब बातोंमें

दक्ष कर दूँगा। मैं उसे पौराणिक सती द्रौपदी, अंजना, चेलना, मैनासुन्दरी, दमयन्ती इत्यादि। जिसके पढ़नेसे सतीत्वके महत्वका ज्ञान होगा और तुम्हारी पुत्री राम, लक्ष्मण, हनुमान, भीम इत्यादि जैसे प्रतापी वीर पुत्रोंकी जननी होगी। पतिकी प्यारी, सास-ससुरकी दुलारी, गृहकी आदर्श नारी पुत्रीके जब सुखद समाचार सुनोगी तो असीम आनन्दका अनुभव हृदयङ्गम होगा।

दयावती—स्वामी! आपकी बातोंसे ही जब मुझे इतना आनन्द हो रहा है तो उस समयकी प्रसन्नताका क्या ठिकाना होगा? देखें, भाग्य वो दिन कब दिखाता है।

दयावतीकी एक शंकाका तो समाधान हुआ पर दूसरी उसके मनकी दबी शंका प्रसंगवश हृदयमें फेरे लगाने लगी। उसने सोचा अच्छा होगा यदि आज इसका भी समाधान हो जाय।

वह धीमे स्वरमें बोली—अब कुमुद चौदह सालकी हो गई है कोई योग्य घर-बार देखना चाहिए। बिना पहलेसे देखे कोई उचित संबंध नहीं मिलता आप तो कभी इसकी शादीकी बात ही नहीं करते।

भाग्यचंद्र—क्या मैंने तुमसे इसके बारेमें चर्चा नहीं की तो समझती हो मुझे ध्यान ही नहीं है? ऐसा कदापि नहीं हो सकता। मैं इसके योग्य घर-वरका सदैव ध्यान रखता हूँ। कोई जंच जायगा तो तुमसे कहूंगा, तब-तक शास्त्री परीक्षा भी पास कर लेगी।

दयावती—केशवदासकी स्त्री कल मुझसे मिलने आई थी। कुमुदको देख हंसी-हंसीमें मुझसे कहा था कि कुमुद और निहालका जोड़ा तो अच्छा है। इसकी शादी कब करेगी। मैंने कहा—हां अब तो मुझे भी फिकर लग रही है। उनका लड़का तो अच्छा है। इतनी छोटी अवस्थामें बैरिस्ट्री पास करके आया है। पिताके पास भी गहने कपड़े, खाने पहननेको बहुत है, यदि आपकी इच्छा हो तो बात-चीत करूं।

भाग्यचन्द्र—मुझे यह संबंध ठीक नहीं जंचता क्योंकि, निहालचन्द्र पहले तो अच्छा लड़का ही कहा जाता था और अब भी बैरिस्टर होकर आया है तो संसारकी दृष्टिमें उत्तम ही है, परंतु वास्तवमें लड़की उससे सुख नहीं पा सकती। क्योंकि उसके खान-पान रहन-सहनके सब ढंग अंग्रेजोंके जैसे होगये हैं। विलासिताकी तो मानों मूर्ति बन गया है। स्वास्थ्य भी उतना अच्छा नहीं है। कारण अभक्ष्य खाना, शराब पीना, धूम्रपान करना इत्यादि बातें सुननेमें आती हैं। इससे स्वास्थ्य खराब हो जाता है। हमारी ऐसी सुचरित्रा लड़की ऐसे चारित्रहीनके योग्य नहीं है।

भाग्यचन्द्रकी कन्याके लिए वरकी क्या कमी है। धनी पिताकी एक मात्र कन्या जिसे देखो वही एकबार दयावतीसे किसी न किसी बहाने अपने लड़केसे शादीकी सुना देता था। कोई मिसरानीके द्वारा, नौकरानी द्वारा अथवा ब्राह्मण द्वारा

कहला देता था। तात्पर्य यह कि सब लोग मधुमक्खीके छत्ताकी भांति इधर उधर लग रहे थे।

दयावती क्रमशः एकके बाद दूसरे—तीसरेका नाम पतिको सुनाने लगी। भाग्यचंद्रने सभीमें कोई न कोई अवगुण बतलाकर बात स्थगित कर दी। अस्तु, कुछ समय यूं ही व्यतीत हुआ। संयोगवश जिस बैंकमें भाग्यचंद्रके रुपये जमा थे वह फेल हो गया। व्यापारमें भी सोना छूते मिट्टी होने लगा। तात्पर्य कि भाग्यचंद्रका भाग्य विपरीतता ग्रहण करने लगा। क्रमशः हानि पर हानि होते होते गांव, जागीर और घर तक बिकनेकी नौबत आ गई। भाग्यचंद्रने बड़ी धीरतासे विपत्तियोंका सामना किया। सब कुछ बेचकर देना दे दिया और एक छोटासा मकान किराए पर लेकर ६०) साठ रुपये महावार पर अध्यापकका काम कर कालक्षेप करने लगे। दयावती भी आयके मुताबिक ही खर्च कर दिन व्यतीत करने लगी। अब धनाभावके कारण भाग्यचन्द्रने पुत्रीको शास्त्री परीक्षा दिलानेकी बात मनमें ही दबा ली।

समयकी गतिमें पति—पत्नीका समय तो शांतिसे व्यतीत हो रहा था, पर उस शांतिके बीचमें पुत्री कुमुद वही कुमुद जिसके ऊपर माता पिताका सर्वस्व न्योछावर था, जिसके भावी सुखकी कल्पनामें दोनों विभोर हो जाते थे, इस समय चिंताका विषय हो रही थी।

पहले जो लोग कुमुदको अपनी पुत्रवधू बनानेमें अपनेको

धन्य समझते थे, गुणोंकी प्रशंसा करते हुए न थकते थे, वे ही अब भाग्यचंद्रसे आंख छिपाने लगे। भाग्यचंद्र मन ही मन इन अर्थलोलुपोंके भावको देखते और हंस देते। वे अब भी अपने सिद्धांत पर दृढ़ थे। लेकिन मनचाहा वर न मिलता था। कुमुदके लिए उन्हें अत्यंत धनवान वरकी आवश्यकता न थी। उन्होंने अपनी कुमुदको विलासिताके सांचेमें नहीं ढाला था, उसके लिए नित्य नए फैशनकी आवश्यकता न थी। उन्होंने तो उसे सीता सावित्रीकी-सी शिक्षा दी थी जो प्रत्येक अवस्थामें पातिव्रतमें दृढ़ रहकर संतोषपूर्वक जीवन व्यतीत करे। अस्तु।

कुमुदने पठन-पाठनसे निवृत्ति पाकर लिखनेकी ओर ध्यान लगाया। वह सदैव पुस्तकालयसे अच्छे अच्छे पत्र-पत्रिका मंगाकर पढ़तीं और समयानुकूल उनमें लेख छपनेको देती। कुमुदकी लेखनशैली तथा विचारगांभीर्य पर संपादकजी प्रसन्न हो उठते और उसे मुखपृष्ठ पर स्थान देते।

प्रातःकालका समय था। कुमुद रसोईघरमें माताके साथ भोजन बना रही थी। भाग्यचंद्र मनोरमाकी एक प्रति लिए हुए बड़ी प्रसन्नतासे आए और कुमुदके हाथोंमें देते हुए बोले—बेटी देखो, यह समालोचना कितनी सुन्दर है, मालूम होता है किसीने मेरे ही हाथों इसे लिख दिया है। मुखपृष्ठ पर समलोचकजीका भव्य चित्र दिया था। और कुमुदके दिए हुए एक निबंधकी समालोचना।

कुमुदने साहित्य संसारमें हलचल मचा दी। उसके लेखोंने पत्रिकामें नवजीवनका संचार कर दिया। अपनी वस्तुका सम्मान होते देख अत्यधिक उत्साहसे वह लिखने लगी। प्रति-मास निश्चित दिवस पर कुमुद पत्रिकाकी आस बड़ी व्याकुलतासे देखा करती। संपादकके एक—एक शब्द उसके हृदयमें मधुवर्षा देते। उसका मन तृप्त हो जाता। लेखकका पुरस्कार इससे अधिक और क्या होगा?

आज चपलाके घर बडी चहल—पहल मची हुई है। कुमुद उसके चाचाकी पुत्री है। अतः आज मैट्रिक पास होनेके उपलक्षमें जो पार्टी होनेवाली है उसमें कुमुद—कुटुम्बको भी निमंत्रण आया है। वह सादी वेश—भूषामें माता—पिताके साथ गई। दरवाजेके भीतर जाते ही चपला बड़ी तेजीसे दौड़ी आई और कुमुदका हाथ पकडकर भीतर ले जाती हुई बोली—कहो बहन, क्या तुम्हें मालूम ही नहीं था कि तुम्हारे घर आज पार्टी है। तुम तो मानों सात गैरोंमें एक गैर जैसी बन गई। कुमुदकी मांकी ओर देखकर—चाचीजी! आपने इसे पहलेसे क्यों नहीं आने दिया? दयावतीने चपलाके सरपर हाथ फेरते हुए कहा—बेटी तूने फर्स्ट डिवीजन पाई यह बड़ी खुशीकी बात है। यूं ही किसी कारणवश कुमुद पहले नहीं आ सकी।

आज ड्राईंग रूम बडी ठाठसे सजाया गया है। टेबुलपर भोजनका सामान बड़ी सुन्दरतासे रखा है। सात बजनेका

समय है, चपलाके सहपाठी मित्र मण्डलीके युवक युवती क्रमशः आने लगे। वह भी पाश्चात्य सभ्यतानुसार सबसे हाथ मिलाती हुई सबको यथा-स्थान बैठा रही है। किसीके ग्लासमें सोड़ा, किसीको बर्फ, किसीको मिठाई देती तथा किसीको कहती कुछ और लाऊं इत्यादि२ अभ्यर्थना द्वारा अतिथियोंके पूर्णतया स्वागतमें चपला तल्लीन हो रही है। अस्तु सबने भोजन किया और पास होनेकी बधाई दी।

विलायतसे बैरिष्टरी पास कर आये हुए चपलाके भावी पति निहालचंद्रने भी बड़े प्रेमसे उसके हाथको दबाते हुए अपने सुमधुर मुस्कान एवं कटाक्ष द्वारा उसे धन्यवाद दिया। इसका प्रत्युत्तर भी उन्हें इसी प्रकार मिला। अब इन लोगोंको उसी प्रकार आमोद-प्रमोदमें छोड़ दीजिए। क्योंकि, अभी ये लोग दो-तीन घंटे मनोविनोद करेंगे, आइये चपलाके पिता व कुमुदके पिताको देखें क्योंकि वो लोग एक युवकसे बड़ी दिलचस्पीसे बातें कर रहे हैं।

युवकका नाम चन्द्रशेखर था, वह चपलाकी माताके गांवका रहनेवाला था। किसी कारणवश वह यहां आया था और सोचा कि चपलाकी मातासे भी मिलता जाऊँ। उस युवकको देखते ही भाग्यचन्द्रके हृदयमें एक प्रबल आकर्षण हुआ। वे चपलाके पितासे उसका परिचय पूछने लगे। क्रमशः चंद्रशेखरके विषयकी सभी बाते उन्होंने ज्ञात कर ली। पत्रिका लेखक और

समालोचकको आज अपने सामने मनोनित रूपमें देखकर भाग्य-चन्द्रका हृदय पुलकित हो उठा। उन्होंने मन ही मन न जाने कितनी कल्पनाएं कर डालीं।

चपलाके पिता चंद्रशेखरको भीतर ले गए। वहां चपलाकी माताके पास दयावती तथा कुमुद भी बैठी हुई थी। चन्द्रशेखरने बड़े विनयसे सबको नमस्कार किया। बहुत दिनोंके बाद अपने पड़ोसी भाईको देखकर चपलाकी माता हर्षित हुई और प्रेमसे आशीर्वाद देकर कुशल समाचार पूछने लगी।

एकाएक चाचाके साथ किसीको आते देख कुमुदकी आँखें उधर उठ गयीं। देखते ही सहसा उसकी आंखोंके सामने समालोचकजीका चित्र फिरने लगा। क्या यही विख्यात संपादक हैं? यह ध्यान उसके हृदयको कंपित करने लगा। चंद्रशेखरके विनययुक्त व्यवहार तथा सरल वचनालापसे मुग्ध होकर उसने मन ही मन बड़ी भक्तिसे प्रणाम किया।

× × ×

आज कुमुद नाना प्रकारके व्यंजन बड़ी तत्परताके साथ बना रही है, क्योंकि भाग्यचंद्रने चंद्रशेखरको आमंत्रित किया है।

यथासमय चंद्रशेखर आ गए। दयावतीने बड़े प्रेमसे पुत्रकी भांति भोजन कराया और बातचीत करने लगे।

भाग्यचंद्रके हाथमें पत्रिकाकी वही प्रति थी और सामने ही संपादकजीकी सशरीर सरल मूर्ति ।

अपनी फोटोको पत्रिकाके पृष्ठों पर देखकर चंद्रशेखर गड़े जा रहे थे, वात बदलनेके अभिप्रायसे उन्होंने लेखिका कुमुदकी लेखचातुरीकी प्रशंसा बड़े महत्वपूर्ण शब्दोंमें की । कुमुदका सिर लज्जासे नत हुआ जा रहा था ।

भाग्यचंद्रने भी कहा—कुमुद ! तुम्हारे लेखके समालोचक ये ही महाशय हैं । कुमुदका नाम सुनकर चंद्रशेखरने चौंककर उधर देखा । यही लेखिका कुमुद है । इसी सरलाके हृदयमें इतने दृढ़तर भाव भरे हुए हैं । अधिक लज्जाशील होनेके कारण कुमुद वहां न ठहर सकी, उठ कर चली गई । भाग्यचन्द्रने उचित अवसर देखकर कुमुदको स्वीकार करनेकी बात कही । उन्होंने नतमस्तक हो स्वीकृति दे दी क्योंकि उनके माता-पिताका देहांत हो चुका था, अतः उन्हें स्वयं ही अपनी जीवन-संगिनीको चुनना भी था । अस्तु, शुभ मुहूर्त देखकर चन्द्रशेखरके साथ कुमुदका विवाह शिक्षित एवं विज्ञ पिताने बड़ी सादगीके साथ आडम्बर रहित किया ।

आज कुमुद पतिगृहमें बैठी हुई है । हंसते हुए चंद्रशेखरने कहा—लेखिकाजी ! क्या किसी लेखकी सामग्रीमें निमग्न हो रही हैं ? कुमुद लज्जासे सर नीचा कर बोली—जी हां समालोचकजी, आप भी अभीसे समालोचनाके लिए प्रस्तुत हो जाइये । दोनों

समान आत्माएं बड़े प्रेम एवं शांतिके साथ दूने उत्साहसे साहित्योद्यानमें वृद्धिगत हो फूलने-फलने लगे। स्त्रियोपयोगी लेखके साथ मासिक पत्रिका उनके यहांसे प्रकाशित हुई जो समाजको बहुत पसंद आई। क्रमशः कार्य बढ़ने लगा। पत्रिकाके ग्राहक-ग्राहिका अत्यधिक संख्यामें हो गए। कोई भी शिक्षित गृह "कमला" पत्रिकासे शून्य न था। विदेशोंसे भी इसकी मांग होने लगी। बड़े बड़े लेखक और लेखिकाओंके लेख भी सदैव एकत्र रहने एवं उनको उचित पुरस्कार मिलने लगे। तात्पर्य यह कि क्रमशः कार्यने बड़े क्षेत्रमें प्रवेश किया। दो शरीर और एक प्राण होकर कुमुद तथा चंद्रशेखरने साहित्य संसारमें अपने गुणोंसे चकाचौंध डाल दी तथा सुशिक्षित दंपति अपने गृह-जीवनको किस प्रकार सुखद बनाता है इसका नमूना रख दिया। दोनों एक-दूसरेको सुखी रखनेका सदैव ध्यान रखते।

संध्याका समय है। कुमुद अपनी गृहवाटिकामें बैठी एक सुन्दर फूलोंकी माला बड़ी सुन्दरतासे गूंथ रही है। चंद्रशेखर भी टहलते हुए वहां आए। कुमुदको प्रफुल्लित मनसे माला बनाते देख बोले—प्रिये कुमुद! आज तुम बड़ी प्रसन्न दिखाई देती हो, कहो तो यह हृदयहारी हार किस भाग्यवानकी शोभाको बढ़ायेगा?

कुमुद—नाथ! चंद्रके समीप रहकर यदि कुमुदनी प्रफुल्लित न होगी तो कब होगी? यह माला जिस प्रकार अपने

फूलोंकी सुगंधि चारों ओर फैलाती है, वैसे ही आपके गुणोंको दिगदिगंतरोंमें विस्तृत करनेके लिए आज आपकी वर्षगांठके उपलक्षमें इस वक्षस्थलको सुशोभित करेगी। यह कहती हुई कुमुदने माला पतिके गलेमें डाल दी। इतनेमें दासीने आकर किसीके आनेकी सूचना दी। कुमुदने घरमें जाकर अपनी बहन चपलाको बड़ी दयनीय दशामें देखा। वह उसे गलेसे लगाकर बड़े प्रेमसे बोली—कहो बहन, आप कैसे आ गई। चपलाकी आँखोंसे अविरल अश्रुधारा बहने लगी। बड़े कष्टसे हृदयको संभाल कर उसने कहा—

बहन क्या कहूँ ? फैशनका भूत मेरे सिर पर सवार था। भाग्यवश पतिदेव भी वैसे मिले। बस फिर क्या था ? दोनोंने विलायती दंपतियोंको भी मात कर दिया। कुछ ही दिनोंमें मुझे मेरी भूल मालूम हो गई। जैसे मैंने खरा सोना समझा था वह मुलम्मा निकला।

जब यौवन-उन्मत्तता दूर हो गई तो उनकी आँखोंमें दूधकी मक्खीकी भांति मैं देखने लगी। कुछ दिन तो छिपे-छिपे सब कर्म होते रहे। पीछे मेरी आंखोंके सामने सभी दुष्कृत्य होने लगे। द्रव्य पानीकी भांति वेश्या तथा मद्यपानमें व्यय होने लगा। अब मेरा मन दुनियांके झंझटोंसे उठकर साहित्य सेवा करनेका हो रहा है, अतः आपकी शरणमें आई हूँ, कृपाकर मुझे भी अपनी दासी समझिए।

कुमुद—बहन चपला, तुम धैर्य रखो। तुम्हारी जो इच्छा है वही करो। साहित्य सेवाके फलमें जो मेवा मिलती है वह कितनी सुस्वाद तथा अक्षय है यह तुम्हें प्रवेश करनेसे शीघ्र ही ज्ञात होगा। भारतमें सत्साहित्यकी बड़ी कमी है, जिसे हम सबोंको मिलकर ही बढ़ाना है।

—श्री० जयनेमादेवी, आरा।

(४)

अपने बाबूजीको रोते देख ललिताकी चीखें निकल गयीं

रात्रिके ग्यारह बज चुके थे। ललिता सो गई। राजरानी चारपाई पर बैठी थी। "इस नौकरीका मुझे कुछ भी भरोसा दिखाई नहीं देता" अति उदास मनसे विजयकृष्ण अपने पुत्रको गोदमें लिए इधर उधर टहल रहे थे। और ये ही वाक्य दुहरा रहे थे। नौकरीकी याद आते ही निरेंद्रबाबू रो पड़े। ऐसा देख राजरानीने कहा—क्यों ? क्या कोई नई बात है ? यह कहते-कहते राजरानीकी आंखोंसे अश्रुओंकी धारा बह चली।

निरेंद्रबाबू—"बड़ा साहब कुछ जलासा रहता है।"

राजरानी—बिना किसी कारणके ? हमारी निर्धनता ही इसका कारण है।

निरेंद्र०—चालीस रुपये वेतन मिलता है। दिनभर कठिन परिश्रम करना पड़ता है। फिर भी..., आह ! कैसे बुरे दिन हैं। घरका दो-तीन मासका किराया देना है। हर समय वह जली-कटी सुना जाता है। क्या करूं ? किधर जाऊं ? यदि जीवनसे हाथ धोकर भी इस दुःखसे मेरी रिहाई होती तो......।

...अचानक चौंक उठता है और कहता है हाय—हाय ! जानबूझकर मरना महापाप है । क्या मैं पागल हो गया हूं ? मुझे घबराना नहीं चाहिए । हृदयमें आशाकी झलक भभक उठी और कहने लगे—"जीने आशा, मरे निराशा"। कल शनिवार है। बहुत ही अवकाशका दिन है । एक जगह चिट्ठीका कार्य दफ्तरमें मिल सकता है । दस रुपये माहवार कह रहे थे । मैं पन्द्रह मांग रहा था । अब सोचता हूं कि उससे मिलकर दस पर ही कार्य आरम्भ कर दूं । बड़े आफिससे लौटनेपर वहां जाया करूंगा ।

राजरानी—जो ठीक समझो करो । वह जानती थी कि निरेन्द्रबाबूका स्वास्थ्य अधिक कार्य करनेके कारण बिगड़ रहा है, किंतु क्या किया जाय ?

पेटकी कोठीको भरना था ।

कई साल और मास बीतते गए । निरेंद्र प्रत्येक दिन आफिसको जाता था । शायद ही वह किसीसे बात—चीत करते हों । जब आफिसके अन्य कार्यकर्त्ता हंसी-ठट्ठा करते तो वह उनकी तरफ ध्यान नहीं देता था । उनका उतरा हुआ चेहरा और लाल लाल आंख लोगोंके लिए हंसीका कारण थीं । वह इन बातोंका उत्तर कभी नहीं देता था । यही कारण था कि अन्य-जन उससे क्रुद्ध ही रहते थे ।

सच है गरीबका कोई नहीं होता । अंतमें वही हुआ जो होना था । साहबने नौकरीसे जवाब दे दिया । निरेन्द्रबाबू आह भर कर रह गए । क्या अमीरोंका काम गरीबोंका

पेट काटना ही है ? क्या कभी वह दिन भी आयगा जब संसारमें धनका बड़प्पन न रहेगा। भूखा मनुष्य दूसरोंके आगे हाथ न फैलायगा। निरेन्द्रके सरमें चक्कर आने लगा। घरके दरवाजे पर पहुँचकर ही वह मूर्छित होकर गिर गया। होश होनेपर राजरानीने पूछा—

निरेंद्र—तबियत कैसी है ? जो कहा था वही हुआ।

राजरानी—क्या हुआ ?

निरेन्द्र—नौकरीसे जवाब मिल गया है। निरेन्द्र रोने लगे। चेष्टा करनेपर भी वे नहीं रुक रहे थे। उन्हें देख राजरानी भी रो पड़ी।

माता पिताको रोते देख ललिता व विजयकृष्णा भी रोने लगे। सायंकालका समय था। बच्चोंसहित माता पिताकी आंखोंसे अश्रुधारा बह रही थी। निरेन्द्र और राजरानी परस्पर एक दूसरेको देख रहे थे। पर दोनोंकी ही जिह्वाओंपर ताला लगा हुआ था। राजरानी टिमटिमाते हुए दीपकको हाथमें ले जिनमंदिरमें जा प्रभुसे प्रार्थना करने लगी—हे ईश्वर ! दूध व घीकी नदियां सूख चुकी हैं। भला इस तरह हाथपर हाथ धेर कबतक बैठे रहेंगे ? हे प्रभु ! आप ही बताइये कि हमें अब क्या करना चाहिए ? हे भगवान् ! स्त्रीका तो यही धर्म है कि अगर स्त्री पढ़ी लिखी है व कुछ कर सकती है तो पतिको धीरज बंधाकर खुद इज्जतके साथ सिलाई-चुनाई व पढ़ाई इत्यादिका कार्य कर पतिकी सहायता करे। गृहस्थी रूपी रथ चलानेमें

दोनोंकी आवश्यकता है । नहीं नहीं मैं भूल गई, शरम है और बहुत बड़ी शरमकी बात है । बेवकूफ, नासमझ मुझपर हसेंगे, पति पर हसेंगे कि तुम औरतकी कमाई खाते हो । सिलाई-बुनाई भी इतनी नहीं चल सकती है ।

हे ईश्वर ! दीनदयाल महावीर स्वामी ! शीघ्र ही मेरे गुणोंका निवारण करो । यह कहते हुए राजरानीकी आंखोंसे लगातार कितनीक देर तक अश्रुप्रवाह होता रहता । निर्धनोंकी संपत्ति और है ही क्या । आंसू ! सिर्फ आंसू और स्त्रीकी संपत्ति पति ही है ।

—श्री धनवन्ती देवी ।

(५)
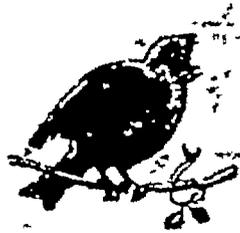
प्रभाका विवाह

प्रभा एक उच्च एवं शिक्षित घरानेकी कन्या थी। जब वह दो वर्षकी थी तभी उसके माता-पिताका देहांत प्लेगसे हो गया था। पिताके घर अब इसका पालन-पोषण करनेवाला कोई नहीं था। अतः प्रभाको मामा अपने घर ले गये और बड़े लाड़-चावसे रखा।

जब पांच सालकी हुई तो उसे जैन कन्या पाठशालामें प्रविष्ट करा दिया। प्रभाकी बुद्धि बहुत प्रखर थी। उसने सहज ही पाठशालाका कोर्स पूरा कर लिया। यह देखकर प्रभाके मामाने उसे पढ़नेके लिए आश्रममें भेज दिया। वह अपने सरल एवं प्रेमभावसे रहनेके कारण सबको अच्छी लगती थी। यहां आकर उसने संस्कृतकी मध्यमा परीक्षा पास की। उसके मामाकी इच्छा थी कि और पढ़ाऊं किंतु उनके नातेदारोंने उन्हें चैन नहीं लेने दिया। इससे विवश होकर उन्होंने प्रभाको बुला लिया। फिर सगाईकी बात-चीत चली। लड़केने कहा—वर स्वयं लड़की देखेगा। मामाने स्वीकार कर लिया और आनेवाले दिनकी प्रतीक्षा करने लगे।

आज प्रभाको देखनेके लिए भावी वर आनेवाला है। उनके स्वागतमें कहीं मिष्टान्न बन रहे हैं, कहीं सजावट हो रही है। वे मोटरमें आ रहे थे, प्रभा खिड़कीसे देख रही थी।

मोटर दरवाजेपर रुकी। प्रभाके मामा और भैया झट उनके पास जा खड़े हुए। प्रभाने खिड़की बन्द कर दी। सब लोग मकानमें चले गये तो प्रभाने कांपते हुये हाथोंसे फिर उसे खोल दिया। चाहा कि नीचे देखूं पर लजा गई।

प्रभाका कमरा दरवाजेके ऊपर था। थोड़ी देरमें सब लोग हंस-हंसकर बातें करते हुए बाहर निकलें। खिडकीको थोड़ासा खोलकर प्रभाने देखा। वे हाथसे बालोंको संवारते हुए प्रभाके भैयासे कुछ कह रहे थे। और फिर मोटरमें सवार हो विदा ली।

प्रभाके मामाकी लड़की चंचल घबराई हुई-सी दरवाजा खोलकर प्रभाके पास आई। कहने लगी "चल जीजी, जल्दी चल जीजाजी आये हैं" प्रभाने कुछ उत्तर न दिया क्योंकि वे तो पहले ही चले गये थे। वह मन ही मन चंचलपर खीझ उठी। परन्तु चंचल कब माननेवाली थी, खिलखिलाकर शोर मचाने लगी, "मैं घंटेभरसे तुझे खोजती-फिरती हूं। तुम्हारे पाँव पड़ती हूँ जल्दी चलो।"

प्रभाने तिनक कर कहा—तूं बड़ी ढीठ है। अभी तुझे भैय्यासे ठीक करवाती हूं। भाग यहांसे।

चंचल भौंहे सिकोड़ती हुई बोली—तो मैं अभी जा कर कह देती हूं कि वो न आवेंगी। जीजाजीको देखना हो तो ऊपर ही आकर देख जावें। यह कह कर भाग गई और प्रभा उसकी बातों पर हंसने लगी।

दो ही मिनटमें चंचलने लौटकर बताया कि जीजाजी कहीं चले गए हैं और पिताजीने कहा है कि जो साड़ी तुमने पहनी है उसे उतार न डालना, वे अभी लौट कर आवेंगे। यह सुनकर प्रभाको कुछ धैर्य हुआ। उसने प्यारसे पकड़ कर चंचलका मुंह चूम लिया।

रातके बारह बज गये। प्रभाका चित्त उदास होगया, मानों उसका शृंगार उसे स्वयं लज्जित कर रहा है। उनकी ऐसी उपेक्षा उसे असह्य हो गई। उसने आभूषण और वस्त्र उतार कर फेंक दिए। एक पुरानी साड़ी पहनकर पृथ्वी पर गिरकर खूब रोने लगी। कुछ दिल हलका होने पर उसने सोचा कि वे किसी संकटमें फंसे मालूम होते हैं अन्यथा आकर क्यों लौट जाते ?

सबेरा हुआ। उजालेके साथ ही तमाम मनुष्योंमें चर्चा फैल गई के अब मेरा विवाह उनके साथ न होगा, यह कह कर दरवाजेसे लौट गए हैं। परन्तु क्यों ऐसा कहा यह किसीकी समझमें नहीं आता था।

आठ बजे प्रभासे उसकी मामीने कहा—बेटी! सोच करनेसे क्या होता है ? यह हम लोगोंका दुर्भाग्य है कि बिल्कुल हाथ आया हुआ लड़का हाथसे निकल गया है। यहांके आदमी किसीके बनते कामको देख नहीं सकते।

प्रभाने कहा—मामी! किसीको दोष देनेसे क्या लाभ ?

मामी—वे आकर स्वयं ही लौट गए, जाने दीजिए न ?

मामी—पर थोड़े दहेजमें वर मिलते कहां है ? पढ़ा-लिखा सुशील और सुन्दर दूसरा कोई लड़का इन दामोंमें मिलना असंभव है।

प्रभा—पर उन्होंने तो स्वयं ही प्रस्ताव किया था। कुलीन लड़कोंको लड़कियोंकी क्या कमी ? किसीने उनके पिताको समझा दिया है कि दहेज अधिक दूंगा। अतः यहांसे लौटते ही महेशपुरके बड़े घरमें उसकी बातचीत पक्की हो गई है।

प्रभा—तो जाने दीजिए वे तो धनके भूखे हैं।

मामी—जाने कैसे दें, जो भुगतना है उसे तो किसी तरह पूरा करना ही पड़ेगा।

क्या समाजकी दशा नहीं जानती है ? छिप-छिपकर ढोंगके साथ पाप किया जाता है। कब तक विवाह न होगा ?

भय्या मामीसे क्या कहते हैं यह सुननेके लिए प्रभा रसोईमें जा बैठी तो सुना—

भय्यासे उनकी मुलाकात नहीं हो सकी, परसों उनको तिलक चढ़ेगा। यह सुनकर प्रभा खेदखिन्न हो गई सोचने लगी मैं यहां आई ही क्यों ? मैं भी तो आखिर प्रण कर चुकी

हूँ । क्या मैं उसे त्याग दूँ ? नहीं, मैं ऐसा कदापि नहीं कर सकती ।

कौन जानता था कि पासा इतनी जल्द पलट जायगा । आज बारातका दिन है । लड़कीके घर बहुत चहल-पहल है । बारातकी आगवानी की गई । बादमें दहेजका करार पूरा करनेके लिए लड़कीके पिताको विवश किया गया । उन्होंने गरम होकर कहा—चुपचाप काम किए चलो, कुलके माफिक हठ करना शोभा देता है ? देनेके लिए ही मेरे पास अगर अधिक धन होता तो अपनेसे नीचे घरमें सम्बंध ही क्यों ठीक करता ?

यह बात सुनते ही वे उछल पड़े । न जाने क्यों ? शायद उन्हें अपने आचरणका ध्यान आ गया होगा । चाहे जिसके बहानेसे ही उन्होंने प्रभाके घरका जो अपमान किया था उसका प्रत्यक्ष नमूना उनको और अपने घर आ गया । सारे मकानमें हाहाकार मच गया । लड़ाई होते हुए लाठी चलनेसे बच गई ।

इस अन्यायके प्रतिशोधके लिए उनमेंसे एक बरातीने अपनेको पेश किया, वह चौकपर बैठाया गया, समय आने पर लड़कीको बुलाया, परन्तु लड़कीका कहीं पता न था । हर कोना छान दिया गया । तालाब और कुएं देखे गए लेकिन कन्याका कहीं पता न मिला । सारी रात व्यतीत हो गई । न असली वरका ही विवाह हो सका और न नकलीका ही ।

प्रभाको जब मालूम हुआ कि लड़की कहीं भाग गई है और बारात वापस आ गई है तो बहुत प्रसन्न हुई। मानों मृतक शरीरमें फिरसे प्राणोंका संचार हुआ हो। वह सोचने लगी कि कहीं वह लड़की मिल जाय तो मैं उसके पैरोंकी, धूल अपने मस्तक चढ़ाकर उसीके चिह्नोंका अनुसरण करूं।

उस कन्याको वह अच्छी तरह जानती थी। वह सोचने लगी–ऐसी छोटी कन्याका कितना प्रबल साहस ? आखिर क्यों न हो, ऐसा घोर अपमान सहन करना कौन शिक्षित कन्या पसंद करेगी ? "लो बिल्लीके भाग्यसे छींका टूट गया।" ऐसा कहती हुई मामी प्रभाके पास आई। हंसती रहीं, उनका एक-एक शब्द बर्छेकी तीव्र नोककी तरह प्रभाके मनको घायल करने लगा।

कोई उत्साह न पाने पर उन्होंने कहा—मैंने तुम्हारे मामासे कह दिया है कि इसबार कुछ उठा न रखा जाय। खूब प्रयत्न करें। मेरा जी कहता है कि अब वे काफी सीख गए हैं।

प्रभा—(क्रुद्ध-सी होकर) आपसे यह सब किसने कहा था ? मेरे मनमें क्या है यह आप कैसे जाननेका दावा करती हैं ?

मामी—मैं सूरत देखकर मनकी बात जान लेती हूँ।

प्रभा—खूब ! मैंने तो उसी दिन स्पष्ट कह दिया था कि मैं विवाह न करूंगी। आज भी मैं उसीको दुहराती हूं। अब कोई प्रयत्न करेंगी तो व्यर्थ होगा, मुझे विवाहके लिए कोई तैयार नहीं कर सकता। मैंने समाजका ढोंग समझ लिया है। मैं इस ढोंगकी जड़ काटूंगी। इतना कहकर प्रभा चली गई।

प्रभा अपने कमरेका पीछेवाला दरवाजा खोलकर एक पुस्तक उठाकर पढ़ने लगी। सामने गांवका बड़ासा तालाव था। उसमें खूब कमल खिल रहे थे। किनारेपर आमके एक वृक्षके नीचे कोई लड़की चुपचाप खड़ी थी। लड़कीके इधर देखनेपर प्रभाने हाथके संकेतसे उसे बुलाया। वह आकर प्रभाके गलेसे लग गई और काफी देरतक दोनों रोती रहीं।

प्रभाने कहा—अन्नपूर्णा ! तुम्हारी यह क्या हालत हो गई है ? तुम्हें देखकर मुझे आश्चर्य होता है, परन्तु शाबाश ! तुमने वह काम कर दिखाया है जो किसीने नहीं किया। उस घमण्डी तथा दहेजके भूखे वरको सीख दी है कि अधिक लोभी होना हानिकारक है और समाजमें उनका तिरस्कार होता है। पहले वे मुझसे विवाह करनेकी वांछासे यहां आए। किन्तु यह सुनकर कि तुम्हारे पिता अधिक श्रीमान् हैं, वे अधिक दहेज देंगे तुरंत वापिस चले गए। परंतु प्यारी बहन ! इस उपेक्षाका बदला तुमने खूब दिया। इसका

मैं हृदयसे अभिनन्दन करती हूं, मैं भी तुम्हारे साथ ही रहूंगी।

अन्नपूर्णा—बहन! मैंने तो सुना है कि उनसे तुम्हारी शादी करनेकी फिरसे आयोजना हो रही है। तुम कहती हो कि "तुम्हारे साथ रहूँगी" यह कैसे संभव है?

प्रभा—विवाहकी आयोजना कैसी? मैंने तो मामीसे कह दिया है कि शादी नहीं करूंगी।

हमारे भारतमें यह प्रथा प्राचीनकालसे प्रचलित थी कि हजारों पुरुषोंके मध्यसे एक योग्य वर देखकर कन्या स्वयं जयमाला डालकर स्वयंवर कर लेती थी। लेकिन आज खेदके साथ कहना पड़ता है कि हमारे पिता एवं भाइयोंने हमारी ऐसी दुर्दशा कर दी है कि हम स्वयंवर क्या देखती कि उल्टे हमें ही वर देख—देखकर लौट जाते हैं।

कितने तिरस्कार और दुःखकी बात है जब कि लड़की एक पुरुषके पति अपने मनमें प्रतिभाव कर लेने पर फिर अन्य सभीको भ्राता समान समझती थी। संयोगवश यदि शादीसे पहले भी सम्बंध टूट जाय तो आजन्म ब्रह्मचारिणी रहती थी। वह आज कुंजड़ेकी तरकारीकी भांति अथवा मिट्टीके वर्तनकी तरह हरएक व्यक्तिको सामने पेश की जाती है। यदि उन्हें पसंद आ गई तो आ गई अन्यथा छोड़कर चले गए।

तिसपर भी यह नखरा कि इतने रुपये लेंगे, इतना जेवर लेंगे। इस तरह तो हमारे माता पिता उस सब्जीवालेसे और हम लोग उस सब्जीसे भी गई बीतीं हो गई है। क्योंकि जो ग्राहक लेते हैं तब वे पहले स्वयं गांठका द्रव्य खर्च करनेको तैयार होते हैं। तब किसी चीजको लेने जाते हैं। (यहांपर कन्यापर रुपये लेनेका भाव न समझें) लड़कीके साथ जो दहेज दिया जाता हैं, वह खुशीके साथ दिया जाता है। लड़की भेंटके तरीकेपर दी जाती है उसमें करारनामा करवानेकी जरूरत नहीं है। परंतु यहां तो उल्टा ही खेल है कि घरसे एक आदमी दें, उस पर दस पांच हजार रुपये दें। चाहे इस ऋणको चुकानेके लिए मकान बेचना पड़े !!!

लेकिन बेटीवाले इतना द्रव्य देकर और अपनी प्यारी पुत्री देकर इतना तक करनेको समर्थ नहीं होते कि जिस घरमें कन्या दे रहे हैं कि उसमें यह अपनी जिंदगी सुखपूर्वक भी बिता सकेगी या नहीं जैसा कि बहुधा हर जगह स्त्रियोंका दुःख देखनेमें आता हैं। यहां तक कि पतिके मरने पर जो कुछ धन उनके पास होता है वह कुछ तो जबरदस्तीसे और कुछ फुसलाकर ले लेते हैं। फिर मांगने पर अनेक तरहकी जली-कटी सुनाते हैं।

यदि पति जीवित रहा तो सुखसे दिन बीत गए अन्यथा दुःखी ही रहीं। सो यह तो उनके भाग्य पर ही निर्भर है।

माता-पिता या ससुरालवाले ऐसा द्रव्य नियत नहीं करते जिससे वह स्वाधीनतासे धर्मध्यानपूर्वक जीवन व्यतीत कर सके ।

समाजको उचित है कि विवाहके समय लड़कीके नाम कुछ न कुछ द्रव्य अपनी शक्ति अनुसार अवश्य करा दें । जब कि दहेज लेनेके लिए तो कुछ हद ही नहीं रखते । बेटेवाले लोभरूपी सर्पसे काटे हुए ऐसे बेहोश हो जाते हैं कि वे यह विचार ही नहीं करते कि हमारे भी तो लड़कियां हैं, जो देनेके समय हमें भी ऐसी ही कठिनाइयोंका सामना करना पड़ेगा ।

इस दहेज न दे सकनेके कारण कई व्यक्ति आत्मघात कर लेते हैं ।

परन्तु बहन अन्नपूर्णा ! आत्मघात करना तो महापाप है, हिंसाका फल नरकोंमें, सागरों तक भोगना पड़ेगा अतः हम तुम दोनों ब्रह्मचारिणी रह कर समाजकी आंखें खोल दें । कुरीतियोंको जड़से उखाड़ फेंकनेका प्रयत्न करें । हम श्री आदीश्वर स्वामीकी पुत्रियां ब्राह्मी और सुन्दरीका अनुकरण करेंगी तथा सती राजुलजीके समान तपश्चरण करेंगी । जब कि एक पतिके वशमें आकर हमसे न तुमसे दोनोंसे विवाह न किया तब हमलोगोंको विवाहकी भावना भी मनमें नहीं लानी चाहिए । और कामदेवके समान रूपधारीके कहने पर भी न डिगना चाहिए । चलो सातवीं प्रतिमाके व्रत मुनिमहाराजसे ले लें । बस जन्म सफल हो जावेगा । धन्य !

—जैननेमी देवी. आरा ।

(६)

बेकारी

गंगातट पर गेरुआ रंगकी धोती पहने, छोटासा अंगछा कन्धे पर रखे एक मनुष्य जिसे हम अभी सन्यासी ही कहेंगे, एक युवकका सिर अपनी गोदमें रखे धीरे धीरे सहलाते हुए पूछ रहा है कि भाई, अब तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है ? युवक विस्मित नेत्रोंसे उसकी ओर देखकर प्रथम तो हंसने लगा और और पुनः रोने लगा तथा अपने हाथोंसे सिरके बाल नोचने लगा। अस्फुट शब्दोंमें बोला—तुम कौन हो, हटो मेरे सामनेसे। अब मैं तुम्हारे स्वर्ण सिंहासनके लोभमें न फंसूंगा। तुम गोरे गोरे टोपवाले देव अपने ही लिए सब कुछ कर सकते हो। इतना कहते-कहते युवककी आंखें बंद हो गईं और मूर्छित हो गया।

सन्यासीने देखा कि अभी इसका मस्तिष्क ठीक नहीं हुआ है। अतः पास हीके रखे बटुएमेंसे दवाकी एक मात्रा और देकर समीपकी ही अपनी कुटीमें खाट पर लिटा दिया। खुद सिरहाने बैठ कर पंखा झलने लगा। अस्तु, दूसरे दिन प्रातःकाल युवक काफी स्वस्थ्य हो गया। सन्यासीके आग्रहसे उसने अपनी जीवनकथा इस प्रकार कहनी प्रारंभ की—

मेरे प्राण-रक्षक स्वामी ! मैं आपको आद्योपांत अपना दुःखद वृतांत सुनाता हूँ। आह ! यदि इस समय आप न होते तो मेरे लिए सीधा नरकका द्वार था। मेरा निवासस्थान

आराके नजदीक ही कुलहड़िया ग्राममें था। मेरे पिताका नाम कृपालकिशोर था। माताकी एक मात्र संतान होनेके कारण मैं उनको अतिप्रिय था। वहां हम लोगोंकी कुछ जगह जमीन थी, उसीकी थोड़ी-सी आयसे ग्रामीण जीवन सुख एवं शांतिसे व्यतीत होता था। दुर्भाग्यवश मैं अभागा बड़ा हुआ।

पिताजीने थोड़े दिन तो ग्रामहीकी पाठशालामें शिक्षा दिलाई। पश्चात् उच्च शिक्षा पानेके लिए अपने एक मित्रके यहां भेज दिया। मेरे पढ़ानेके समय माता-पिताकी बड़ी-बड़ी कामनाएं हो रही थीं। वे सोचते थे कि लड़का जब बड़ा हो जायगा तो हमें किसी बातकी कमी न रह जाएगी। इस प्रकार नाना भांतिकी सुखद कल्पनामें विभोर होकर उन्होंने मुझे मैट्रिक पास कराया।

पिताजीने अपनी कई आवश्यकताओंको कम करके अपने सादे जीवनको भी सस्ते जीवनमें ढाल लिया था। पास होनेके बाद उन्होंने एक धर्मनिष्ठ सुशील कन्यासे मेरा विवाह कर दिया जिससे कालेज जानेके पहले ही मैं विद्यार्थीसे गृहस्थ जीवनमें प्रवेश कर गया।

अब मैं बाल्यावस्थासे युवावस्थामें पदार्पण करने लगा था। अनाड़ीसे जानकार बन गया था। माता-पिताकी आर्थिक कठिनाइयोंसे अनभिज्ञ भी न था।

मैंने पिताजीसे कहा—अब तो मैं मैट्रिक पास हो चुका

हूं यदि आज्ञा हो तो नौकरी करूं। पिताजीने बड़ी गंभीरतासे मेरे इस विचारका खण्डन कर दिया।

वे बोले—बेटा! अभी तुम्हारे दिन पढ़नेके हैं नौकरीके नहीं। फिर मैट्रिक पास वालोंको तो पन्द्रह रुपये मासिककी नौकरी मिलना भी कठिन है। अतः तुम्हें बी. ए. तक पढ़ना होगा जिससे भविष्यमें विशेष रुपये अर्थोपार्जन कर अपना गृहस्थ जीवन सुखसे व्यतीत कर सको। अस्तु, मैंने बिना कुछ उत्तर दिए ही कालेज जानेका निश्चय कर लिया। करता भी क्यों नहीं? मैं भी पढ़नेके बाद सुवर्ण महलका स्वप्न देख रहा था। इतना कहतेर युवककी आंखें अश्रुपूर्ण हो गयीं और क्षण-भरके लिए बंद भी कर लीं।

सन्यासी—भाई! धैर्यपूर्वक कहो अधीर मत हो, सत्य सर्वांश सत्य, बेरोजगारीकी सारहीन शिक्षा प्राप्त करके कितने ही नवयुवक विषपान कर, रेलकी पटरीसे कटकर, फांसी लगा-कर, जलमें डूबकर "धोबीका कुत्ता न घरका न घाटका" वाली कहावत चरितार्थ करते हुए अपने अमूल्य जीवनका विनाश कर आत्महत्या रूप विषम पापके भागी बनते हैं।

अरुण—गुरुदेव! जब कभी मैं छुट्टीमें घर जाता तो देखता कि मेरी माता और स्त्री दूसरोंके घरसे अन्न लाकर कुछ पैसे प्राप्त करनेके लिए पीसती हैं। हां वह देवी साध्वी स्त्री जिसका मुखमंडल उस दरिद्रताके भीषण तांडवनृत्यमें भी कभी

मलीन न होकर सदैव हंसता रहता था। जब मैं उससे कहता—प्रिय! अब कुछ ही दिनोंका कष्ट हैं, मैं पढ़ लूंगा तो तुम्हें फूलोंकी रानी बनाकर प्यार करूंगा, मेरी ओर दृष्टिसे देखकर कहती—स्वामी! आप व्यर्थकी बातें क्यों करते हैं, मुझे कोई कष्ट नहीं है, कभी-कभी आपके दर्शन हो जाते हैं इसीमें मुझे असीम आनंद होता है।

कहनेको तो वो यों कह देती थी, पर कौन जानता है कि उसका हृदय भी अपनेको फूलोंकी रानी बनानेके लिए मेरी उत्तीर्णताकी बाट विकलतासे न देखता होगा। अस्तु, किसी प्रकार माता-पिताका रक्त शोषण कर पत्नीको भिखारिनीकी भांति बना कर मैंने बी. ए. की परीक्षा दी। मेरा परीक्षाफल अच्छा हुआ। यह जानकर कि मैं पास हो गया हूं मेरा कुटुम्ब कितना आनन्दमय हुआ यह लेखनीसे बाहर है। कुछ दिनों बाद पिताजीने नौकरीके लिए प्रार्थनापत्र भेजनेको कहा। कई पत्र भेजे पर एकका उत्तर न मिला।

इस प्रकार चार महीने व्यतीत हो गए। अब पिताजीकी आशालता मुर्झाने लगी। इसी समय अकस्मात् हैजाके तीव्र प्रकोपसे मेरी प्रेममूर्ति माताजीका स्वर्गवास हो गया। पिताजीकी भी अवस्था शोचनीय हो चली।

पिताजीने मुझसे कहा—बेटा, मैं तो चला लेकिन तुझे इस घरका भिखारी बनाता जा रहा हूं। मैं जितना ही करे

विषयमें विचारता हूं उतना ही अंधकारमें हुआ जाता हूँ।

मैंने कहा—पिताजी, ऐसा न कहिए। आपने भी तो मेरे लिए अनेकों कष्ट सहे हैं।

पिताजी—बेटा! तुझे यदि बी. ए. की डिग्री न दिलाकर अपनी खेती या किसी प्रकारके भी व्यवसायकी शिक्षा देते तो आज तुझे अन्त समयमें संतापकी आगमें झुलसनेकी नौबत न आती। इस समय तो ऐसा प्रतीत हो रहा है मानों मृत्यु भी मेरा परिहास कर रही है। वे और कुछ कहना ही चाहते थे कि आंखें पथरा गईं। दो-तीन हिचकियोंके साथ इस दुःखी जीवनसे सदाके लिए विदा हो गये। अब मैं, मेरी पत्नी और तीन छोटे छोटे बच्चे मेरे घरमें रह गये।

माता-पिताकी मृत्यु क्रिया समाप्त करनेपर मुझे पुनः नौकरीकी चिन्ता लगी। मैं अपनी पत्नी और बच्चोंको साथ लेकर, नौकरीकी आशामें पटना आया और एक छोटासा मकान किरायेपर लेकर रहने लगा। थोड़े दिनोंमें भाग्यने कुछ सहारा दिया। एक स्कूलमें ३०) रुपये वेतनपर अध्यापन कार्य शुरू किया। परन्तु शोक, मेरे फटे-पुराने वस्त्रोंसे वहांके कर्मचारी तथा छात्र मुझसे असन्तुष्ट रहने लगे। मुझसे यह बात छिपी न थी। किन्तु विवश था। तीस रुपयेमें तीन बच्चे तथा प्राणी मोटा-मोटी खाएं और फटा-पुराना पहनें। फलतः ढाई महीनेके बाद नौकरीसे स्तीफा मिल गया। मेरे ऊपर तो मानों

अकस्मात् वज्र आ पड़ा। अब मैं मुहल्लेके दो-चार लड़कोंको पढ़ाने लगा। सात आठ रुपये मिल जाते थे, उनसे एक शाम रूखा-सूखा खाकर कभी अनाहार रह कर कालयापन करने लगे। आखिर सहनशीलताकी भी मर्यादा होती है। मैं कभी कभी स्वयं ही बोल उठता-विनाश हो ऐसी शिक्षाका, झुलस जाय इसकी प्रणाली। मुहल्लेवाले मेरी परिस्थिति जानते थे। मेरी दयनीय दशा देखकर उन्हें बड़ी दया आती थी। वे सब कोई कूली, कोई दर्जी, कोई खोमचेवाला और राज मिस्त्री थे।

एक कहता—भाई, नाम लिखाकर कुलीगिरी ही भरो। अगर भाग्यमें हुआ तो एक दिनमें दोचार मिल जायंगे। दूसरा कहता-अरे यार, खोमचा लेकर ही खड़े हो जाओ, पेट भर खानेको तो निकल आवेगा। तीसरा कहता-चलो मेरे साथ कपड़ा सिलना सिखा दूँ। इसमें अच्छी आमद है। कोई कहता भाई तुम्हारे पढ़ानेकी नौकरीसे तो हमारा पेशा ही अच्छा है। एक न एक मकान बनाते ही रहते हैं। जब चाहो राजगरीके काममें २) दो रुपये रोज कमा लो। मेरे साथ चलो तो आज ही काम दिलवा दूँ। धीरे-धीरे सीख जाओगे।

मैं पढ़ा-लिखा आदमी भला इन कामोंको क्यों करता? नतमस्तक हो मौन हो जाता। अतः दिनपर दिन मेरी जीवन समस्या जटिल होती गई। ऐसा कहकर युवक चुप हो गया।

संन्यासी—एक लम्बी सांस खींचकर, कहो भाई कहो, आगे कहो, मेरा हृदय व्यग्र हो रहा है।

अरुण—देव मैं क्या कहूं, मेरी साध्वी स्त्रीका शरीर पीला पड़ गया। केवल अस्थियोंकी ठठरी शरीररूपमें रह गई। दुःखके प्रचंड झोकेसे मेरे मनमें तरंगोंकी भांति अनेकों भाव आने और जाने लगे। मनुष्यमात्रसे मेरी घृणा हो गई। मैं विचारता कि मनुष्यरूपमें भी इन्हें राक्षस कहना चाहिए। गरीबोंको ही सतानेके लिए मैं पैदा हुआ हूं सहायताके लिए नहीं। दो दिन हो गए थे, एक दाना भी किसीके पेटमें नहीं पड़ा था, बच्चे भूखसे बिलबिला रहे थे।

घरकी प्रत्येक वस्तु, स्त्रीके गहने, बक्स, बर्तन, भाड़ेपर बिककर उदरस्थ हो चुके थे। अब केवल पत्नीके पैरके बिछुए रह गए थे जिसे शायद वह मुझ अभागेकी मंगलकामनाके लिए प्राणोंसे भी अधिक प्रिय समझती थी। आखिर बच्चोंके करुण-क्रन्दनने उसे द्रविभूत कर दिया।

वह मेरे हाथमें बिछुए देकर बोली—जाओ, इसे बेचकर कुछ खानेको ला दो, अब बच्चोंका दुःख नहीं देखा जाता है! अपनेको कोसता और भाग्यको रोता उन्हें वेचकर खानेका कुछ सामान लाया।

जब वह भी समाप्त हुआ तो निरुपाय होकर सोचने लगा। हठात् मनमें एक बात आई और मन मयूरकी भांति प्रसन्नतासे नाच उठा। परंतु यह सोचते ही मन भयसे कंपित हो उठा कि क्या मैं चोरी करूंगा लेकिन मैं तैयार हो गया।

रातके बारह बजे उठा। स्त्रीके क्लांत मुखको अनिमेष दृष्टिसे देख मन ही मन कहा—मेरी प्रिय ! आज तुझे अवश्य फूलोंकी रानी बनाऊंगा। तत्पश्चात् घरसे निकल पड़ा।

वहांसे आया और एक दुकानके पास खड़ा हो लालाइत दृष्टिसे देखने लगा और अंदर प्रवेश होनेका मार्ग सोचने लगा। इतनेमें चौकीदारके शब्दने मुझे चौंका दिया। मेरा साहस भंग हो गया और मैं नैराश्यपूर्ण हृदय लेकर एक गलीमें घुसा। गंगातटपर आकर अपने इस नैराश्य जीवनसे मुक्ति पानेके अर्थ गंगाकी धवल धारामें दरिद्रताकी कलुषित कालिमा अन्तर्हित करनेको उद्यत हो गया। बस एकाएक आंखोंके सामने छोटे२ असहाय बच्चे और स्त्रीका क्षुधित चित्रपट घूम गया, इसके बादका जीवन आपके पास हैं।

युवक—नाथ ! अब दयाकर आप अपना परिचय सुनाइये।

सन्यासी—भाई ! मैं तुमसे अवश्य कहूंगा, अभी समय नहीं हैं, पहले बच्चों और स्त्रीकी सहायता करनी है। उनकी न जाने क्या गति होती होगी।

अरूणने बहुत चाहा कि मैं भी सन्यासीके साथ चलूं। निर्बलताके कारण न जा सका। सन्यासी उसके घर गए, देखा बच्चे रोते-रोते बेदम होकर पेटके बल पडे हैं। अरूणकी स्त्री छोटे बच्चेके मुखमें सूखा स्तन मुखमें दिए अविरत अनुपात कर रही है। कह रही है—हे भाग्य ! मेरा सब कुछ लेकर भी

तुम्हें तृप्ति नही हुई तो मेरे जीवनधनको भी छीन लिया । हाय ! वे कलसे कहां चले गये, अब किसकी आस करूं ? आज मैं फूलोंकी रानी बन गई । सन्यासीने समीप जाकर उसे पुकारा–बहन सध्या मत रो, वे अच्छे हैं मैं तुझे अभी उनके समीप ले चलता हूँ । एकाएक अपने सामने भाईको ऐसे प्रगाढ़ समयमें देखकर संध्याका हृदय बड़े वेगसे उमड़ आया । वह उनके पैरों पर पड़कर अश्रुजलसे पाद प्रक्षालन करने लगी । सलिलने बड़े स्नेहसे उठाकर गले लगाया और धैर्य बन्धाया । बच्चोंकी क्षुधा शांत कर बहनको भी प्रेमसे भोजन कराया । क्षुधा पीड़ित संध्याने आज कितने ही दिनों बाद पूर्ण भोजन किया था । अब उसके मुंहसे शब्द निकलने लगे । -

संध्या—भईया, पांच साल व्यतीत हो गए तुम कहां थे ? मांबाप तो सिधार ही चुके थे । एक भाभी थी उसका भी स्वर्गवास हो गया फिर तुम्हें बांधनेवाला था ही कौन ?

सलिल—बहन, गाड़ी लाता हूं, चलो गंगा तट पर, अरुण हमलोगोंकी बाट देखता होगा । उसीके समक्ष सब बातें होगी । वह मेरा परिचय पानेके लिए भी व्यग्र है ।

संध्या—भईया, ठीक है, वहीं चलिए । सब लोग कुटीके द्वार पर आये । संध्याको देखकर अरुण अतीत स्मृतिसे विह्वल हो गया । वह अपनी निराश्रयाको आश्रय देनेके लिए अपने वक्षस्थलसे चिपकानेके लिए दोनों हाथ फैला कर उठा । इतने पर उसकी दृष्टि सलिल पर पड़ी वह संकुचित होकर कहने लगा–

स्वामी! यदि सरस्वतीकी जिह्वा भी पाऊं तो आपका गुण-गान करनेमें समर्थ न होऊंगा।

सलिल—भाई, इतना आभारी होनेकी आवश्यकता नहीं है। मेरा परिचय सुन लो। मैं संध्याका भाई सलिल हूं, स्त्रीकी मृत्युके पश्चात् गृह-झंझटसे मुझे विरक्ति हो गई थी। उन्हीं दिनों समाचार पत्रोंमें बेकारोंकी दुर्गति और आत्महत्याके बड़े जोर शोरसे समाचार निकल रहे थे। उनकी दशा पढ़कर मेरा हृदय विदीर्ण हो गया। मनमें निश्चय किया कि मैं सेवा कार्य ही करूँगा। इसी धर्मका पालन करूंगा। अपनी संपत्तिकी आयसे जो लगभग तीनसौ रुपये मासिककी बचत है, असहायोंकी सेवा करता हूं, इन पाँच वर्षोंमें तुम्हारे जैसे चालीस मनुष्योंको ऐसी विकट परिस्थितिमेंसे निकालनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

संध्या—भईया, इसीसे आपने यहां निवास स्थान बनाया होगा?

सलिल—हां, प्रथम तो यह शांति स्थान है, दूसरे अधिक नैराश्य होनेपर मृत्युका भी स्थान यही है।

विद्यार्थियोंको कैसी शिक्षा पढ़ाई जाय, यह बात हमारे यहां विचारणीय नहीं है। सबको भेडकी भांति एक ही लाठीसे हांका जाता है। चाहे परिणाम कुछ भी हो। विद्या ऐसी होनी चाहिए जिससे गुण और जीविका दोनों प्राप्त हो। माता-पिता बडे उत्साहसे बच्चोंको अपने कठिन परिश्रमकी कमाईको
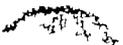
पानीकी भांति व्ययकर बीस-बाईस सालतक शिक्षा देते हैं। कालेजसे वापस आनेपर उन्हें अर्थलाभकी आशासे निराश होना पड़ता है। पाश्चात्य देशोंमें यह बात नहीं है। वहां रोजगारी ढंगसे पढाया जाता है। हमारे यहां तो पढनेके बाद धनोपार्जनके दो ही ढंग रह जाते हैं। एक अध्ययन दूसरा कुर्की। रोजगारकी उपेक्षा होती है। आये दिन तो चोरियां होती हैं वह इसीका दुष्परिणाम है।

यूरोपके सभी विद्यालयोंमें रोजगारीकी शिक्षा दी जाती है। रूस और जापानमें भी शिक्षा और आर्थिक प्रबन्धक संगठन है। वहां बच्चोंकी प्रवृत्ति हर दूसरे-तीसरे वर्ष जांचकर उसीके अनुसार शिक्षा दी जाती है। रूस इस बातके लिए विख्यात है कि वहां बेकारी नहीं है। वहां काम करनेके लिए मजदूर कठिनाईसे मिलते हैं। रूसमें कृषि उन्नतिपर विशेष ध्यान दिया जाता है।

संध्या—भइया ठीक है, बिल्कुल ठीक है। आपने यथार्थ बातकी तहमें प्रवेश किया है। वास्तवमें हमारे देशमें बड़ा रोमांचकारी दृश्य हो रहा है इस बातको व्यतीत हुए आज चार साल हो रहें हैं। अरुणके ग्रेजुएट भावकी मलिनता गंगाकी धारामें पडनेसे ही धुल गई है। उन्होंने सलिलके दिए थोड़ेसे रुपयोंसे टोपी एवं गमछा लेकर फेरी लगाई पुनः छोटीसी दुकान खोल ली। क्रमशः यह बढ़कर बहुत बड़ी दुकान हो गई। कोई ऐसी आवश्यकीय वस्तु नहीं है जो अरुणकी दुकान पर न

मिलती हो। सस्तो मिलनेके कारण नित्य त्योहारोंकी भांति भीड़ लगी रहती है। अब अरुण एक धनी गृहस्थ हो गए हैं। उनके पास अपना घर, मोटर तथा उपभोगकी सामग्री धनियों जैसी हो गई हैं। अरुणने धन कमानेके साथ-साथ सेवाकार्यमें भी (पूर्ण भाग लिया) सलिलके साथ मिलकर बहुतेरे मनुष्योंको आशा बंधाई है।

आज श्रावणकी तीज है। अरुण भोजन कर रहे हैं। समीप ही संध्या बैठी बल-पूर्वक थालीमें एकके बाद दूसरी चीजें दे रही हैं। सहसा अरुणको अपनी वह फूलोंकी रानी बनानेका स्मरण हो आया।

उन्होंने कहा—प्रिय संध्या! फूल मंगवाऊं, फूलोंकी रानी बनोगी!

संध्याने हंसते हुए कहा—प्राणनाथ! संध्याकी शोभा अरुणसे है, फूलोंसे नहीं।

—जयनेमिदेवी।

(८)

विधवाकी बुद्धिमत्ता

रामलाल तथा श्यामलाल दोनों सहोदर भाई थे। इनके पिता बिहारीलालकी गणना अच्छे मनुष्योंमें थी। पटनामें इनका निजका मकान था तथा लाखों रुपये देने-लेनेमें लगे थे, यही इनका व्यवसाय था। इसीसे लालाजीके दिन सुखपूर्वक बीत रहे थे। रुपया बड़ी चीज है और जरूरत बुरी, जिसे रुपया लेना होता (कर्ज) वह दस बार लालाजीकी खुशामद करता, बार-बार उनके घरका चक्कर लगाता, तब कहीं रुपयेके दर्शन होते। उस समय उसे ऐसा मालूम होता मानों दान ही मिल रहा हो, अस्तु यह संसारका नित्यका कार्य है। लालाजीका कार्य भी इसी भांति चला करता था।

कुछ ही दिनों बाद दोनों पुत्र, पुत्रवधू, पौत्र-पौत्रियोंके सामने लालाजी चल बसे। श्यामलालजीकी पत्नीका नाम तारा था। इनके दो पुत्र और तीन पुत्रियां थीं। किन्तु बड़े भाई रामलालको कोई सन्तान न थी। इनकी पत्नी सरलाको हृदयमें सन्तान प्राप्तिकी बड़ी आशा थी। सदैव सोचा करती कि एक कन्या भी भाग्यमें होती। भावीने शायद उसकी मनोवेदनाको सुन लिया।

भाग्यने शायद उसके ऊपर दया दृष्टि फेरी और कुछ ही

दिनों बाद अत्यंत रूपवती कन्याका जन्म हुआ। दरिद्रको जिस प्रकार निधि मिलने पर हर्ष होता है उसी प्रकार कुसुमको पाकर दोनों दंपति प्रफुल्लित हो गये। बड़े यत्नसे कुसुमका लालन–पालन होने लगा। कुसुम भी कुसुमकलीकी भांति दिन-दिन विकसित होने लगी।

माधवप्रसाद शहरके बड़े भारी व्यापारी समझे जाते थे। कई कोठियां चल रही थीं, लाखोंका व्यापार था, किंतु भाग्यने पलटा खाया। कई साल बराबर व्यापारमें घाटा देते देते काम बिगड़ने लगा। बिहारीलालके साथ इनका दिन रातका बैठना–उठना था। आवश्यकता पड़नेपर उन्होंने १५०००) रुपया बिहारीलालसे कर्ज लिया था, तबसे वह रुपया अदा नहीं हुआ था।

जब भाग्य विपरीत होता है तो सभी प्रयत्न निष्फल हो जाते हैं। एक मकान और एक दूकान किसी प्रकार बच गई थी। उसीको लेकर किसी प्रकार मर्यादा बचाए हुए भविष्यपर आशा लगाए बैठे थे। पुत्र केशव पांच सालके लिए विलायत गया। दो साल बाद बैरिष्टरी पास करके आनेकी आशा थी, विपत्ति पड़नेपर माधवचन्द्रके सामने उज्ज्वल भविष्य छायाकी भांति दिख रहा था।

पिताकी मृत्युके बाद दोनों भाईयोंने काम सम्हाला। माधवचंद्रको बुलाकर रामलालने रुपयोंके विषयमें कहा।

उन्होंने बड़े प्रेमसे कहा—बेटा! तुम्हारा रुपया मेरे ऊपर है यह बात मैं भूला नहीं हूं। मेरे ऊपर बड़ा भारी बोझ रखा है किंतु तुम लोग अपने हो, मैं पुत्रकी भांति ही तुम लोगोंको समझता हूं। किसी दूसरेका अब एक पैसा भी नहीं देना है। यदि साल-दो साल और इज्जत बनी रही तो फिर कोई चिंता नहीं है। केशवसे मुझे पूर्ण आशा है।

माधवप्रसादके चले जानेके बाद दोनों भाईयोंमें वाद-विवाद होने लगा। रामलालकी इच्छा थी कि दो साल और देख लिया जाय। केशव पास होकर आ गया तो रुपया अपने आप मिल जायगा। पिताके अंतरंग मित्र हैं। इतने ईमानदार आदमी हैं, इनकी मान मर्यादा क्यों बिगाड़ूं? किंतु श्याम-लालको यह बात पसंद न थी। वह कहते थे कि यदि इस समय घर नीलाम करा लिया जाय तो ठीक है अन्यथा इस बूढेसे रुपया जल्दी वसूल न होगा। हमारा इतना रुपया डूब जायगा। होते-होते आपसका विवाद कलहमें परिणत हो गया। कुछ आदमी रामलालके पास आकर उनके मनकी कहते। कुछ श्यामलालसे श्यामलालके मनकी कहते। लाला दुर्जनलालने हमदर्दी दिखाते हुए कहा—भैया! तुम अभी लड़के हो, मै जमाना देख चुका हूं। उनके तो सिर्फ एक लड़की ही है। समझते हैं कौनसा खर्च है? क्यों अपने सिर अपयश लूं। किन्तु ईश्वरके दिए तुम्हें तो तीन लड़कियोंकी शादी करनी है। आगे दो बच्चे हैं उनकी भी चिन्ता करनी

है। तुम कैसे चुप बैठे रहोगे ? आपसमें निपटारा कर लेना ही अच्छा है।

श्यामलाल कुछ बोले नहीं, पर उनके हृदयपर इन बातोंका बहुत असर पड़ा। संसारमें पैसा ही सब कुछ है। मेरी गृहस्थी भारी है। हां, इसके विषयमें निपटारा ही ठीक होगा नहीं तो पीछे स्त्रीको पछताना ही पड़ेगा। यहीं सब सोचते विचारते रात्रि व्यतीत हो गई। दूसरे दिन सवेरे ही भाईसे बटवांरा करनेका विचार कह सुनाया। रामलालने बहुत समझाया। माधवचन्द्रके ऊपर नालिश कर देते तो शायद बात यहीं रह जाती किन्तु इस बातके लिए बहुत विवाद हो चुका था। बात इतनी बढ गई थी कि उसीको फिर करना उसके वशकी बात नहीं थी। अतः आपसमें दो—चार सज्जनोंको बैठाकर बंटवारा हो गया। उसीके अनुसार रजिस्ट्री भी हो गई। माधवचन्द्रका रुपया रामलालने अपने हिस्सेमें ले लिया। घरमें दो चूल्हे जलने लगे।

माधवचन्द्रने ये सब बातें सुनीं तो दौड़े हुए आए और रामलालसे बोले—बेटा! तुमने यह क्या किया ? जब ऐसी बात आ पड़ी थी तो मैं मकान बेचकर दे देता। मेरे कारण घरमें फूट हो मैं यह नहीं चाहता।

रामलालने कहा—चाचाजी! अब तीर हाथसे निकल गया। जरासी बातके लिए इतना बखेड़ा मचा दिया। रुपया कहीं डूबा तो जाता नहीं था। दो साल बाद ही मिलता तो

क्या नुकसान था। माधवचन्द्रने एक ठंडी सांस ली व लौटे। मालूम होता था जैसे किसी बोझसे दबे जा रहे हो।

समयकी गति कोई नहीं जानता। किस समय वह क्या करेगा इसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। इसी समयके एक पलने देखते-देखते सरलाका सुख छीन लिया।

वैशाखका महीना था। बड़ी कड़ी गर्मी पड़ रही थी। दानापुरके पास किसी ग्राममें रामलाल बारातमें गए हुए थे। दो दिन तो आनन्दसे बीते, तीसरे दिन दोपहरसे इन्हें कै दस्त होने शुरू हो गए, लोगोंने मामूली दवाएं दी। डाक्टरके लिए आदमी दौड़ाए गए, तीन मील पर स्टेशन था। वहांसे दो स्टेशन दानापुर पड़ता था बड़े डाक्टर वहीं मिल सकते थे। जब तक डाक्टर आये रामलालकी हालत बिगड़ चुकी थी। अनेक उपचारका कोई प्रभाव न पड़ा। शायद भाई, स्त्री और कन्याके लिए ही उनके प्राण अटके हुए थे। शामको आठ बजे श्यामलाल, सरला तथा कुसुमको साथ लेकर वहां पहुँचे। रामलालने एकबार आंखें खोल कर सबको देखा, किंतु कुछ कहनेके पहले ही आत्माराम उड़ गए। सरलाकी दुनियां वीरान हो गई। अन्त्येष्टि क्रियाके बाद सब लोग घर आ गये।

ज्यों ज्यों दिन बीतने लगे श्यामलालके हृदयमें लोभकी ज्वाला दहकने लगी। वे मन ही मन सोचते कि व्यर्थमें जरासी बातके लिए हिस्सा कराया, अन्यथा सब अपना ही था। फिर

भी भावजको किसी तरह फुसलाकर सब धन किसी तरह हस्तगत करना ही होगा। कहीं सब लड़कीको दे दिया अन्यथा दान पुण्य कर दिया तो सब चला जायगा। श्यामलालने सोचा कि यदि रतनको ले ले (गोद) तो अच्छा होगा। अस्तु भावजकी हर तरह खातिरें होने लगी। सारे बच्चे उन्हें घेरे रहते। रतन कोई चीज मांगता तो सरलाको सुनाकर कहते—जाओ सब ताईसे मांगो, अब तुम उसीके हो इत्यादि।

सरलाका घाव अभी नया था अतः वेदना अधिक थी। उसे रुपये पैसेकी सुध नहीं थी। और कागज पत्रोंकी भी सुध न थी। श्यामलालने धीरे-धीरे दो-एक बार छेड़ा भी। सरलाके आंसू बीचहीमें विघ्न डाल देते, बस अधूरी रह जाती। धीरे२ समयके मरहमने सरलाके घाव भर दिये। व्यथा कम हो गई उसने अपनी परिस्थितिको समझा। सरला कुछ लिखना-पढ़न जानती थी (उसने कुसुमके मुखकी ओर देखा) अतः काग पत्र देखने लगी।

माधवचंद्रके कागजकी मियाद बीत रही थी उन्हों सोचा चलकर बदल आवें किन्तु फिर न जाने क्या सोचव वहां न गए। इधर कोई देखनेवाला न था। एक दि श्यामलाल सरलाके पास बैठे कागजोंको देख रहे थे तो दे कि माधवचंद्रके कागजकी मियाद खत्म हो गई है।

वे बड़े गुस्सेसे बोले—देखो भावी! सब रुपया

गया न ? मैं तो पहले ही समझता था कि उस बूढ़ेको देनेकी मंशा नहीं है।

दूसरे दिन एक सादा कागज लाकर बोले—भावी ! इस पर दस्तखत कर दो तो मै उनसे किसी तरह रुपया वसूल करूं।

सरलाने कुछ सोचकर कहा—लालाजी ! जो कुछ लिखना हो लिखवा लीजिए। मैं देखकर तब दस्तखत करूंगी। यह उत्तर सुनकर श्यामलाल कुछ झेंपते हुए चले गए। सरलाको धोखा देना उन्हें सरल न जान पड़ा, उन्होंने अब दूसरे ही उपायका अवलम्बन करना ठीक समझा।

इन दिनों दुर्जनसिंहकी बन आई थी, जो काम होता सब इन्हींके परामर्शसे होता था। कोई भी दुष्कर्म इनके लिए नया न था। अतः इनकी कृपासे कार्य सिद्धि होते देर न लगी, श्यामलालके पुत्र रतनलालको दत्तक पुत्र मानकर सभी संपत्ति उसके नाम लिखी गई थी और जीते-जिन्दगी ही सारा अधिकार उसे सौंप दिया गया था, इसी आशयका दानपत्र तैयार हुआ। सरलाके दस्तखतकी नकल बडी कुशलतासे हो गई। दुर्जनलाल इत्यादि कई गवाहोंके दस्तखत भी हो गए। इनके लिए श्यामलालको अपनी गांठसे बहुत कुछ खर्च करना पडा था। श्यामलालको मानों आसमानका चांद ही मिल गया हो।

श्यामलालको इस समय रतनलालके पढ़ने लिखनेकी तरफ ध्यान रखनेकी चिन्ता न थी। वह तो इस समय उर्ध-

सिद्धिमें पुत्रको ही प्रधान समझकर उसके ऊपर निछावर हो रहे थे। फलतः स्वतन्त्रताने अपना काम करना शुरू किया और रतन कुव्यसनोंका शिकार होने लगा।

रात्रिका समय था, सब लोग ऊपर गंभीर निद्रामें सो रहे थे। नीचे चोर अपना काम कर रहे थे। सरलाका सर्वस्व अपहरण हो रहा था। सवेरे जब सरला सोकर उठी तो नीचेका दृश्य देख अवाक् रह गई। तिजोरी खुली पड़ी थी, कागज सब बिखरे पड़े थे। रुपया और जेवर एक भी न बचा था। पीछेकी दीवालमें चोर सेन मारकर सब माल उठा ले गये थे। उसने श्यामलालको पुकारा। वे आंखें मलते-मलते नीचे आये। घरके नौकर चाकर सभी इकट्ठे हुये। सब पर डांट-फटकार पड़ी पर कोई फल न निकला। रिपोर्ट लिखाई गई और मामला पुलिसके हवाले किया गया। महीनों बीत गये न चोर पकड़ा गया और न चोरीका माल ही बरबाद हुआ।

सरला चतुर बुद्धि श्यामलालके भावोंको बराबर लक्ष कर रही थी। उन्हें चोरी जानेका कुछ हार्दिक रंज मालूम न होता था। तथा अब उनकी चापलूसीकी बातें भी न होती थीं। सरलाने अब इस घरमें रहना उचित न समझा। अतः इसी अवसरपर उसने दूसरे मकानमें जानेका विचार प्रकट किया। उसने सोचा कि जितना बचा है उतना ही मेरे लिए काफी है। अब श्यामलालको भी भावजकी आवश्यकता न थी। अतः उन्होंने भी विशेष आपत्ति न की। सरला कुसुमको लेकर

माधवचन्द्रके पड़ोसमें ही एक अपना मकान था उसमें चली गई ।

केशवचन्द्र विलायतसे बैरिस्ट्री पास कर आ गये । जिस सम्मानसे गये थे उससे दूने सम्मान और उपाधिके साथ आये । जिस फूलमें सुगन्ध होती है उसमें भौरोंकी क्या कमी ? जिस माधवचन्द्रको पैसा हाथसे निकलते ही लोगोंने हृदयोंसे भी निकाल दिया था वही फिर ऐश्वर्य आगमनकी आशा दीखते ही प्रतिष्ठित होने लगे । केशवचन्द्रसे बहुतोंके स्वार्थ सधेंगे । अस्तु, यदि समाजने उनका स्वागत धूमधामसे किया तो ठीक ही है ; केशवकी बैरिष्टरी चमक रही थी ।

आज रविवार है, हाईकोर्ट बन्द है केशवचन्द्र घरमें ही बैठे हुए थे । भीतर दो दासियोंने आकर सरलाके आनेका समाचार कहा । माधवचन्द्र तथा केशवचन्द्र उठ कर भीतर गये ।

सरलाने बड़ी कठिनतासे अपने हृदयके आवेग और आंखोंके आंसुओंको रोक कर कहा—चाचाजी ! मैं इस समय बड़ी विपत्तिमें पड गई हूँ इससे मेरा उद्धार करिए, आपका उपकार जन्मभर न भूलूंगी । माधवचन्द्रकी आंखोंसे रामलालको यादकर आंसू निकल पड़े ।

फिर शान्त हो उन्होंने कहा—बेटी ! तुम्हे दुःख करनेकी क्या आवश्यकता है ? रामलालके ऋणसे मैं कभी अऋण नहीं हो सकता । उन्होंने मेरी मान मर्यादा बचाई है । तुम्हारा

२५०००) पच्चीस हजार मेरे पास सुरक्षित रखा हुआ है उसे तुम ले लो । और जो मेरे करने लायक होगा उठा न रखूंगा ।

सरलाने कहा—कल रतनलालजी तरफसे वालिग होनेकी और मेरी जायदाद पर नाम चढ़ानेकी दरखास्त दी गई है । और मैंने उसे दत्तक पुत्र बनाकर सबको दानपत्र लिख दिया है, यह भी कहा गया है । देखिए मैं उसकी नकल लाई हूँ । मैंने तो कभी कोई दानपत्र नहीं लिखा और न गोद लेनेकी ही कभी कोई चर्चा चली है । जाने कैसे मेरा नाम लेकर सब कर रहे हैं ?

माधवचंद्रको समझते देर न लगी । उन्होंने केशवचंद्रसे कहा—बेटा ! रामलालका एक पैसा भी जाने न पावे, इसका तुझे भार सौंपता हूं । सरला निश्चिन्त हो घर चली गई । रतनलालकी दरख्वास्तका जवाब इधरसे भी दिया गया । इस पर श्यामलालने सरलाका दस्तखत किया हुआ दानपत्र पेश किया । बड़े-बड़े वकील खड़े किए । सरलाकी तरफसे बैरिस्टर केशवचंद्र पैरवी करनेके लिए खड़े हुए ।

शहरमें खलबली मच गई । केशवचन्द्रकी बराबरीका कोई भी न था । श्यामलालने सुना तो बड़े घबड़ाये । गवाहोंके बयान हुए, सब काम हो चुका था । अंतमें दान पत्र पेश हुआ । केशवचन्द्रने कहा कि यह जाली है इसका प्रमाण पत्र मैं आपको दूंगा । उन्होंने एक यन्त्र निकाला, उसपर सरलाके

कई दस्तखत रखे। यन्त्रके द्वारा प्रत्येक अक्षरोंकी बारीकियां प्रकट होने लगीं। जज साहब बड़ी उत्सुकतासे यह सब देख रहे थे। अन्तमें वह दानपत्र भी यन्त्रमें रखा गया। अब उनका अन्तर साफ दिखाई देने लगा। जज साहबके चेहरेपर हलकी मुस्कराहट दौड गई। गवाहोंके दस्तखत भी उस यंत्रमें रखे गये। दुर्जनसिंहके अक्षरसे मिलान हो गया। यद्यपि देखनेमें दोनों अक्षरोंमें जमीन–आसमानका फर्क था किन्तु परीक्षाकी कसौटीपर रखते ही मुलम्मेंके अन्दरका पीतल निकल आया। जजने फैसला सुना दिया। इस पापके प्रणेता श्यामलाल ही यह थे यह भलिभांति साबित हो चुका था। अतः उन्हें तथा दुर्जनसिंह इत्यादि चारों गवाहोंको न्यायानुसार दंड मिला। रतनलालका कोई कसूर नही था अतः वह छोड़ दिया गया।

इस समय रतनलालकी पांचों उंगली घीमें थीं। बहुतसा रुपया इस जालसाजीमें तथा मुकदमेंमें खर्च हो चुका था। जो बाकी था उसे भी रतनलाल उड़ाने लगे। सब गुण पहलेसे ही थे, केवल रुपयोंकी कमी थी वह भी अब पूरी हो गई। श्याम-लालका रुपया पानीकी भांति वेश्यालयों व मदिरालयोंमें बहने लगा।

कुसुमकी अवस्था विवाहके योग्य हो गई थी। अतः राय विमलचन्द्रके पुत्र निर्मलचन्द्रके साथ उसका विवाह हो गया। निर्मलचन्द्र केशवचन्द्रके गुण–रूपमें कुसुमके योग्य थे। अतः

केशवचन्द्र ही इस विवाहके प्रमुख थे। उन्हींके प्रयत्नसे यह संबंध सफल हुआ था।

सरलाने इन झंझटोंसे छुट्टी पाकर अपना दान पत्र लिखा उसमें अपने धनका आधा भाग कुसुमको और आधा दानमें निकाला। दान द्रव्यके प्रबंधका भार केशवचन्द्रको दिया। उनके सुप्रबन्धमें "विधवा सहायक संस्था" सुचारू रूपसे चलने लगी। सरला अपने समयका अधिक भाग उसके उदासीन मन्दिरमें धर्म चर्चा करती हुई बिताने लगी।

—श्रीमती सुशीलादेवी, प्रयाग

(८)

मिथ्यात्वका फल

पिताके स्वर्गवासके पश्चात् रामेश्वर घरके उत्तराधिकारी हुए। उनकी स्त्रीका नाम विमलादेवी था। शुभोदयसे भोगोपभोगकी सारी सामग्री प्राप्त थी, किन्तु दंपतिका सभी प्रकारका सुख संतानके बिना फीका था। पैसेकी तो कमी थी ही नहीं, इनके घर अहर्निश देवी, देवता, साधु, और पैगम्बर, मठ तथा मस्जिदकी पूजा और भूतप्रेत ओझा, भभूत इत्यादि कार्य होते रहते थे।

थोड़े दिनोंमें भाग्यने सहारा दिया। विमलादेवीको तीस सालकी अवस्थामें गर्भ हुआ। अब तो क्या ठिकाना हुआ, मिन्नतोंकी झड़ी लग गई। कहींके गंडे कहींके तावीजसे विमलादेवी अपनेको सुरक्षित रखनेका प्रयत्न करने लगी। अतः जिस तिस प्रकार दिन पूरे हुए। कन्या उत्पन्न हुई। सबको पुत्रके समान प्रसन्नता हुई। हो भी क्यों न, देवताओंने आंचल तो खोला। बच्चा होते ही सूपमें रखकर दाईके हाथ बेचा गया, नाक छेद कर बुलाक पहना दी गई। जीनेके लिए 'घसीटा' नाम रखा गया। माता-पिता अपनी एक-मात्र कन्याके लालन पालनमें बड़ी सावधानी रखते थे। घसीटा ज़रा रोती तो झट राई नोन करके चूल्हेमें डाला जाता। जरा-सा ज्वर चढ़ा

कि जन्मपत्री दिखाई गई। गृहशान्ति, होम, जप और पाठ होता। दुर्गापाठ बैठता, गंगाजीको आर-पार माला चढ़ानेकी मनौती मानी जाती।

तात्पर्य यह है कि माता-पिताने टोनाटोटका जादू मंत्र जो कुछ भी हो सका उठा न रखा। अस्तु, वह सयानी हुई। चौदहवां साल लग गया। योग्य घर वर न मिलनेसे सगाई न हो सकी। उसी समय पड़ोसमें एक बहुत बड़े जमींदार राधाचरणके लड़केकी बहूका देहान्त हो गया। लड़का अठारह सालका ही था। विवाहको अभी मुश्किलसे चार ही महीने हुए थे कि हैजाके प्रकोपसे पुनः लड़का क्वारा हो गया। रामेश्वरजीको अपनी लड़कीके लिए यह अच्छा सम्बन्ध जंचा। यद्यपि विमलाका मन इतना प्रसन्न नहीं था तथापि विवशतासे सम्बन्ध करना ही पड़ा।

प्रारब्धकी बात है, साल दो साल करते करते विवाहको दस साल हो गए। परन्तु अभी तक घसीटाको सन्तान न हुई। उसकी माता उसे सदैव कहा करती कि तुझे तेरी सौतके कारण बच्चा नहीं होता। चुडैल बनकर कोख पर ही बैठ गई। हजारों रुपये भी खर्च किए, बाहरका होता तो अबतक कभीका भाग गया होता, घरका भूत किधर जावे। माताके उपदेशसे और आजन्मके दृढ़ संस्कारसे घसीटादेवी मां की चौगुनी मिथ्यात्व भक्त हो रही थी। महेशचन्द्र भी पुत्र कामना व

स्त्रीके प्रेमसे शिक्षित होते भी इन पाखण्डोंमें भाग लिया करते थे जिससे श्रद्धा भी हो गई ।

श्रावणका महीना था । घसीटाकी एक सहेलीने आकर कहा कि बहन, गोपाल-मन्दिरमें एक ऐसे सिद्ध योगी आए हैं जो सबकी कामना पूर्ण करते हैं । घसीटा उसके पैरों पर गिर गई और बोली—श्यामा, मुझे इस महात्माके दर्शन करा दो, तुम जानती तो हो कि गोद सूनी रहनेका मुझे कितना दुःख है ।

श्यामा—बहन ! यह कहनेकी बात है ? मैं तो तुम्हारा दुःख देखकर स्वयं दुःखी हूं तभी तो कहने आई हूं । चलने लगी तो भइयाको भी साथ ले लेना । उनकी भी आवश्यकता होगी ।

घसीटा—हां, हां, उन्हें अभी कहती हूं वे भी साथ चलेंगे । बहन, वे तो किसी बातमें कसर नहीं उठा रखते ।

परन्तु, वह रांड हटे तब तो । खैर, आज उस योगीके दर्शनसे जरूर कार्य सिद्धि होगी ।

श्यामा आठ बजे रातमें आनेका वचन देकर चली गई ।

घसीटाने पतिसे सब समाचार कहा । वे भी प्रसन्न हुए ।

श्यामा आई । दोनों उसके साथ गोपालमंदिरमें गए जहां एक कोठरीमें एक योगी जटा बढ़ाए, भभूत लगाए, मृग छाला पर आंख बन्द कर बैठे थे । आस-पासमें दर्शकोंके झुन्ड

खड़े थे। सामने रुपये-पैसोंका ढ़ेर लगा था, सभी लोग हाथ जोड़ रहे थे। थोड़ी देरमें बाबाने आँखें खोलीं, दर्शकगण पुलकित हो गए। प्रथम तो महात्माने रुपयोंपर लात मारते हुए कहा कि यह किसने मेरा अपमान किया है ? जिसका जो है उठा लो, अन्यथा मैं अन्यत्र चला जाऊंगा। बाबाकी इस बातसे तो सबके मनका रहा-सहा भ्रम भी मिट गया। रुपये पैसेकी समाप्तिके पश्चात् योगीने कहा अब सब लोग बाहर चले जाओ। एक-एक कर मेरे पास आना, भगवान्‌ने चाहा तो सबके मनोरथ पूर्ण होंगे। सब लोग चले गए। क्रमशः एक-एक मनुष्य महात्माजीकी कोठरीमें आते और प्रसन्न मुद्रामें चले जाते।

अब घसीटादेवीकी बारी आई। वह गुरुजीके सामने हाथ जोड़कर बैठ गई।

गुरुजी—बेटी, तू पुत्रकी कामना रखती है ?

घसीटा—ठीक है बाबा।

गुरुजी—तेरे माता-पिताकी तू ही एक सन्तान है ?

घसीटा—हां महाराज।

गुरुजी—तेरे विवाहको दस साल हुए, बता ठीक है ?

घसीटा—योगीराज! आप तो त्रिकाल दर्शी हैं, स्वयं सब कुछ जानते हैं। मुझे अब पुत्रवती बनाइये, यही मेरी याचना है।

गुरुजी—अच्छा सुन, जो मैं कहता हूँ यह बात किसी औरसे न कहना। यहांतक कि पतिसे भी न कहना।

घसीटा—ऐसा ही होगा महाराज।

गुरुजी—तेरे मकानके पीछे बायीं ओर एक आला है उसमें चुडैलका निवास है जो तेरी सौत थी। जब तेरा पति सो जावे तब तू चुपकेसे चार बजे प्रातःकालमें उसकी चोटीके बाल काटकर उस आलेपर रख देना। इससे तुम्हारी सौत प्रसन्न होकर तेरी उस कोखपरसे हट जायगी। बाबाको प्रणाम कर घसीटा चली गई। फिर महेशचन्द्रजी आये। योगीने उनकी अगली-पिछली सब बातें बताकर अब उनके हृदयपर अपना पूर्ण विश्वास जमा लिया तो महेशचन्द्रकी पुत्रयाचना पर बोले—बेटा! तुझे तो कभीका पुत्र हुआ होता पर तेरी स्त्री इसमें घातक है। रातको उसके ऊपर रोज चुडैल आती है उसीकी बहन तेरी स्त्रीकी मांके पास भी जाती है। जब ये दोनों बहनें मां-बेटीपरसे हट जायगी तो संतानकी प्राप्ति हो जायगी।

महेशचन्द्र—महाराज! आप सर्व ज्ञाता हैं दूर करनेका उपाय आप ही बतावें।

योगी—बचा! बताता तो हूँ पर ध्यान रहे अपनी पत्नीसे भी प्रकट न करना।

महेशचन्द्र—ऐसा ही होगा योगीराज।

योगी—जब वह चुडैल आती है तो तेरी स्त्री परसे जानेके समय चार बजे भोरमें तेरी चोटीके बाल काटकर ले जाती है। ज्यों ही वह जानेके लिए दरवाजा पार करे तू जामुनकी छड़ीसे खूब पीटना। यदि वह चुडैल होगी तो खूब चिल्लाना शुरू करेगी। तुम उसके अधिक चिल्लाने पर और पीटना। यदि भूल करोगे तो वह तुम्हारे ऊपर आ जायगी। उसकी आवाज जब उसकी बहनके कानमें पड़ेगी तो देखना वह भी दौड़ी आवेगी। उसे देखते ही उसी छड़ीसे उसकी भी खूब मरम्मत करना। देखना इसमें जरा भी लिहाज न करना। उस समय वह तुम्हारी सास तो रहेगी नहीं, उस पर तो चुडैल रहेगी, उसीको मार पड़ेगी। इसके भागनेकी पहचान यही है कि उसके जाते बदन हल्का होनेसे दोनों गिरकर मूर्छित हो जायेंगी।

महेशचन्द्र पुत्रप्राप्तिका स्वप्न देखते प्रसन्नमुद्रामें बाहर आये। अस्तु, रात्रि हुई। जब चार बजनेका समय आया तो योगीराजके कहे अनुसार घसीटादेवीने कैंची निकाल कर पतिकी चोटीके बाल काटे और आलेमें रखनेके लिए बाहर चली। इधर महेशचन्द्र पहले हीसे घड़ी गिन रहे थे, झट जामुनकी लकड़ी उठा उसके पीछे दौड़े।

योगीकी बातोंमें तो अब किंचित् भी सन्देह रहा ही नहीं। पीछेसे चोटी पकड़कर लकडीसे पीटना शुरू किया।

जितना ही वह चिल्लाती उतनी ही अधिक मार पड़ती। कहते-रांड तेरे ही कारण हम इतने दिनोंसे सन्तानहीन हैं। हल्ला गुल्ला सुनकर मुहल्लेवाले इकट्ठे हो गए, पर महेशचन्द्रका उग्र रूप देखकर किसीको कुछ पूछनेका साहस नहीं हुआ। होते-हवाते घसीटाकी मांने भी यह खबर सुनी।

अकस्मात् अपने सुशील जमाईका ऐसा दुर्व्यवहार सुनकर उसे विश्वास न हुआ, वह स्वयं उसके घर गई। महेशचन्द्रने सासको देखते ही अपनी लाठी उसपर घुमाई और लगे पीटने। थोड़ी देर बाद वही योगीराज अपने शिष्योंके साथ इनके आंगनमें दिखाई पड़े। योगीराजने आँखके इशारेसे महेशको मना करते हुए कहा—बच्चा अब बस कर, तेरा कार्य सिद्ध हो गया। जब महेशचन्द्रने मारना बन्द कर दिया तो योगीने अपनी जटा और दाढ़ी मूंछ ऊपरसे लपेटा हुआ गेरूआ वस्त्र अलग कर दिया।

महेशचन्द्र तथा अन्य लोग इस लीलाको देखकर अवाक् रह गये। किसीकी समझमें कुछ नहीं आया। क्योंकि योगी वेशधारी तो श्यामाकी बहन रामा निकल गई। महेशचन्द्र तो लज्जासे गड़ गये और घसीटा उठकर रामाके समीप कहने लगी—बहन! ऐसी हंसी किस कामकी जिससे आदमी मर जाय।

रामा—बहन! यह हंसी नहीं वरन् उपदेश है। तुम्हारा

अन्ध विश्वासपर रुपया बहाना तथा अपने-आपको झूठे लम्पटी साधुओंके जालमें फंसाना रोकनेका हम कितने दिनोंसे प्रयत्न सोच रही थीं। आज सफलता मिली है। अब चलो सब मिलकर श्रीमन्दिरमें मिथ्यात्वका त्याग करें। नसीहत मिलने पर घसीटा और उसकी माताका मिथ्यात्वका भूत उतर चुका था। सबने प्रसन्न मुखसे श्रीमन्दिरमें जाकर मिथ्यात्वका त्याग किया और इतने दिनोंतक किये गये अपने अज्ञानपूर्ण कार्यपर पश्चात्ताप किया। श्यामा तथा रामाको इस सत्कार्यके लिए सबने धन्यवाद दिया।

— जयनेमीदेवी, आरा।

(१)

सत्यवादी-चोर

प्राचीन समयमें उज्जैन नगरके एक निकटवर्ती वनमें एक महाऋषि पधारे। उनकी प्रशंसा सुन करके सभी जन दर्शनार्थ पधारे। उन सबको ऋषिराजने धर्मोपदेश कर, अनेकोंको गृहस्थ-धर्म व अनेकोंको सन्यास-धर्म ग्रहण कराया। किसीने हिंसा, झूठ, चोरी आदिसे बचे रहनेकी प्रतिज्ञा की, किसीने सप्तव्यसन व मद्य मांसादिकका त्याग किया। जब सब लोग धर्मोपदेश सुनकर यथोचित त्याग ग्रहण करके चले गये, तब एक चोर भी उन महर्षिके निकट आ हाथ जोड़ नमस्कार करके कहने लगा कि महाराज! मुझे भी कोई उपदेश दीजिए व कोई प्रतिज्ञा दीजिए जिससे मेरा कल्याण हो। मुनिमहाराजने पूछा तू कौन है? तेरी आजीविका (धंधा) क्या है? चोरने नम्रता पूर्वक उत्तर दिया-मैं चोर हूं और चोरी करना ही मेरा धंधा है। तब मुनिने कहा-तुम चोरी करना तो छोड़ नहीं सकते अतः झूठ बोलनेका त्याग कर दो। चोरने कहा-महाराज जो भी हो मैं आजसे झूठ नहीं बोलूंगा। ऐसी प्रतिज्ञा कर मुनिमहाराजको नमस्कार कर वह चला गया।

कुछ आगे बढ़ा तो किसीने पूछा-तू कौन है? झट उत्तर दे दिया-मैं चोर हूं। पूछनेवालोंने समझा कि यहांका कोई आदमी है। ठट्ठा करता है इस कारण किसीने भी शक नहीं

किया। जब घुड़शालमें पहुंच कर एक लाल घोड़ेको खोलने लगा तो फिर किसीने पूछा—कौन है ? चोरने फिर वही उत्तर दिया कि मैं चोर हूं। उसने कहा तू क्या करता है ?

चोरने कहा—घोड़ा चुरा कर ले जाता हूं।

पूछनेवालोंने समझा कि सहीस होगा। चोर घोड़े पर चढ़ कर चला तो दरवाजे पर और रास्तेमें कई लोगोंने पूछा—तू कौन है ? इसके उत्तरमें फिर उसने कहा कि मैं चोर हूं ! इसी तरह शहरमें कईयोंने पूछा, पर किसीको सन्देह नहीं हुआ कि यह सचमुच चोर ही है।

चोरने उस घोड़ेको निर्जन बनमें ले जाकर छुपा दिया। खुद रास्ते पर वड़के वृक्षके नीचे सो गया। इधर थोडी देर बाद सहीसने देखा कि घोड़ा नहीं है इधर-उधर पूछ-ताछ करने पर पता चला कि वह तो वास्तवमें चोर था और वही घोड़ेको चुरा कर ले गया है। तब उसी समय कई घुड़सवार उसकी खोजमें निकले तो वह चोर बड़के नीचे सोया मिला। उसको जगा कर राजपुरुषोंने पूछा—ओ उठ, तू कौन है ?

चोर—हड़बड़ा कर उठा और बोला—मैं चोर हूं।

राजपुरुष—तूने क्या चोरी की है ?

चोर—आज एक घोड़ा चुराया है।

राजपुरुष—किसका चुराया है ?

चोर—यहांके राजाका।

राजपुरुष—घोडेका रंग कैसा था ?

चोर—लाल था।

राज०—वह घोडा अब कहाँ है ?

चोर—यहांसे दक्षिण एक मीलपर एक आमके वृक्षसे वह घोडा बन्धा है।

यह सुनकर कई व्यक्ति दौड़े और घोडा खोलकर ले आये, परन्तु उसको देख सभीको आश्चर्य होने लगा क्योंकि उस घोडेका रंग नीला था।

राजपुरुषोंने कहा—तू तो इसे लाल रंगका बताता था, यह तो नीला है।

चोरने कहा—महाराज, मैंने झूठ बोलना छोड़ दिया है। मैं सच कहता हूं कि मैं लाल घोडा लाया था। इतने हीमें चोरपर फूलोंकी वर्षा होने लगी और आकाशसे देववाणी हुई—

बेशक तू सच्चा। धन्य है तेरे सत्यव्रतकी महिमाको। जो तुमने अपने ऊपर महाविपत् आनेपर भी रंचमात्र असत्य भाषण नहीं किया। घोडेका रंग तो हमने पलट दिया है। इस प्रकार आकाशवाणी सुनकर राजपुरुष चोरको राजाके पास ले गये और देववाणीका वृत्तांत सुनाया। राजाने उसके सत्यव्रत पर प्रसन्न हो अपराध माफ कर दिया और हजारों रुपयोंका धन दिया।

चोरने कहा—महाराज ! आपने यह सब इनाम दिया पर मैं ग्रहण नहीं कर सकता। क्योंकि जिस व्रतके प्रभावसे एक ही दिनमें ऐसा ऐश्वर्य मिला तो सबसे पहले उस मुनिके पास जाकर और भी कोई व्रत ग्रहण करूंगा फिर वे जो आज्ञा देंगे वही करूंगा।

इस प्रकार वह मुनि महाराजके पास गया व उनके धर्मोपदेशसे हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील व परिग्रह इन पांचों पापोंको सर्वथा छोड़कर उनका शिष्य हो गया। और महान तपस्या कर स्वर्गको गया। इसी प्रकार हम सबको भी चाहिए कि ली हुई प्रतिज्ञाको विपत्ति आनेपर भी पूर्णरूपसे पालन कर धर्म व पुण्यबंधका लाभ उठावें।

— अनारकलीदेवी जैन, रोहतक।

(१०)

मदना

सुरेश—क्यों सुन्दरलाल, महेशबाबू कहां हैं ? आइये साहब वैठिये, महेशबाबू सोये हुये हैं मैं उनको अभी जगा देता हूं । अच्छा जाओ उनको जगाकर कह दो कि सुरेशबाबू आये हैं और आपका रास्ता देख रहे हैं ।

थोड़ी देरके बाद महेशबाबू आते हैं ।

महेश—कहिए मिस्टर सुरेश अच्छे तो हो और कितनी देर हुई आपको यहां आये ?

सुरेश—बाबूजी ! मेरेको अभी थोड़ा समय हुआ है और यों ही आपसे मिलनेके लिये चला आया हूँ । मैंने विचार किया कि आज आपके साथ समुद्रकी तरफ घूमने जायेंगे, कहिए चलेंगे न ?

महेश—कुछ देर ठहर कर । अच्छा चलो चलें ।

सुरेश—चलिए भूलेश्वरपरसे होते हुये चौपाटी आकर घरको सीधे वापस चले जावेंगे ।

दोनों बाबूसाहब घूमने जारहे थे कि पीछेसे सुंदरलाल दौड़ता हुआ आया और पुकार कर कहने लगा कि बाबूसाहब, आपका पत्र लेकर पोस्टमैन आया था । आपके न होनेसे उसने मुझे दे

दिया । बाबूसाहबने पत्र लेकर पढ़ा । पढ़ते ही उनका दिमाग घूमने लगा । बड़ी मुश्किलसे संभल कर बोले कि इतने दिनोंसे जिस बातके लिए डर रहा था वही सामने आई ।

सुरेश—क्यों बाबूजी, कहांका पत्र है और क्या बात है ? क्यों इतना घबराते हैं, क्या कोई अनहोनी हो गई ?

महेश—नहीं छोटे भाईका पत्र आया है ।

सुरेश—आपके छोटे भाई वो तो नहीं जो बनारस युनिर्सिटीमें पढ़ते हैं बी. ए. में ।

महेश—हां उसीका पत्र है लो पढ़ो न ।

कटरा बाजार बनारस,

सुबह ७॥ बजे, १ जनवरी, सन् '३२

प्रिय भ्राता, आपका पत्र नहीं आया सो देना। और आजकल मेरी बी० ए० की परीक्षाका समय निकट आ रहा है। पढ़ाई जोरोंसे शुरू है। अतः पत्र लिखनेमें देर हुई। क्षमा कीजिएगा। कई दिनोंसे मैं यहां बहुत उलझनमें पड़ा हूं क्योंकि काका साहबका रुख कुछ बदलासा दिखाई देता है। पहले तो कुछ बात-चीत भी किया करते थे अब तो हमारी ओर नजर उठाकर भी नहीं देखते। लोगोंकी जबानी सुना है कि आपके काका साहब ५०–६० वर्षके होते हुए भी अपनी शादी पक्की कर चुके हैं, और ४०००) रुपयोंमें लड़कीका ठहराव ठीक हुआ है। आप लोग इसके रोकनेकी कोशिश करें और उनको समझावें

कि इस उम्रमें शादी न करें, इसलिये आपको मैंने यह पत्र दिया है, अब आपका क्या विचार है सो लिखिए।

आपका शुभ चिन्तक भाई—
इन्दर।

महेश—मेरा क्या विचार है इसके लिए अब जातिकी शरण लेनी पडेगी और बिना इसकी शरण गये यह काम नहीं रुक सकता। अब सुरेशबाबू आप अपना विचार प्रकट कीजिए कि क्या किया जा सकता है ?

सुरेश—बाबू साहब! इसमें मैं क्या सलाह दे सकता हूँ। मेरी अब अक्ल कुछ काम नहीं देती।

महेश—मिस्टर सुरेश! इन बातोंसे क़ाम न चलेगा। इसमें सलाह अपनी देनी ही पड़ेगी।

सुरेश—बाबू साहब, मेरी कहनेकी हिम्मत नहीं पड़ती क्योंकि आजकल नवयुवक लोग समाजमें कड़ी नजरसे देखे जाते हैं। अच्छा सुनिए—आप यह तो जानते ही हैं कि वृद्ध-विवाह बहुत ज्यादा तादादमें हो रहे हैं।

पचास सालके बूढ़े धनिक रुपया देकर एक १० वर्षक बालिकाके साथ शादी करनेमें नहीं शरमाते थे। दिल खोलकर शादी करनेको तैयार हो जाते हैं तथा जब शादी रोकनेका वक्त आता है तब उनकी थैलीके सामने किसीकी एक नहीं चलती। और शादी हो जाती है। खैर जाने दीजिये। जब वक्त आवेगा तो देख जायेगा। इस तरह बात-चीत होते

होते दोनों महाशय घर आ पहुँचे और चिन्ताके अनन्तसागरमें गोता लगाने लगे ।

सेठ किशनचन्द बनारसके एक धनिक व्यापारी हैं । आप महेशबाबूके काका हैं । आपने अपना विवाह साठ वर्षकी उम्रमें कर लिया । विवाह किसीके रोके न रुक सका । उनकी नव-विवाहिता स्त्रीका नाम मदना है । मदनाकी अवस्था इस समय ग्यारह वर्षकी है । उसे किसी तरहका ज्ञान नहीं है । वह निरी बालिका है ।

जेठ वैशाखकी गर्मीका महीना है । लू चलनेसे मृगजल जहां तहां नजर आता है । ऐसा मालूम होता है कि किसी प्यासेको बड़े प्रेमसे उसकी ओर बड़े पिपासा शांत करनेको वेगसे दौड़ा चला जाता है । पसीनेपर पसीना निकल रहा है । मनुष्य क्या पशु-पक्षी सभी गर्मीसे घबरा रहे हैं । ऐसा मालूम होता कि सूर्य नारायणने यह प्रण किया है कि सारे गगन स्थलको जला कर खाक कर दे । लोगोंकी हिम्मत घरसे बाहर निकलनेकी नहीं होती । ऐसेमें सेठ किशनचन्द जल्दी२ पैर बढ़ाये महलकी ओर चले जा रहे हैं ।

उनकी तबियत मारे गर्मीके अकुला रही है । वे चाहते हैं कि जल्दीसे जल्दी महलमें पहुँचे । जैसे-तैसे पहुंचे । अन्दर पहुँचते ही उनको चक्कर आया और बेहोश हो गये । नौकर चाकर सभी घबरा गए । लेकिन सेठ साहबका हार्ट-फेल हो

चुका था। सारे गांवमें हाहाकार मच गया। लोगोंमें जहां-तहां चर्चा होने लगी।

सारी नगरी सेठ किशनचन्द्रको कोसने लगी और कहने लगी कि हाय! बेचारी मदनाके भाग्यका हमेशाके लिए सितारा टूट गया। वह जन्म भरके लिए अनाथिनी हो गई। हाय! उसके साथ कैसा राक्षसी कृत्य किया गया कि जिसका फल उसे आजन्म भोगना पड़ेगा।

हाय भारत! कैसी तेरी दशा बिगड़ी है। संभव नहीं कि ऐसी स्थितिका किसी दूसरे देशको सामना करना पड़े। स्वार्थियोंने मुझे कितने अथाह समुद्रमें डाल दिया है, जिसको जानना कठिन है। पहले तेरी जो संतान बलिष्ट, ब्रह्मचारिणी, जितेन्द्री हुआ करती थी आज वही व्यभिचारिणी, निर्बल इन्द्रियोंकी दास हो रही हैं।

जो विवाह सिर्फ वर और कन्याके सुखके लिए किया जाता था आज बिल्कुल उसका उलटा परिणाम नजर आता है। ६० वर्षके बूढे खखके गले छोटी बालिकायें बकरीकी तरह बांध दी जाती है तब यह सुख कैसे कहा जा सकता है? या यों कहिए कि हमने अपनी जो संतान बडे प्रेमसे पैदा की है और जिसका लालन-पालन बड़ी कठिनतासे हुआ है, क्या सिर्फ उसी दिनके लिए कि वो जिन्दगीभर सुखका मुंह न देखे।

लानत है ऐसे माता-पिताके जीवनको जिन्होंने ऐसा

राक्षसी कार्य करनेमें जरा भय नहीं माना। न यही सोचा कि हम जरासे मोहके वश होकर ऐसा बुरा कर्म क्यों कर रहें हैं, जो नर्कमें ले जानेवाला हैं।

हे भारतकी सन्तानों! अब तो सोनेसे जागो तथा अपने पवित्र देश व जातिका उद्धार करो। इन कुरीतियोंने तुम्हारी जन्मभूमिको कैसा नीच बना डाला है, जिसका उदाहरण बेचारी मदना है।

बेचारी मदना सेठ किशनचन्दकी मृत्युके बाद नहीं जानती है कि उसे किन किन कठिनाइयोंका सामना करना है। घरमें रोना पीटना मचा है। सब लोग कहते हैं—मदना! तू अभागिनी थी तभी तो तेरी माताने लोभके वशीभूत होकर तेरा सत्यानाश कर डाला। अब तू ऐसी रहकर अपनी माताका उपकार मानती रहना, लेकिन मदना! तेरा एक दोष है जो तूने नौ महीना अपनी माताके उदरमें रहकर उसको कष्ट दिया है। संभव है उसने तुम्हें उसीका प्रायश्चित्त दिया हो।

अतः अब तू इसे भोग। इसमें अब कोई सन्देह नहीं कि तेरा भाग्य अब सदाके लिए फूट गया।

सेठ किशनचन्दको मरे सात वर्ष हो चुके। मदनाकी पहले जो अवस्था थी वो नहीं रही। वह बालावस्थाको छोड़कर युवावस्थामें पदार्पण कर चुकी है। उसके भावोंमें अब जमीन-आसमानका अन्तर हो गया।

अब वह दुनियाका सुख-दुःख समझने लगी। मदना यह भी समझने लगी कि मैं विधवा हूँ और यह भी समझने लगी कि यह वज्रमय जीवन उसीको बिताना है। वह सोचने लगी कि मैं अनाथनी हो गई हूँ।

मेरी पिशाचनी माताने मेरा सर्व-नाश कर डाला। अगर मेरी माताका ऐसा ख्याल था कि अपनी मदनाको जिन्दगीभर यूंही रखूंगी तो जन्म लेते ही क्यों न मार डाला? रोती है और बहुत पश्चात्ताप करती है और फिर इन्हीं विचारोंकी तरंगमें गोते खाने लगती है और कहती है—

पशु-पक्षी तक निज संततिका,
भर शक्ति हित करते हैं।
धरते ध्यान सुखोंका उनके,
सुखसे वर्धित करते हैं॥
है धिक्कार उन्हें जो मानव,
शब्द कलंकित करते हैं।
सुखसे वंचित कर संततिको,
पातक संचित करते हैं॥

हे माता! जब पशु-पक्षी भी अपनी संतानके सुखके लिए भरसक कोशिश करते हैं, तब तूं तो मनुष्य थी, दया तेरे हृदयमें थी, लेकिन जानते हुए भी तूने मुझे सुखसे वंचित कर दिया। धिक्कार था तेरे जीवनको कि तू पशु-पक्षियोंसे भी ज्यादा बदतर थी। हाय! मैं अपनी इतनी बड़ी जिन्दगी कैसे

काढूंगी। किसके पास जाऊं, किसके पास अपना दुःख निवारण करूं, मेरी कौन सुनेगा, दुनिया कहेगी कि यह पागलोंकी तरह क्या-क्या बकती है।

हे मां! मैं तुझे किस मुंहसे मां कहूं? सिर्फ इसी उद्देश्यसे मां कहती हूँ कि तूने मुझे जन्म दिया है। लेकिन ऐसे विपत्ति-कालमें किसका सहारा लूं। कोई उपकारी नहीं दिखता। सब ठिठोली करनेवाले नजर आते हैं। कुटुम्बीजन होते हुए भी कोई सहारा नहीं देता। ऊपरसे लातें घूसा मारनेको तैयार रहते हैं और कहते हैं कि कल-मुंही घरमें आते ही पतिको खा गई। अगर रांड, तेरेको ऐसा ही करना था तो किसी औरके घरमें जाना था। हमारे ही यहां आनेको था? जा तूं भी मर जा तुझसे हमें कोई वास्ता नहीं। लाखों तरहकी बातें सुननी पड़ती हैं लेकिन वश नहीं चलता। आखिरमें मदना अपने विचारोंको रसातलमें डूबाना चाहती है। और कहती है—

अरे विधाता किसी समय जो,
धरा धर्मकी क्यारी थी।
सुख-संपत्तिमें सुन्दरतामें,
तीन लोकसे न्यारी थी॥
थी अनुपम आदर्श विश्वकी,
जो प्रभुवरको प्यारी थी।
हाँ सोचा था किसने उसकी,
आज पतनकी बारी थी॥

सोचती है, अपने विचारोंको बदलती है और कहती है कि यह मनुष्यका स्वभाव ही है कि जब उसपर संकट आते हैं तो उसको कुछ नहीं सूझता। जो जी में आता है कर डालनेको उतारु हो जाता है। यह नहीं सोचता कि आगे क्या होगा। जब सम्हलता है तो पछताता है कि मैंने अज्ञानवश ऐसा अनर्थ क्यों कर डाला ? ठीक यही हाल मदनाका भी हो रहा था।

चौवीस घण्टे इसी उधेड़ बुनमें लगी रहती कि या तो आत्मघात कर लूं अथवा कहीं चली जाऊं। लेकिन मदनाने संकटके समय धैर्य व धर्म नहीं छोड़ा। कई मौके शीलव्रत धर्मसे च्युत होनेके आये लेकिन उसकी कुछ परवाह न करके धर्मकी आराधनाके साथ-साथ शीलवती बनी रही।

हे भगवान् ! मैं अज्ञानी हूं। चारों ओरसे मोह-फांसमें फंसी हुई हूं, आपकी शरण हूँ। लाखों तरहकी व्याधिसे ग्रस्त हूं ऐसी स्थितिमें किसके पास जाकर भीख मागूं। किससे धर्मका मार्ग समझूं। किसके पास जाकर हृदयकी उत्कंठा मिटाऊँ ? सच्चे मार्गके कहीं न मिलनेसे मेरी यह हालत हो गई है।

हे भगवान् ! आप दयालु हैं, भक्त-वत्सल हैं, अंधेको आंखें देते हैं, संसारका उद्धार करनेवाले हैं, अतः लाचार होकर आपकी शरणमें आई हूँ। मदनाका धर्मसे स्नेह होनेसे किसीने कुछ न बिगाड़ा, बड़े-बड़े शत्रु उसके मित्र हो गये।

अतः प्यारी माताओ तथा बहनों ! इस असार संसारमें धर्म ही एक सहारा है । अगर शील व धर्मकी रक्षा करनी है तो बाल-विवाह व वृद्ध-विवाह रोको । प्राण जानेपर भी यही उद्देश्य रहे कि अपनी संतानको दुनियांकी परवाह न करके शिक्षित, सच्चे चरित्रवाला और मनोबल पर ध्यान देनेवाला बनाना है ।

जब तक युवावस्था न प्राप्त हो विवाह न करें । अंग्रेज नीतिज्ञ नेपोलियन बोनापार्ट हमेशा कहा करता था कि संतानका भावी सुख-दुख और उन्नति अवनति माताके ऊपर निर्भर है । माताकी दी हुई शिक्षा ही हमारे जीवनका प्रधान अंग है । इसी उद्देश्यको लेकर अगर संतानोंका ख्याल करेंगे तो दुनियांमें उनको सुख होगा और आपके यशकी कीर्तिका पारावार न रहेगा, दुनियांमें जाति व धर्मकी रक्षा होगी ।

—श्रीमती सेठानी कस्तूरीबाई,
अमरावती (बराड़)

(११)

नयनाका ठाठ

जिठानीजी ! इतना विभव होते हुए भी आप धन हीनों जैसे सादे रहन–सहन और बोल व्यवहारसे रहती हैं, यह यहांका चलन है ? ईश्वरने जिसे पैसे दिए हैं वह यदि पहन ओढ़कर अमीराने ढंगसे न रहेगा तो भला तुम्हीं बताओ उसके धनी होनेसे क्या लाभ ?

नयनाकी उपरोक्त बातें सुनकर सुसीमा हंसती हुई उसका हाथ पकडकर बोली–बहन ! यह तुम्हारी बड़ी भारी भूल है। धनी होनेका अर्थ गहने, कपड़े एवं नजाकतकी चालोंसे अपनेको सुसज्जित करना न होकर सादे वेशभूषा, सद्व्यवहार तथा विनय-पूर्वक आचारण करना है।

नयना—आ-हा-हा ! रहने दो। शिक्षाकी भरमारसे तो मेरे कान बहरे हो गए, जी ऊब गया, पहनने खानेका भी हृदय चाहिए। जिसने कभी खाया पहना ही नहीं होगा, वह उसका आनन्द क्या जाने ? संसारमें यूं ही आया यूं ही चला जायगा।

सुसीमा—नहीं–नहीं, यह भी भूल है। गहने कपड़ेसे बाहरी चमक–दमक होती है तथा सिवा हानिके कोई लाभ नहीं है। स्वयं खाने–पीनेवाला उदार हृदयी नहीं कहा जाता। संसारमें आना सार्थक तभी होगा जब बहुमूल्य आभूषण तथा

वायल रेशम इत्यादि कीमती वस्तुओंके अपव्ययसे बचे हुए द्रव्यको चार प्रकारके दान एवं दीनदुखियोंकी सहायता इत्यादि उत्तम कार्यों में लगाया जाय ।

पासमें ही बैठी हुई वृद्धा सास अपनी दोनों बहुओंके तर्क वितर्क सुनती जाती थी । छोटीके रहन–सहनसे ही उसने बहुत कुछ माप लिया था, परन्तु इस समयकी बातोंने तो सासकी रही सही शंका भी दूर कर दी । वह समझ गई कि इस घरकी मान मर्यादा इस भटकती बहुसे रहनी कठिन है । इतने दिनोंसे इस बड़ीकी सुघराई, चतुराई एवं परोपकार इत्यादि सद्गुणोंसे जैसा हमारा घर चमत्कृत हो, वृद्धिगत हुआ था, वह सब यह मूढ़ा थोड़े ही समयमें बराबर कर देगी । परन्तु बिचारी यह भी जानती थी कि अपनी इज्जत अपने हाथ है, अतएव चुप हो सुनती रही ।

नयना–जिठानीजी, बहुत बघारनेसे क्या लाभ ? मुझे तो तुम्हारे ऊपर दया आई, इसलिए कह दिया । जिसके भाग्यमें होगा वही तो पहनेगा, मैं क्या कर सकती हूं ? यह कहकर इठलाती हुई, नूपुर झनकारती अपने कमरेमें चली गई । नयनाकी विलास–प्रियता दिन-दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी ।

वह कभी हाथोंमें द्वन्द कड़े पहन लौट-पौटकर निखरती, कभी बाल बहा कानोंमें कर्णफूल गलेमें कंठा पहनकर शीशेके सामने खड़ी होती । नथ पहनकर तो कहने लगती—इसीको भाग्य कहते हैं । जिसको न होगा वह क्या पहनेगी ?

कोई भी फीतेवाला, कपड़ेवाला, चूड़ीवाला, रंग साज, सुनार नयानाकी फरमाइशसे खाली नहीं लौटता। इस व्यवहारसे नयना नगरमें व्यर्थव्ययी प्रसिद्ध हो गई। जो भी कीमती वस्तु विक्रीकी होती उसे व्यापारी पहले नयनाके पास लाते। एक दिन दो स्त्रियाँ सुसीमाके पास आयीं। उसने जयजिनेन्द्र कर, सदाकी भांति सत्कार पूर्वक उन्हें बिठाया और पूछने लगी–कहो बहन! आज कहांसे दर्शन दिये? स्त्रियाँ—बहन एक विशेष कार्यवश आपके पास आयी हूं।

सुसीमा—कहिए, क्या बात है?

आगन्तुक स्त्रियां—सुसीमादेवी! आजकल हमारी संस्थामें एक लड़की बहुत दिनोंसे अधिक बीमार हो रही है, अतः उसकी औषधि इत्यादिमें समुचित प्रबन्ध होनेसे अधिक व्यय हो रहा है। यदि आपकी इच्छा है तो कुछ सहायता कीजिए।

सुसीमा—हा हा बहनजी अवश्य दूँगी। सहायताकी क्या बात है? यह तो खुशी अवसर है। आप लोगोंके सत्संगसे ही हमें बहुतसी नवीन बातें, धर्मकी चर्या एवं गृहस्थरूपी तालावमें जमे हुए परिग्रहरूपी पाप–पंकको स्वच्छ करनेके लिए दान रूपी मार्ग मिलता है।

इतनेमें सुसीमाकी सास भी वहांपर आ गई। सुसीमाने कहा—मांजी! आश्रममें एक बालिका बहुत दिनोंसे अस्वस्थ है, क्या आप भी सहायतार्थ कुछ देना चाहती हैं? सासने कहा—हां बहू, अभी लाती हूँ। वही तो एक ऐसा स्थान है,

जहाँ पर सुयोग्य रीतिसे रुपये चारों दानमें लग जाते हैं। अन्यथा ज्ञात नहीं होता कि कहां भेजूं और क्या करूं ? ऐसा कहकर सासने २५) पचीस रुपये ला दिये।

सुसीमाने ३०) तीस रुपये अपने पाससे मिलाकर ५५) पचपन रुपये आश्रमकी बहनको दिये। वे यह कहकर कि ऐसी ही बुद्धिमति स्त्रियां यदि प्रत्येक गृहमें हों तो भारत स्वर्ग समान हो जावे, खुशी-खुशी उदार हृदयकी प्रशंसा करती हुई छोटी बहूके कमरेमें गई। वहां देखा तो नयना पान चबाती हुई दो चार स्त्रियोंके साथ ताश खेलनेमें व्यस्त हैं। इन लोगोंको आया देखकर खेलनेमें बाधा हो जानेसे नयना मुंह सिकोड़ती हुई बोली-तुम्हें क्या कहना है ? उन्होंने जय-जिनेन्द्र पूर्वक कहा कि, एक विशेष कार्यवश आपके सम्मुख आयी हूं।

नयना—मेरेसे कौनसा कार्य ? तुम तो शिक्षिका बाई हो वही रुपये मांगती डोलती होगी, और क्या ?

उन्होंने इस व्यवहारका कुछ ध्यान न कर कहा-हां बहनजी हमारे यहां एक बालिका कई महीनेसे बडे कष्टमें है। अतएव औषधिके लिए कुछ द्रव्यकी आवश्यकता है।

नयना—मैंने तो पहले ही कहा कि रुपयेके सिवा और तुम्हें क्या काम होगा ? रुपयेकी कौन कहे! मेरे पास तो इस समय एक पाई भी नहीं है। तुम्हारी संस्थामें अगर द्रव्य थोड़ा है तो अधिक रुपयोंकी औषधि करनेकी क्या

आवश्यकता है ? आजकलके जमानेमें रुपये बड़े महंगे हैं, इस तरह बांटे नहीं जाते। नयना और भी कुछ कहना चाहती थी मगर बाहरसे आई हुई एक महरीने उसका ध्यान बटा दिया। उसने हाथमेंसे बहुतसी रेशमी साड़ियां रखीं और बोली—

बहूजी, साड़ीवाला आया है। इनमेंसे अगर पसन्द हो तो मोल करूं। नयना तो साड़ी देखते ही लोट-पोट हो गई, कहने लगी—हां हां अवश्य लूंगी। आजकल इन्हीं साड़ियोंका तो फैशन चला है, दूसरी पहनकर कहीं जाते अच्छा नहीं लगता। दो साड़ियां उनमेंसे निकालकर नयनाने मूल्य पूछनेको कहा। जिनमेंसे एकके ५०) रु० और दूसरीके ७५) रु० ज्ञात हुए। उसने महरीके हाथ रुपये भेज दिये। जिसमेंसे ५) रु० महरीकी जेबके हवाले हुए। इतनेमें एक गंधी बहुत बढ़िया इत्र लेकर आया।

बहूजीने चार-पांच रुपयेके ले ही लिए। आगन्तुक बहनोंने देखा कि इस मूढ़ासे दयाकी आशा बालूसे तेलकी इच्छाके समान है। वे उठीं; और कहा बहनजी ! जय जिनेन्द्र, अब हम लोग चले। नयनाके सरसे तो मानों बला टली, वह झट बोली—हां हां जाइये, आपको व्यर्थ देर लगी। वे नीचे आयीं तो द्वारपर चन्द्रहार लेकर सुनार नौकरानीको दे रहा था, और कह रहा था कि १० तोलेकी फरमाइश और ला दोगी तो

तुम्हें २) रुपये दूंगा । नौकरानीने हंसकर कहा—यह कौनसी बड़ी बात है ।

बहूजीको तो यह सुननेभरकी देर है कि अमुक स्त्रीके पास यह गहना हमसे ज्यादा है, फिर क्या है । लो दूसरे दिन फरमाइश । यह सब लीला देखकर स्त्रियां परस्पर कहने लगीं—न मालूम इन देवी-तुल्य सास—बहूके बीचमें यह अशिक्षिता भूतनी कहांसे आ गई । इसीको कहते हैं—

"एक हांडीमें दो पेट ।" ज्ञात होता है यह तो नाम और माल, दोनोंका नाश कर देगी । अब नयनाको देखना चाहिये क्योंकि जो अधिक दिखावट करता है उसीकी ओर दृष्टि जाती है । पास—पडोसी और शहरभरकी आंखोंमें नयना चढ़ गई । जितने चोर बदमाश थे अपने अपने लाभकी प्रतीक्षामें थे ।

नयना इंद्रियोंकी गुलाम तो थी ही फिर चक्षुइंद्रियके सुखसे क्यों वंचित रहती ?

जहां कहीं मेला तमाशा होता, पतिकी आज्ञाके विना ही वह चली जाती । दशहराका दिन था । दुर्गा—पूजाकी धूम मची थी । नयना भी अपनी सहेलीके साथ सवारी देखने उसके घर गई । यद्यपि सासने बहुतेरा रोका, पर उस वेचारी बुढ़ियाकी भला कौन सुनता ? भाग्यवशात् पतिदेव विदेश ही चले गए थे ।

नयनाकी तो दसों उंगलियां घी में थीं । खूब ठाठ बनाकर कि मेरेसे बढ़िया किसीकी साडी न होगी, ऐसा सोचकर गाडी पर सवार हो चली गई । इसके घरके पीछे महेश

नामका एक गुंडा रहता था। वह बहुत दिनोंसे इसी सुवर्ण अवसरकी खोजमें था कि नयनाके कीमती जेवर कब हमारे हाथ लगें। उसको जाते देखकर अपने कुछ साथियोंके साथ उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। रातको तमाशा देखकर गप लड़ाते बारह बज गए। अब नयनाको घर जानेकी सुध आयी।

वह उठी और सहेलीसे विदा होकर गाडीमें सवार हो गई। गाडी आधी ही दूर गई होगी कि एक सूने स्थानमें सात आठ मनुष्य उसपर टूट पड़े। नयना सहम गई। भयसे उसका शरीर कांपने लगा तथा सासके वाक्य स्मरण होने लगे पर "अब पछताये होत क्या, जब चिड़ियां चुग गई खेत" मबके सब उसे नोचने लगे। कोई छन्द उतारता तो कोई पिछेली छीनता, कोई चन्द्रहार उतारता।

तात्पर्य यह कि उसके प्रत्येक अंग खाली होने लगे। बिचारी चिल्लाने लगी, चिल्लाहट सुनकर बहुतेरे मनुष्य एकत्रित होने लगे। यह देखकर गुण्डोंने जल्दीबाजीमें नाक-कान भी नोच ही लिए। नयना दर्द और डरसे अधमरीसी हो गई। लेकिन जान बच गई और घर पहुँचा दी गई। सास तो बहूकी दुर्दशा देखकर फूट-फूटकर रोने लगी परन्तु जिठानीने उपदेशका उचित अवसर देखकर कहा—

बहन! देखो इसी कारण तो मैं तुमसे कहती थी कि चमक-दमक, ठाठ बाटसे सिवा हानिके लाभ नहीं है तो

तुम कहती थी कि जिसका भाग्य होगा वही तो पहनेगा । अब बताओ ये भाग्य कैसे हैं ।

नयना हाथ जोड़कर सास जिठानीके पांवोंमें गिर पडी और गिड–गिडाकर कहने लगी—अब न कहिए । बिना कहे ही मैं भरपूर शिक्षा पा गई । कान–नाक सब कट गये, हाय ! अब मैं दुनियांको क्या मुंह दिखाऊंगी ? सासने देखा कि अब पासा पलट गया है, तो वह बड़े प्रेमसे नाक–कानमें दवा लगाती हुई नयनाको धैर्य बंधाने लगी । अब नयना वह नयना नहीं है । अब तो वह सादे रहन–सहनसे रहती, सबसे सरल व्यवहार करती एवं व्यर्थ व्ययी न रही । उससे बचे हुए द्रव्यको दान–पूजा परोपकार आदि सत्कार्योंमें लगाती हैं ।

—श्री जयनेमीदेवी–आरा ।
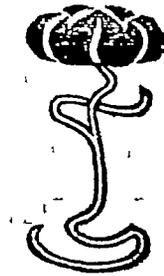
सेठजी और सेठानीजी

सेठजी—प्रिये ! आज एक बड़े धनाढ्य घरके आदमी अपने मानिककी जन्मपत्री लेने आये हैं। सुना है लड़की बड़ी पढ़ी-लिखी और सुन्दर है।

सेठानी—आप तो बराबर ही कहते हैं परन्तु मैंने तो कभी सच्ची बात होती देखी ही नहीं। मैं तो तभी सच मानूंगी जब अपने मानिककी बहूका मुँह देखूंगी। देखूं वह दिन कब आता है। जवाहरलालके लड़केकी बहू कैसी अच्छी आ गई है, कितना दान दहेज लेकर आयी है, उनका घर भर गया है। मेरा मानिक तो १५ वर्षका हो चला।

सेठजी—घबराती क्यों हो, तुम अपने मानिककी सबसे अव्वल बहू और घर दहेजसे भरा देख लेना।

मुनीमजी—सेठजी साहब ! फिरोजपुरसे आदमी आये हैं। चि० मानिकचन्दजीको देखना चाहते हैं। बस अच्छा मुहूर्त्त देखकर मानिकचन्दका विवाह फिरोजपुरके सेठकी लड़की लक्ष्मीके साथ बड़ी धूमधामसे हो गया। सेठानीजी फूली नहीं समाती। कभी दहेजको देखती कभी बहूको। सारा घर नवागन्तुकोंसे भरा है। हर्षसे घर गूंज रहा है।

सेठजी—बेटा मानिक ! पढ़ने क्यों नहीं जाता, देख तो

तेरी उमरके लडकोंने एन्ट्रेन्स पास कर लिया है, तू मन नहीं लगाता ।

मानिक—बाबूजी ! मास्टर साहबसे मेरा झगडा हो गया था, इसीसे मैं दो दिनसे नहीं जा रहा हूं न अब जाऊंगा । जो आपको पढ़ाना हो तो मास्टर रख दो ।

सेठानी—बेटा, तेरे लिए मास्टरकी कमी क्या है ? एक नहीं अनेक रख दूँगा । परन्तु तू मन लगाकर पढ़ तो सही । तू स्कूल जाना मत छोड । स्कूलमें पढ़ाई अच्छी होती है ।

मानिक—नहीं मैं स्कूल नहीं जाऊंगा । मैंने तो प्रतिज्ञा कर ली है । मैं स्कूलमें पैर न रखूंगा ।

× × ×

सेठजीके घर पर सन्ध्याको बड़ी भीड लगी है । कितने ही आदमी जमा हो गए हैं । रामलालने भीतर जाकर देखा तो मानिकलाल बेहोश पडे हैं । और भाई, यह क्या हो गया ? क्या बेहोशीका रोग हो गया है ?

बाबूलाल—भाई सड़क पर पीकर बेहोश पड़ा था । मैं टहलने जा रहा था, इसे देखकर यहां उठा लाया हूँ ।

सेठजी—अरे यह मानिकको क्या हो गया ? क्या इसे मूर्छा आ गई है ? डाक्टर बुलाऊं ?

बाबूलाल—सेठजी, मैं टहलने जा रहा था, रास्तेमें मानिकलाल पड़े हुए मिले थे, इन्हें यहां उठा लाया हूँ ।

सेठजी—हाय, यह आदत इसको कैसे पड़ गई ?

अब मानिकलालको शराब पीनेकी आदत और भी बढ़ गई। रुपयोंकी जरूरत पड़ने लगी। क्या किया जाय, जहांसे रुपये मिले जिससे सुरापान करनेको मिला करे। दोस्त मिलकर पीनेको उत्तेजित करने लगे। शराब पीनेको रुपयोंकी जरूरत पड़ी। धीरे-धीरे दोस्तोंने जुआ खेलनेकी सोची। मानिकलाल आंख बचा कर जुआ खेलने जाने लगे। सेठ सेठानी भोले-भाले सीधे थे। वे यह न जानते थे कि छोटी उम्रमें विवाह करनेसे मानिक ऐसा बिगड जायगा, अपनेको बड़ा समझकर सब छोड़ बैठेगा। वे बिचारे अब भी यही समझते थे कि किसीने दुश्मनीसे इसे शराब पिला दी होगी। वास्तवमें बालक सीधा सादा है।

दोस्त—अरे यार, आज कुछ रुपयोंकी जरूरत पड़ेगी।

मानिक—भाई! कितने रुपये चाहिए?

दोस्त—शराबकी बोतलको कमसे कम २०) रु० और बाजी लगानेको भी तो कोडी नहीं है। कमसे कम ५००) रुपयोंका इन्तजाम करना चाहिए।

मानिक—अच्छा, मैं चार बजे संध्याको तुम्हारे घर पर आ जाऊंगा।

दोस्त—रुपया अवश्य लेते आना। यदि न लाओगे तो सारा मजा किरकिरा हो जायगा।

मानिक—भला कभी ऐसा हो सकता है?

× × ×

सेठानी—बेटा मानिक ! आज ऐसा सुस्त क्यों पड़ा है ? क्या जी अच्छा नहीं है ?

मानिक—मां, मेरा जी तो अच्छा है, परन्तु मुझे एक बातकी बड़ी जरूरत आ गई है। बाबूजीसे मांगते डर लग रहा है, तुम पूरा कर दो तो कहूं ।

सेठानी—भला तेरा कहना भी न करूंगी तो किसका करूंगी, बता क्या चाहिए ?

मानिक—मुझे आज ५००) रुपयोंकी जरूरत है। यदि आज चार बजे तक न मिल सके तो मैं मुंह न दिखाऊंगा ।

सेठानी—तुझे क्या करना है ? क्या करेगा इतने रुपयोंको ?

मानिक—तुम्हें इससे क्या करना है, मैं कुछ भी करूं ।

सेठानी—बिना बताये न दूंगी ।

मानिक—एक आदमीकी दावत दी जायगी । उसीके लिए मेरे दोस्तोंने पार्टी करनेका चन्दा इकट्ठा किया है। मुझे भी देने हैं ।

सेठानी—अच्छा, मैं दे दूंगी ।

मानिक—(अपने मनमें) खूब मजा हुआ । मां आज भुलावेमें आ गई । इस प्रकार मानिककी आदत दिनो-दिन बिगड़ने लगी । वह शराबी और जुआरी हो गया ।

लक्ष्मी जब ससुरके यहां आई तब पतिदेवका हाल देखकर पहले पहचान न सकी कि क्या कारण है ।

मानिकचन्दने आमोद-प्रमोद दिखाते हुए लक्ष्मीसे भी रुपये ऐंठनेकी तरकीब सोची। वह नित्य नये सामान लाते थे। कभी इत्र, कभी सेन्ट, साबुन इत्यादि। लक्ष्मी पतिके लाये हुए सामानको देखकर फूली न समाती थी।

एक दिन मानिकने अलमारीमें लक्ष्मीकी सोनेकी कमरकी जंजीर रखी देखी, इसे देखकर उसके मुंहमे पानी भर आया। सोचा यदि एक भी लड़ हाथ लग जाय तो बड़ा काम बन जाय। रात्रिमें जब लक्ष्मी सो गई तब उसने चुपकेसे अलमारी खोलकर जंजीरमेंसे दो लड निकाल लीं और उनको ले जाकर थोड़ेसे रुपयोंमें गिर्वी रखकर जुआ और शराबका आनन्द लूटा।

सेठानी—बहू, आज प्रतापसिंहके यहां लड़केके विवाहकी ज्यौनार है तुझे भी मेरे साथ जाना होगा।

लक्ष्मी—अच्छा, जैसी आपकी आज्ञा।

सेठानी—तेरे पास जो जेवर हैं उन्हें पहले पहन आ, फिर मैं पहना दूंगी।

लक्ष्मी दौड़कर चिल्लाती हुई कमरेसे निकली, सासजी, मेरी जंजीरमेंसे तो किसी दुष्टने दो लड़ काट ली हैं।

सेठानी—कमरको ठोककर, हाय! यह अत्याचार तो किसी दुष्ट नौकरका है।

घरमें कोलाहल मच गया, चारों तरफ एक-दूसरेका मुंह सब देखने लगे।

सेठजी—मुनीमजी ! जाओ पुलिसमें खबर दे दो । जब सिपाहीके हवाले यह कमबख्त नौकर जायेंगे तब ही अक्ल ठिकाने आयेगी ।

मानिकचन्दका हृदय अभी इतना कठोर न हुआ था कि वे आसीनीसे पुलिसकी मार धाड़को सहन कर सकते । सिपाहीके बेतोंकी मार निर्दोष नौकरों पर पडनेका ख्याल करते ही हृदय थर्राने लगा ।

मानिकचन्दने सोचा कि एक लड बरामद हो जायगी तो मामला ठंडा हो जायगा । इन्होंने जंजीरोंकी लड बेचकर एक छुडा ली ।

कमरेमें सबेरे उठते ही लक्ष्मीको देहली पर एक लड जंजीरकी पड़ी मिली । उठाकर आश्चर्यसे लक्ष्मीने मानिकचन्दसे पूछा–देखिए कमरा तो बन्द था यह लड भीतर कैसे और कहांसे आ गई ? नौकर तो अभी कोई आया नहीं है ।

मानिक—इसका क्या अचंभा है, क्या कोई तुमको दिखाकर रख जाता ? देखो ऊपरके रोषनदानमेंसे हाथ बढ़ाकर डाल सकते हैं ।

सबेरे घरमें एक लड़के मिलनेका हल्ला मच गया । दूसरीसे लिए वृथा विवाद करना सेठानीने उचित न जान मामला पुलिसमें न जाने दिया । इस प्रकार छुपे शिकारमें मानिक दिनोंदिन चालाक होते जाते थे ।

रात्रिका समय है, बारह बजे सड़क पर सन्नाटा छा रहा

था। मनुष्य अपने-अपने घरोंमें दिन-भरके परिश्रमसे थककर गहरी नीन्दमें स्वप्नका आनन्द लूट रहे थे। पहरेवाले सड़कों पर सचेत करनेके अभिप्रायसे आवाज देते हुए पहरा दे रहे थे।

सिपाही—देखो तो यह अरर धू आवाज कहांसे आई!

दूसरा—ओहो, भागो, कोई चोर लगता है, कहीं सेंध देते हुए रपट पड़ा है, देखो तो वह कुछ लोग भागे जाते हैं, मालूम होता है चोर है।

सिपाही—दौड़ो पीछा करो, पकड़कर गिरफ्तार करो! भागते हैं।

कौन्सटेबिल—ओह! कहींसे कराहटकी आवाज आ रही है। अरे यह तो कोई अच्छा आदमी है। यह यहां पर पत्थरोंके ऊपर आधी रातको कैसे गिर पडा?

मानिक—आप लोगोंको देखनेसे क्या फायदा कि कौन है। कुछ लोगोंने दुश्मनीसे मुझे ऊपरसे ढकेल दिया है। मेरे चोट आ गई है इतना कहकर बेहोश हो गया।

कौन्सटेबिल—सिपाही-डोली लाकर इस मरीजको अस्पताल ले जाओ। सबेरे जांच होगी कि क्या मामला है।

सेठजीके यहां सबेरे हल्ला मच गया कि रातको घर पर मानिकचन्द नहीं आये। कहीं दोस्तोंके यहां रह गए।

डा०—आपका नाम क्या है?

मानिकचन्द।

डा०—किसने ढकेल दिया?

मा०—कुछ लड़कोंने ।

डा०—कहांसे, आप वहां क्यों गए थे ?

मा०—(नीची गर्दन कर आंखें बन्द कर ली) कुछ मेरे दोस्त मुझे फुसलाकर कोठे पर ले गये, वहां कुछ झगडा होनेसे उन लोगोंने मुझे नीचे गिरा दिया ।

डा०—बड़े अफसोसकी बात है मानिकचन्द, कि इतने बड़े रईसके लड़के होकर ऐसे नीच दोस्तोंके साथ मेल रखते हो !

सेठानी—बेटा, मैंने तो तेरा ब्याह कर दिया । घर पर किस चीजकी कमी है जो तू बाहर जाता है ? साक्षात् लक्ष्मी ही मैंने तेरी बहू ढूंढ़ दी है । फिर भी तो बुरी सोबत नहीं छोड़ता ।

लक्ष्मीको अब पता लग गया कि पतिदेव बदचलन हैं । इन्होंने मेरी कमरकी जंजीर खराब की होगी, उसके दिलका संदेह जाता रहा । वह सोचने लगी कि अब यदि सुधार न होगा तो मुझे भी इनके साथ पतित होना पड़ेगा ।

सेठानीके घर कुछ सिपाही और कोतवाल वगैरहकी भीड दिखाई दी । लोग देखने लगे मामला क्या है ।

कोतवाल—मानिकचन्द ! मानिकचन्द ! निकलिए आपके नामका वारन्ट आया है ।

सेठजीसाहब—आप किसको खोजते हैं ? किस मामलेका वारन्ट लाये हैं ।

कोतवाल—मानिकचन्द आपके यहां है या नहीं यह पहले बताइये। उसके नामका वारन्ट है उसे हम हवालातमें ले जायेंगे। इन्होंने बड़ी भारी धोखेबाजी की है। पीतलके जेवर पर सोनेका मोल कराके इन्होंने गहना गिर्वी रखा है। अब इसका पता लगनेपर इनको कैद होनेका हुक्म आया है। तभी इनका वारन्ट आया है।

सेठजी घबरा गये। पर कुछ हिम्मत करके बोले—मेरे घर इस समय मानिकचन्द नहीं है।

कोतवाल—हमें शक होता है, हमें आपकी बातका विश्वास नहीं होता। यदि आप मानिकचन्दको पेश न करेंगे तो मुझे इस घरकी तलाशी लेनी पड़ेगी। यह सुनते ही सेठजीके तो प्राण-पखेरू उड गये।

मानिकचन्दने अपने प्राण बचानेके लिए एक विधि सोच निकाली। झटसे लहंगा ओढ़नी पहनकर घूंघट काढकर स्त्रीका वेश बदल लिया। सेठानीके अनुनय विनय करनेपर पडोसिन अपनी छतसे पार करनेको राजी हो गई।

मानिकचन्द घूंघट तानकर पांवमें बिछुआ पहन कर पडोसिनकी छतसे छलंग मारकर पार हो गए। कोतवालकी दाल न गली। देखभाल कर अपनासा मुंह लेकर बिचारा चला गया।

कईबार मानिकचन्द ऐसे संकटोंसे बच गए। एकबार

रातमें इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। छः महीनेकी सजा काटने जेल भेज दिया गया।

सेठजीका देहान्त हो गया। सारे घर गृहस्थीका भार मानिकचन्दके कन्धों पर आ पड़ा। लक्ष्मीने सोचा कि यदि सबके मालिक पतिदेव हुए तो कुछ दिनोंमें भीख मांगनी पड़ेगी।

लक्ष्मी—देखिए, ससुरजीका तो देहान्त हो गया है। अब यहाँ पर रहनेसे अपनी बदनामी होती है। मेरा विचार है कि बम्बई चल चले। वहाँ पर कोई रोजगार कर लीजिए।

मानिक०—(तड़पकर) बाबूजी मर गए तो क्या सारा घर ही उजड़ गया है ? मैं अपने घरकी देहली न छोडूंगा, नहीं तो मेरी बदनामी होती है। तुम्हारी अकल खराब हो गई है क्या ?

लक्ष्मी—घरकी देहलीको क्या कोई लिए जाता है ? रोजगारके चलते आदमी बाहर नहीं रहते क्या ? क्या अब भी ससुरजी बैठे हैं जो आपके वारन्ट रुपया देकर लौटा देंगे ?

मानिक०—चुप रहो, मुझे अधिक शिक्षा देनेकी आवश्यकता नहीं है। मेरी यहां सैंकड़ोंसे जान पहचान है मैं अपना देश कभी न छोडूंगा।

लक्ष्मी बड़ी बुद्धिमती सुशीला स्त्री थी। उसने पतिके उद्धार करनेका बीड़ा उठा लिया।

लक्ष्मीको अपने पिताके यहां रहते दो महीने हो गए।

मानिकचन्दका पत्र लेनेके लिए आया। लक्ष्मीने यह अवसर अच्छा जानकर पत्र लिखा कि आकर ले जाय।

मानिकचन्द बम्बई सुबहकी ट्रेनसे पहुँचे। सासने आदरके साथ बिठाया। जलपानके बाद जानेकी राय लेने लगी। तब यह हुआ कि दूसरे दिन रात्रिकी ट्रेनसे लक्ष्मी ससुराल जायगी।

डाकिया—तार है, तार ले जाइये ?

लक्ष्मी—कौन है ? किसके नामकी तार है ?

डा०—मानिकचन्दके नाम है। गाजीपुरसे आया है।

मानिकचन्द—लाइये मेरे ही नाम है। तार खोलकर—अरे भाग्य तो फूट गये ! यदि पिताजी होते तो आज यह दिन देखनेको न आता।

लक्ष्मी—क्या, कैसा तार आया है ?

मानिकचन्द—घरसे तार आया है कि आपका यहां आना ठीक नहीं है। दुश्मन बड़ी बुरी तरहसे बदला लेनेकी सलाहमें है। आते ही जान बचनी कठिन होगी।

लक्ष्मी—मैं तो आपसे पहले ही प्रार्थना करती थी कि कुछ दिनोंके लिए गाजीपुरको तिलांजलि दे दीजिए। बम्बईमें अनेक धन्धे हैं और इज्जत भी बच जायगी।

मा०—खैर, जैसी तुम अनुमति दोगी मुझे करना ही पड़ेगा। नहीं तो अब जान बचनी कठिन है।

लक्ष्मी—मालूम होता है कि अब आप सीधे रास्ते पर आनेवाले हैं।

लक्ष्मी अपने साथ पहलेसे ही रुपये ले गई थी। कुछ इन्तजाम करके उसने मानिकचन्दको एक कपड़ेकी दुकान खुलवा दी।

कुछ दिनोंमें मानिकचन्दकी दुकान चल निकली। नया शहर, नया रोजगार, सब पर मानिकचन्दका अच्छा प्रभाव पड़ने लगा। साल बीतते ही मानिकचन्द अच्छे व्यापारियोंकी गिनतीमें आने लगे। लक्ष्मीके सतत् प्रयत्नसे उनकी शराब पीने तथा जूआ खेलनेकी आदत छूट गई।

मानिक—लक्ष्मी! तुम्हारा जैसा नाम है वैसे ही तुम्हारे गुण हैं। यदि तुम इतनी चतुरतासे काम न लेती तो मैं न जाने कबका कुत्तेकी मौत मर गया होता। ऐसा कहकर लक्ष्मीके पैर पकड़ रोने लगा।

लक्ष्मीने नम्रतासे अपने पैर हटा लिए और मानिकचन्दको हृदयसे लगा लिया।

स्त्रीका कर्त्तव्य है कि यदि उसका पति कुमार्गगामी दुराचारी है तो अपनी बुद्धिसे उसे सुमार्ग पर लावे। मेरा आज जन्म लेना सफल हुआ कि आप अपने सत् पथ पर आ गये। गाजीपुरसे तार दिलानेका भी मेरा ही षड्यंत्र था।

—श्री व्रजबालादेवी।
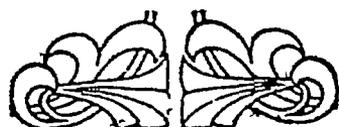
(१३)

करुणा

रईस रामाचरणकी धाक नगर भानुपुरेमें अच्छी जमी थी, बालासाहब जैसे धनाढ्य थे वैसे ही उदार और विनम्र भी थे। आपके किसी न किसी ऋणसे सहस्रों नागरिक दबे हुए थे। लालाजीको एक पुत्र व एक पुत्री थी। परन्तु पुत्र दयाचरणका स्वभाव पिताके अनुरूप न था। उसपर पाश्चात्य शिक्षाका प्रभाव अधिक पडा था। वह कितनी ही बातें मनमानी किया करता था तौ भी पढ़नेमें रुचि होनेके कारण प्रतिवर्ष कक्षामें बढ़ता जाता था।

जब यह १५ वर्षका हुआ तो इसने अपने विवाहका विरोध किया। माता-पितासे स्पष्ट कह दिया कि मैं विवाह न कराऊंगा। यह बंधन मुझे पसंद नहीं है। कुछ दिन इसी कहा-सुनीमें व्यतीत हो गए।

उधर रईसके इकलौते लडकेको क्वांरा देखकर कन्याओंके पितागण जन्मपत्रिका मांगने लगे और नित्य प्रति घर पर आ-आकर प्रार्थना करने लगे। ये बेचारे किसी तरह टाल देते थे। एक दिन इनकी पत्नी प्रतिभादेवीने कहा—

स्वामी! अब तो दयाचरणका विवाह तय कर लेना चाहिए, उम्र भी काफ़ी हो गई है। कहीं लड़का बिगड़ न जाय।

रामाचरण—तुम तो अनजानोंकीसी बातें करती हो, वह विवाह कराना नहीं चाहता तो जबरन कैसे कर दूं। रोज बकता है, क्या तुम सुनती नहीं हो ? यदि बलात् विवाह कर भी दिया और उसने कोई उपद्रव उठाया तो क्या किया जायगा ?

प्रतिभा—हां सुनती तो मैं भी हूं। इस विषयमें तो मुझसे कई बार बक-झक हो गई है। यदि हम लोग ही चुप होकर बैठ जायेंगे तो और कौन इसको सद्गृहस्थ बनायगा ? मैं तो सोचती हूं सुन्दरसी लड़कीसे विवाह कर दीजिए। फिर यह कुछ भी न करेगा।

रामाचरण—अच्छा मुझे तो स्वयं भी विवाहकी चिन्ता है। मैं बाबू रामविहारीके यहां सम्बन्ध तय कर लेता हूं। कन्याको तुम देख लेना। प्रशंसा तो बहुत सुनी जाती है। लोग कहते हैं कि परम रूपवती है और पढ़ी-लिखी चतुर भी है।

इतना कहकर लालासाहब बाहर चले गये। इन बातोंको दयाचरण दूसरे कमरेसे सुन रहा था। वह माताके पास आकर बैठ गया और कहने लगा—

मां ! आप पिताजीकी बदनामी न कराइये। मैं कदापि विवाह न कराऊंगा। मुझे यह जन्मभरका बन्धन पसन्द नहीं है।

माता—यह तो बताओ ऐसा कहते क्यों हो ? सब समयोंमें और सब देशोंमें विवाह तो होता ही है। तुम न जाने क्यों मना करते हो ? देखो यह प्राचीन प्रथाके विरुद्ध है। भारतवर्षमें माता-पिता अपने अनुभवसे योग्य संबंध खोजकर कर देते हैं। यही ठीक रहता है। दुःख-सुखकी संगिनी स्त्री ही तो होती है।

दयाचरण—सब देशोंमें ऐसे विवाह नहीं होते हैं। युरोपमें तलाक देनेका रिवाज है। इसमें बन्धन नहीं होता है। चाहे जब चाहे, मनुष्य छूट सकता है। अब तो यहां के विद्वानोंका यह मत है कि विवाहको उडा ही दिया जाय ! इच्छाके अनुसार विषयभोगोंके लिए मनुष्योंको मौका दिया जाय ! बस धीरे-धीरे भारतमें भी यहीं होगा !

माता—दयाबाबू ! पुस्तक लिख देना या रिवाज चला देना सरल बात है परन्तु उसका फल भोगना बहुत कठिन हो जाता है। आज युरोपके विद्वान अपने यहांके तलाकोंसे घबरा उठे हैं। दुःखका अनुभव कर रहे हैं। उनकी संतान माता-पिताकी भक्तिसे विहीन हो जाती है। पति-पत्नीके विच्छेद होते समय उनके बच्चे ऐसे फिरते हैं जैसे कुत्तोंके पिल्ले।

दयाचरण—आपको क्या मालूम है ? वे लोग सब प्रकारका प्रबंध करते जाते हैं। वहां ऐसी-ऐसी सरकारी संस्थाएं खुली हैं, जिनमें जन्म होते ही बालक पहुँचा दिये जाते हैं। वहीं

उनका लालन–पालन होता है। माता–पिता स्वतन्त्र रहेंगे। उनपर किसी प्रकारका बोझा नहीं होगा।

माता—क्या माताके अंकका सुख उन बालकोंको नर्स दे सकेगी? कदापि नहीं। यह बहुत बड़ी गलती है। एक दिन उन देशवालोंको पछतावा होगा। यही प्राचीन प्रथा चलानी होगी। वृद्धसेवा और शिशुसेवासे शून्य देश पशुओंका जंगल बन जायगा। भला ऐसा वे लोग क्यों होने देंगे?

अच्छा, इन बातोंसे क्या प्रयोजन है, तुम भारतवासी हो, तुम्हें यहांके अनुसार विवाह करना होगा। इस विषयमें तुम्हारी एक न चलेगी। हम लोग तुम्हें ऐसी दशामें छोड़कर मरना पसन्द न करेंगे। बल्कि फलाफूला गृहस्थ देखकर तृप्तिसे स्वर्गारोहण करेंगे।

कालेजका समय हो गया था। दयाचरण बडबडाता हुआ चला गया। उसने सोचा कर लेने दो विवाह, मैं तो सम्बन्ध कुछ भी न रखूंगा।

बात भी यही हुई, मातापिताके पूरे पूरे प्रयत्नसे दयाचरणके फेरे तो दो महीनेके बाद पड़ गए। सुशील बहू भी घरमें आई परन्तु परिणाम अच्छा न हुआ। दयाचरणने बहूको उलटकर भी न देखा, वरन् दिन पर दिन उसकी चीढ़ बढ़ती ही गई। उसका चित्त घरसे अलग होता गया, वह अब विदेशमें रहकर पढ़नेका विचार करने लगा!

उन्होंने पिता रामचरणको बहुत समझाया, अनेक कला-कौशल सीखनेका प्रलोभन दिया व अपने मित्रोंसे भी इसी विषयको पुष्ट कराया। तदनुसार रामचरणको भी आज्ञा देनी ही पडी। खर्चका प्रबंध भी करना पडा, अनेक तैयारियां एवं पास-पोर्ट आदिकी लिखापढीके पश्चात् एक तारीख दयाबाबूके विलायत जानेकी निश्चित हो गई।

इस निश्चयसे दयाबाबूको तो बडा आनंद आया पर माता और पत्नीको बडा कष्ट हुआ। उनकी आशावेल बिलकुल मुर्झाने लगी। पत्नी करुणादेवी एकबार पतिसे बातचीत करनेका अवसर खोजने लगी, इसमें वह सफल भी हुई! परन्तु दयाचरणने रूखे शब्दोंमें यह उत्तर दिया कि वह विदेशसे लौटने पर गृहस्थीमें फंसेगा।

देखते देखते निश्चित दिन पास आ गया और ये बम्बई रवाना हो गए। हठी और फिरे मस्तक पुत्रका वियोग भी माता-पिताको बहुत अखरा परन्तु कर कुछ भी न सके। अस्तु, उसके कल्याणकी प्रार्थना करते हुए लौटनेके दिन गिनने लगे।

इधर दयाबाबूकी यात्रा प्रारम्भ हो गई। जहाज बड़े वेगसे मार्ग पार करने लगा। कितने ही यात्री डेक पर एकत्रित होकर खेल तमाशे करते और आनन्दित होते। दो दिनोंमें ही दयाबाबूका परिचय लगभग सबसे हो गया। एडनके बंदर पर पहुंच कर मुसलमानोंका स्मरण हुआ। पश्चात् 'भारतकी

गंधका लोप हो गया और विचित्र नगर दृष्टिपथसे गुजरने लगे।

निश्चित समय पर जहाज विलायत पहुँच गया। अन्य यात्रियोंके साथ दयाबाबू भी जहाजसे उतरे। वहां उतर कर उन्होंने एक गृहस्थके घरमें एक कमरा ले लिया और उसीसे भोजनका प्रबंध भी कर लिया। भारतीय साग-सब्जी और तरल एवं चटपटे भोजन छोड़ कर रोटी और मक्खन पर जीवन बसर करने लगे। तौ भी उन्हें संतोष था कि हम युरोपमें आ गये हैं। इन्होंने बिजलीकी इंजिनियरिंग सीखनी आरम्भ कर दी। इनके परिश्रमसे अध्यापकगण बहुत प्रसन्न थे कि तुम एक अच्छे इंजिनियर हो जाओगे, लाखों रुपये कमाओगे।

घरकी बूढ़ी मालकिन भी दयाबाबूके शील स्वभावसे प्रसन्न थी। ये किसी युवतीसे अधिक बात-चीत नहीं करते थे। भारतीय लज्जाकी झझक इनमें वहां भी बनी थी, इसलिए ये बडे शीलवानोंमें शुमार होते थे।

दो वर्ष इसी प्रकार व्यतीत हुए, दयाबाबू अपने काममें लगे रहते थे। इन्हें सिनेमा और थियेटर जाना पसन्द न था, परन्तु सभ्यताका निर्वाह करना भी जरूरी था। मित्रोंके साथ बराबर आना जाना होता था। इनके मित्रोंके साथ कभी-कभी दो-चार युवतियां भी आ जाती थीं।

एक दिन दयाबाबू अपने कमरेमें बैठे अखबार पढ़ रहे

थे। रविवारकी छुट्टी थी। इसी समय एक युवती मिस हैलेन आ पहुँची। कहने लगी—गुड मॉर्निंग मिस्टर बाबू। क्या आप छुट्टी इसी कमेरेमें बितायेगा? चलिए आपके मित्र डौप्सनसाहब बुला रहे हैं। वे नदीके पारवाली तरफ देखने जायंगे।

दयाबाबूने युवतीका सत्कार किया और कपड़े पहनकर साथ हो लिये। एक गाड़ी पर सवार होकर ये नियत अड्डे पर पहुँचे और सैरका सामान एकत्रित करने लगे। केक और रोटियां रखी गई। पश्चात् चार मित्र और युवती तथा दयाबाबू नदीकी घाट पर जा पहुँचे। भीड बहुत अधिक थी। नौका किनारे लगी थीं जिनपर लोग सैर कर सकते थे।

एक नौका इन लोगोंने भी ठीक की और सवार हो गए। दयाबाबूके मित्र कुदकर पहले ही जा बैठे। फिर दो स्त्रियां उतरीं उनमें एक तो नौका पर जा बैठी, परन्तु दूसरी जो दयाबाबूको बुलाने गई थी उसने उनसे कहा—बाबू आप मुझे हाथ पकडकर नौका पर ले चलिए, गिर पड़ूंगी। मुझे पानीसे भय लगने लगता है। इतना कहकर उसने दयाबाबूका हाथ जोरोंसे पकड लिया।

नौका पर पहुंचते—पहुंचते अपना सारा बोझ ही उनपर लाद दिया। सभी नौका पर बैठ गए। इच्छित स्थान पर पहुँच कर सबने सैर की। बर्फ पर दौड़—धूप करते बालकोंके साथ—साथ इन सबोंने भी खेल किये।

पश्चात् अपना—अपना नास्ता करके लौटनेकी तैयारी की

और सभी नौका पर आ बैठे । इस बार भी मिस हैलैनने इनका सहारा लिया ।

दूसरीने और युवकोंका सहारा लिया, क्योंकि शिक्षित देशोंकी महिलाएं युवकोंको देखकर अवश्य शिथिल बन जाती हैं । अन्यथा उनकी सुकुमारिता एवं उदारतामें धब्बा लगनेका भय रहता है । लौटते-लौटते शाम हो गई और अंधेरा भी होने लगा । मिस साहिबाने नौका छोडते समय फिर वही ढंग लगाया । इसबार इनका जादू काम कर गया क्योंकि दया-बाबूके हृदयमें एक बेचैनी भी उठ खडी हुई । और वे मिस साहिबाको बार-बार निमंत्रित करने लगे ।

अब दयाबाबूका चित्त काममें अधिक नहीं लगता था । उनको हृदय-रोगका भ्रमसा हो गया था, जिसकी औषधि डाक्टरोंने आमोद-प्रमोद करना सबसे मुख्य बताया था । इस उपचारके लिए मिस साहिबा अपना समय बहुत अधिक देती थीं । क्योंकि रोगियोंकी सेवा करना वहांकी महिलाएं अपना कर्तव्य समझती थीं ।

धीरे-धीरे यह चिकित्सा बढ़ती ही गई । एक दिन गिरजामें जाकर दयाबाबूके साथ मिस साहिबाका विवाह संबंध हो गया । अब तो दयाबाबू पूर्ण स्वस्थ हो गये और सुखी भी हो गये ।

परन्तु प्रकृतिका परिवर्तन क्षणिक होता है, कुछ ही समयके पश्चात् अनेक आकुलताएं घेरकर दबा देती हैं । यही

दशा दयाचरणकी भी हो गई । अब उनको अर्थ संकट सताने लगा, पिताका भेजा रुपया काफी न था । विद्यार्थीका खर्च योरोपकी गृहस्थी कैसे चला सकता है । दोनों प्राणी अपने कियेपर पछताने लगे ।

जो कुछ गिन्नियां माताने साथमें रख दी थीं और जो बचा-बचाया रुपया था सब समाप्त हो गया । अब केवल वैमनस्य ही हाथमें रह गया था । एक दिन भारतीय स्त्रियोंके स्वहस्तसे भोजन बनानेकी प्रशंसा दयाबाबू कर रहे थे, उन्होंने कहा—हमारे भारतमें करोड़पति स्त्री भी बनाकर खिला देती है ।

बस इसी बातको लेकर मेमसाहिबासे झगड़ा हो गया । केवल झगड़ा ही नहीं इसकी पुकार कोर्टतक पहुंची । मेम-साहिबाने तलाक देनेकी ठान ली । उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि यह मनुष्य गरीब और अयोग्य है । मैं इसके साथ योंही फंदेमें फंस गई थी । साथ ही यह भी कहा कि यह नपुंसकके समान है ।

दयाबाबूको इन बातोंसे बड़ा क्रोध आया क्योंकि वे मेम-साहिबाको भारत लाना चाहते थे, वहां तो उनके घर प्रचुर धन था । पिताको किनारे करके धनका कष्ट न होता, किन्तु मेमसाहिबा तो कुछ और ही कर बैठी ।

एक दिन दयाबाबूने कहा—हैलेन ! तुमने मुझे बड़ा

बदनाम कर दिया। जिस लांछनको तुमने मेरे सरपर लगाया है, वह तुम्हींको नीचा दिखायगा। यह जो तुम गर्भवती हो वह क्या साबित कराता है?

मेम—वाह! तुमने मुझे खूब मूर्ख समझ रखा है। मैंने उसका प्रबन्ध पहले ही कर रखा है। परसों ही सब समाप्त हो गया है। हमारे देशमें ऐसे अनेक स्थान बने हैं जहाँ महिलाएं अपना काम बड़ी अच्छी तरह कर आती हैं। वहांकी परोपकारी नर्सें पकी संतानोंको पाल लेती हैं, कच्चीको बहा देती हैं।

दयाबाबूका सिर घूम गया, वे सोचने लगे कि हाय! इस पिशाचनीको पेटकी सन्तानका मोह नहीं है तब यह मेरा साथ क्या देगी? अतएव खुशी२ अलग हो जाना ही ठीक है।

तत्पश्चात् वे इससे अलग हो गये। दाम दण्ड देकर जो कुछ रुपया बचा उसको खर्च कर घर लौटनेकी सूझी। इन्होंने पिताको लिखा कि मैं आना चाहता हूं, खर्च भेजिये। वर्षोंके पश्चात् यह सुसंवाद पढ़कर पिताने रुपये भेज दिये।

तीन-चार सप्ताहके पश्चात् दयाबाबूने लौटनेका निश्चय किया। जहाजपर सीटका प्रबन्ध भी हो गया। कल जानेका निश्चय भी हो गया। आज दयाबाबू अपने कमरेमें पड़े पड़े अतीतकी घटनाओंका विचार कर रहे हैं। उससे उनको विषाद ही विषाद होता है।

धीरे-धीरे नींदने आ घेरा। १ बजे रात्रिको नींद खुली

तो देखा उनके सिरहाने कोई बालक रो रहा है। दयाबाबूको बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने सिर उठाकर देखा तो एक बालकका मस्तक मात्र उधरमें खड़ा है।

दयाबाबूने घबराकर मुंह फेरा तो सामने देखते हैं कि एक बिना सिरका धड़ खड़ा है।

अब तो दयाचरण भयके मारे मूर्छितसे हो गए। क्या प्रसंग है कुछ समझमें नहीं आया। केवल यही सुना कि मैं तुम्हारा पुत्र हूं शतखंड करके फेंका गया हूँ।

इस आवाजके सुनते ही दयाबाबू बिल्कुल अचेत होगए। यहाँतक कि दिन चढ़ आया वे न उठे। लोगोंने किसी तरह दरवाजा खोल उन्हें सचेत किया। रात्रिकी घटनाका विशेष प्रमाण इनके पास कुछ न था। केवल खूनके कुछ छीटें इनके वस्त्रोंपर पड़े थे तथा भीतरकी सब खिड़कियोंके किवाड़ खुले थे।

दयाबाबूने किसीसे कुछ कहना उचित न समझा। वे झटपट भागनेका प्रयत्न करने लगे तथा समयपर जहाजपर आ पहुँचे। जितने दिन जहाजपर रहे अकेले ठहरनेका साहस न होता था। खैर, समयपर जहाज बम्बई आ पहुंचा। पिता पहलेसे ही यहाँ आ गये थे, पुत्रको आलिंगन कर प्रसन्न हुए। परन्तु ऐसा दुर्बल शरीर पीत मुख देखकर विस्मित हो गये। कारण पूछा तो उत्तर ठीक—ठीक न मिला। बम्बईमें एक दिन विश्राम कर भानुपुरके लिए रवाना हुए।

इधर दयाबाबूकी धर्मपत्नी करुणादेवी अपने पिताके यहां चली गई थी। एक भी पत्रका उत्तर न पाकर निराशाके कुंडेमें हवन होती हुई अपने दिन बिताती थी। उन्हें भी यह संवाद मिला।

यकायक शरीरमें बिजली सी दौड गई। आशाका प्रकाश सामने दीखने लगा। परन्तु फिर चित्त स्थिर हो गया। वह सोचने लगी जब भारतमें निवास करते हुए ही मुझे पददलीत कर दिया था तब योरोपमें रहकर और पूर्ण स्वतन्त्रताका उपभोग करके मेरे समान साधारण स्त्रीको वे क्यों पूछेंगें? जो भी हो एकबार सासके घर जाना चाहिए। दर्शन मात्र तो हो जायगे।

इसी बीचमें करुणादेवीके पिता लालाराम बडारीके पास लाला रामचरणका पत्र आया कि सौभाग्यवती बहूको भेज दो, दयाबाबू आ गये। करुणादेवीकी माताने परमानन्द मनाया, दान पुण्य किया और ईश्वरसे प्रार्थना की कि अब पुत्रीके दुःखोंका अन्त हो। पुत्रीको समझाया कि पहलेकी बातोंको भूल जाओ।

भारतीय रमणी पतिके दोषों पर दृष्टि नहीं डालती है, सदा पूज्य दृष्टिसे देखती है। दासीके समान परिचर्यामें लगी रहती है। वही पतिके सामने स्वर्गारोहण करती है। वही लक्ष्मी और सीता है। तुम निष्कपट भावसे पतिकी सेवा करना। उसी प्रेमसे विजय होगी। जब कि बनैले सुअर भी मनुष्यके वशमें

हो जाते हैं तो कुटुम्बियोंको वशमें करना क्या कठिन है ? उपदेश सहित नाना प्रकारके वस्त्राभूषण उपहारमें देकर पुत्रीको ससुराल भेज दिया।

करुणादेवी यथासमय अपने घर पहुँच गई। सास ससुरके चरणोंमें प्रणाम कर आशीर्वाद ग्रहण किया। तदनन्तर अपने घरकी संभाल ली। सासकी वृद्धावस्थाके कारण गृहस्थमें जो त्रुटि रह जाती थी उनको पूरा किया। तथा अपनी सेवासे सास और कुटुम्बके अन्य व्यक्तियोंको सुख पहुँचाने लगी।

यद्यपि दयाबाबू भी हृदयसे अब अप्रसन्न न थे तथापि पत्नी करुणादेवीसे मिलनेमें उनको झझक लगती थी। वे अधिकतर बाहर ही रहा करते थे।

नागरिक लोग उनसे विलायतका हाल-चाल पूछने आते थे। बातें करते-करते वे कभी खिन्न हो उठते और कभी हंस देते थे।

इसी प्रकार कई सप्ताह बीत गये पर दयाबाबू करुणासे न मिले। एकांतमें एकबार स्वयं ही करुणादेवीने बोलना प्रारम्भ किया।

करुणादेवी—आप बाहरवालोंको तो सब बातें बताते हैं कुछ हमलोगोंको भी बताइये। क्या अभी तक स्त्रियोंसे लज्जा बनी रहेगी ? इन बातोंको सुनकर दयाबाबूने भर नजर अपनी पत्नीकी ओर देखकर सोचा—

ओह! क्या करुणादेवी साक्षात् करुणाकी मूर्ति ही है? आह! क्या यह विचित्र लावण्य है, कितनी पवित्र तपस्या है, कितना पतिप्रेमका आदर्श है। इन बातोंसे उनका हृदय गूंज उठा। सहसा जिह्वाका बन्धन टूट गया, शरीर कांपने लगा, दोनों हाथ स्वयं जुड़ गये और बोले—मैं तुम्हारा अपराधी हूं, पापी हूँ, क्या हाल बताऊं क्षमा करो।

इसबार करुणादेवी पतिके चरणोंमें गिर पड़ी, दयाबाबूने उठाकर हृदयसे लगा लिया। भारतीय पतिव्रतने पति पर विजय प्राप्त की।

(५४)

फूहड़-प्रसूति

रामकलीको सातवां महीना था, उसकी सास बड़े चावसे दिन गिन रही थी, जब नौवां महीना लगा तो तैयारियां भी करने लगीं। घरके पुराने मैले कुचैले कपड़े निकले व टूटी हुई छोटीसी खाट निकालकर प्रसूति-गृहमें रख दी।

रामकली—मांजी! खाट तो बडी छोटी है इसका क्या कीजिएगा?

सास—तू तो इतराती है। खाट जापेके लिए निकाली है। क्या तू जानती नहीं है? छोटी काहेकी हैं, कहीं सोवडमें बडी बडी खाटें दी जाती है?

रामकली—मांजी, कोठरीमें तो बडा अन्धेरा है। जरा भी वायुका आवागमन नहीं होता है, न प्रकाशका प्रवेश है। आजकल तो पुस्तकोंमें लिखा रहता है कि जिस घरमें खिडकी हो, रोशनी हो वहां जापा करना चाहिए। वरन् मस्तक बिगड जाता है, स्वास्थ्य खराब हो जाता है।

सास—कलयुगी बहू! मरजीमें आये सो तू कर लें। मैं तो किसी यात्रापर चली जाऊंगी। क्या मेरे बच्चे नहीं हुए थे, मुझे क्या समझती है? मैं तो इस कोठरीमें भी सर्दीके मारे बीमार हो गई थी तब दवासे अच्छी हुई।

रामकली—क्षमा कीजिये, मैं न बोलूंगी। आप घरमें

रहकर अपना सब काम कीजिए । बस इतना बता दीजिए कि उस हंडियामें क्या रखा है, इसका क्या उपयोग होगा ?

सास—हर चीजको ऐसे पूछती है जैसे डाकघरनी हो । क्या तुने डाकघरी सीखी है । सुन, हंड़ियामें सेरभर अजवाइनकी धूनी है । हमारी सासने तो इससे भी ज्यादा जलाई थी ।

रामकली—अजी, आप जाड़ेकी बात कहती होगी । जाड़ेमें ये चीजें वास्तवमें लाभदायक हैं, परन्तु गर्मीमें ये चीजें बडी हानिकारक हैं । इससे धुआं और भी दूषित हो जायगा । इन बातोंको सासने सुना-अनसुना कर दिया । और अपने कमरेमें चली गई । इसी प्रकार कई दिन भिन्न-भिन्न विषयोंपर सास बहूका विवाद होता रहा । अन्तमें एक दिन वह भी आ गया कि रामकलीको प्रसूति पीडाका अनुभव होने लगा । इस समय सासकी खुशीका पारावार न रहा । उसने अपने कुलदेवताओंके नाम पर बोलारियां बोल-बोल कर रुपये पैसे उठाने किये । कहीं सैय्यदकी पूजा, कहीं भवानीकी आराधना की । इधर बहूकी पीडा बढ़ती ही गई परन्तु बच्चा होनेका आसरा नजर न आया । तब पास-पडोसकी योग्य बहनोंने कहा कि बहन, तुम्हारी बहूको बहुत कष्ट है । किसी डाक्टरको या वैद्यको बुलाकर दिखा दो, अन्यथा नुकसान होना संभव है।

पहले तो उन्होंने बहुत नाक मुंह सिकोड़े । परन्तु मामला बेकाबू समझकर अपने पुत्रको आज्ञा दे दी कि डाक्टरिनको बुला लाओ । और वे आ भी गई ।

डाक्टरिनने देखभाल कर कहा कि बालक पेटमें उल्टा है। इसे ठीक करना होगा, तब यह प्रसूति निवटेगी। इस बातको सुनकर सासजी तार-तार खिल उठी। उन्होंने कहा—डाक्टरिनजी! मैं आपसे हाथ जोड कर कहती हूं कि मेरी बहूके हाथ न लगाइये। अपने भैरो बाबाको जगाती हूं। देखो अभी बालक सीधा हो जायगा। और वह सीधा ही है। आपको पेटके भीतरकी हालत क्या मालूम हो सकती है?

डाक्टरनी—बहूजी, मुझे मालूम हो गया है। बालक उल्टा ही है और वह सीधा किसी तरह नहीं हो सकता है। हां मैं सहायतासे उसे जनवा दूंगी।

सास—नहीं नहीं आप कुछ न करिये, जरा मेरे भैरोको तो देख लीजिए।

डाक्टरनी चुपचाप बैठ गई। इधर बहूकी पीडा बढ़ने लगी।

रामकली—डाक्टरनी बचाओ-बचाओ मैं मरी, मेरा दम निकल जायगा। इतना कहकर बेहोश सी होने लगी। तब डाक्टरनीने बहूजीका कहना टाल दिया और अपना काम शुरू किया। किसी तरह मामूली औजारोंसे बच्चा जनवा दिया। रामकलीकी पीडा दूर हुई। लड़का हुआ, लड़का हुआ कहकर सब घरवाले उछलने लगे। मिठाइयां बंटने लगीं, बधाइयां मिलने लगीं।

सासने डाक्टरनीका पैर अच्छा गिना। अब लगी धूनी देने। चारों ओर धुआं और आग नजर आने लगी।

डाक्टरनी—बहूजी, यह क्या करती हो? धुआंसे बच्चेका गला घुट जायगा। गर्मीका मौसम है। आपका प्रसूति घर बड़ा खराब है। मिस्त्री बुलवाकर अभी इसमें खिड़की फुड़वाओ। अथवा बहू–बच्चेको दूसरे कमरेमें ले जाओ, अन्यथा पछताओगी। बहू व बच्चा दोनों ज्यादा दर्दके कारण बहुत कमजोर हो गये हैं।

सास—डाक्टरनीजी! आप क्या कहती हैं, क्या हमारे बच्चे नहीं हुए हैं। हमसे यह अनीति न होगी। जो काम देखा है वही करेंगे। चाहें आप सिर पटकें या बहू।

डाक्टरनी बेचारी बड़बड़ाती हुई अपने घर चली गई। इधर बहूजीका वही क्रम जारी रहा।

डाक्टरनी और बहूजीकी बकझक बाबूजीने भी सुन ली थी। अतएव वे ऊपर आकर पत्नीसे कहने लगे—जो कुछ डाक्टरिन कह गई है करना होगा। यह धुआँ–धक्कड़ हटा दो, इतना कह उन्होंने वहांसे सब हटा दिया। अस्तु! आजका दिन इसी तरह व्यतीत हुआ। इधर बहूजीके गुस्सेका पारा दिनोंदिन बढ़ता ही गया। उन्होंने दूसरे दिन प्रातःकाल जबकि बाबूजी बाहर गए थे अपना प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया।

जिस प्रकार शराबी नशेमें आकर और अधिक पी लेता है उसी तरह बहुतसी धुनी लेकर और एक अंगीठीमें भरकर

उन्होंने प्रसूति गृहमें डाल दी व बहूके बकने झकनेके डरसे किवाड बन्द कर दिया। बस धुआंसे दम घूटने लगा। शिशु व प्रसूताकी अवस्था बुरी हो गई। वह बडे जोरसे चिल्लाई। खोलो खोलो मर जांयगे, तब सासने किवाड खोला। रामकलीने कोसते कोसते अंगीठीमें पानी डाल दिया, परन्तु शिशुकी दशा देखकर वह अपनी पीडा भूल गई। शिशु घण्टों कराह-कराहकर रोता रहा। अन्तमें ससुरजी आ गये, उन्होंने डाक्टरको बुलाया डाक्टरने देखकर बताया—बड़ा अफसोस है, लडकेकी आंखें फूट गई हैं। अब रोशनी आना असंभव है। ससुरजी गिड-गिडाने लगे। डा० ने आश्वासन दिया और दवा देकर और फीस लेकर चलते बने।

इधर बहूजी और बाबूजीमें युद्ध छिड गया। पहले वाक्-युद्ध हुआ फिर केशा-केशी युद्धकी नौबत आ गई, तब घरके बाल-बच्चोंने बीच-बिचाव कर दिया। सास—ससुरकी कलह देखकर रामकली भी चुप हो गई। बच्चेकी आंखोंमें दवा डाली गयी तो वह भी चुप हो गया। अब रामकलीको कोई भी कष्ट न था। उसकी सोवडकी देख-रेखके लिए उनकी एक ननद बुला ली गई। वह बड़ी चतुर थी, उन्होंनें माताकी मूर्खतापर पश्चात्ताप किया।

६ दिन व्यतीत हो गए। रामकलीने छट्ठीका स्नान किया, वस्त्राभूषण भी पहने, पूजा मंसी भी हो गई, परन्तु जो स्त्रियाँ इधर उधरसे आई थीं आपसमें काना-फूसी करने लगीं।

वे कहने लगी—अरी इसका पोता यो अंधा है। कोई कहती—अरी रामकलीका बेटा तो अंधा है।

रामकलीकी सासको अपने पोतेकी बुराई अच्छी न लगी। वह सबको कोसने लगी और कहने लगी—तुम्हारे ही बच्चेकी आंखें फूट जाय।

नोट—पाठिका बहनोंको उपर्युक्त कथासे सचेत होना चाहिए। प्रसूतिके समय हठ व लोभ नहीं करना चाहिए। अच्छी जानकार जनानेवालीको बुलाकर अच्छे कमरेमें सोवड करानी चाहिए। यह कैसी मूर्खता है कि छठी व दष्टौनमें हजारों रुपये खर्च करें बच्चा-बच्चाके लिए जन्म समय तंगी करें, ऐसा न होना चाहिए।

(१५)

पद्मश्री

मिथिलापुरीके राजा मदनसेन बड़े नीतिज्ञ ज्ञानवान् तथा बुद्धिमान् थे। उनकी एक पद्मश्री नामकी कन्या थी। वह कन्या रूपलावण्यमें अद्वितीय थी। जैसी रूपवती थी वैसी ही बुद्धिमती और विदुषी थी। जब यह कन्या चौदह सालकी हो गई तब राजाने इनके लिये अलग महलमें रहनेकी आज्ञा दी और पद्मश्री दासियों सहित रहने लगी।

इसी नगरीमें एक जिनदत्त नामके सेठ रहते थे। ये बड़े धर्मात्मा थे। इनके तीन पुत्र एवं चार पुत्रियां थीं। सबसे छोटेका नाम प्रभाचन्द्र था।

एक दिन प्रभाचन्द्र बागकी सैर करने जा रहा था। इसी समय राजकुमारी पद्मश्री पर उनकी नजर पडी जो जिनमन्दिरको दर्शनार्थ जा रही थी। वह उसपर मोहित हो गया क्योंकि उसने ऐसी रूपवती कन्या पहले कभी नहीं देखी थी।

वह बागमें न जाकर उल्टा घर आ गया और चुपचाप अपने कमरेमें लेट गया। माता जब जलपान कराने गई तो प्रभाचन्द्रको उदास देखकर कहने लगी—बेटा! आज तू ऐसा उदास क्यों है? सब तेरे लिए है यदि तू चाहे तो प्राण तक देनेको तैयार हैं। फिर ऐसी क्या बात है? माताकी बात सुनकर

प्रभाचन्द्र बोले—माताजी ! मेरी उदासीका एक कारण है, परन्तु वह होना कठिन है, तभी तो इतना उदास हूं ।

माताने कहा—भला कहो तो सही, ऐसी क्या बात हैं, मैं यथाशक्ति उसको पूरा करनेका प्रयत्न करूंगी, कह तो सही।

यह सुनकर प्रभाचन्द्र बोले—मैं आज जब बागकी सैर करने जा रहा था तो मैंने राजा मदनसेनकी लड़की पद्मश्रीको देखा। सो माताजी ! मैं या तो उससे शादी कराऊंगा या आत्मघात कर लूंगा। प्रभाचन्द्रका यह उत्तर सुनकर माता सहम गई और सोचने लगी कि हे भगवान् ! यह आज क्या कुमति सूझी है ? भला राजा अपनी कन्या हमारे यहां क्योंकर ब्याहेगा ? फिर प्रभाचन्द्रसे बोली—बेटा प्रभा, कुछ विचारसे काम लो। इतना बड़ा प्रण एकदम कैसे कर लिया ? भला कहां वे इतने बडे राजा और कहां हम एक साधारणसे आदमी। यह कन्या मिलनी अति कठिन है। संसारके विषयभोग तो काले सर्पके समान हैं। यह वर्तमान जीवन थोड़ेसे समयका है, उसका निर्बाह जैसे चाहें हो सकता है। यदि पूर्वोपार्जित पुण्यकर्म है तो परिश्रम तथा चिन्ता न करते हुए भी मन चाहे विषयभोग अवश्य मिलेंगे अन्यथा नहीं।

खैर, जो भी हो इस जन्मका निर्वाह तो किसी प्रकार भी हो सकता है, क्योंकि बहुत ही थोडे समयके लिए यह रहता है। किन्तु आगामी भवोंमें चिरकाल तक भ्रमण करना हैं, इसलिए उनके सुधारका या उनसे छुटकारा पानेका

प्रयत्न करो। ऐसा पुण्य उपार्जन करो कि जिससे आगामी भवमें ऐसी ऐसी सुन्दरियां तेरी दासी होकर रहेंगी। व्यर्थ ही आत्मघात करनेसे क्या प्रयोजन?

अरे बेटा! इस जन्ममें तो इतनासा दुःख सहन करनेमें असमर्थ होकर प्राण त्यागता है तो जब आत्मघातके पापसे नरकमें जायगा तो वहाँ भी घोर यातनाएं किस प्रकार सहन करेगा? वहाँ जबतक भी आयु बांधी हो तब तक घोर वेदना सहन करनी पड़ती है। चाहे जितना छूटना चाहो छूट नहीं सकते।

प्रिय पुत्र! तुम इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करो, न कि इन्द्रियोंके गुलाम बनो। क्या जाने इससे भी सुन्दर कन्या तुम्हारे भाग्यमें हो। फिर यह कहांकी बुद्धि, भावी और वीरता है। कायरताको छोड़कर धीरवीर बनो और इस नश्वर शरीरसे ऐसी तपस्या करो जिससे पापकर्म हटकर पुण्यका संचय हो। आत्मघातका विचार कभी न करना।

माताके इस महत्वपूर्ण उपदेशका प्रभाचन्द्र पर कुछ भी असर न हुआ। "चाहे जो भी हो मैं उसीके साथ शादी करूंगा, ऐसा उसका कहना था।" माताने फिर कहा—बेटा! इस हठको छोड़ दे अन्यथा राजा अपनी कन्याके बदले तुझे दण्ड देगा। फिर तेरी सहायता कोई न करेगा।

प्रभाचन्द्र मातासे निरुत्तर होकर पिताके पास गया और सारा वृत्तांत कहा—लेकिन पिताने भी कह दिया कि मैं तेरी

कोई सहायता न करूंगा। इसीप्रकार क्रमशः दोनों भाई-बहन आदि तमाम रिश्तेदारोंसे उसने सहायता मांगी परन्तु सबने बिल्कुल सूखा उत्तर दे दिया।

प्रभाचंद्र इसी कोशिशमें लगा रहा। एक दिन रात्रिके समय जब कि १२ बजनेवाले थे, प्रभाचन्द्र राजकुमारीके महलके पास गया और जैसे-जैसे बारहके घंटे बजे उन घंटोंकी गूंजमें एक-एक कील गाडता गया। उन कीलोंपर पैर रख-रखकर वह महलमें चला गया।

राजकुमारी पद्मश्री नींदमें बिल्कुल गाफिल थी। प्रभाचंद्रने अपनी अंगूठी उसे पहना दी और उसकी अंगूठी निकालकर स्वयं पहन ली। और घर वापस आ गया। सुबह उठकर ज्यों ही पद्मश्री हाथ धोने लगी उसकी नजर अंगूटी पर पड़ी। वह सोचने लगी कि मैं तो बड़े बड़े पहरोंके बीचमें रहती हूं। यह कार्य किस प्रकार हो गया। ऐसा कौन शूरवीर है जो मेरे महलमें आनेका साहस रखता है। अस्तु! आज मैं अकेली ही तमाम रात्रिको जागती रहूंगी। फिर देखूंगी कि कौन आता है।

ऐसा विचार कर रात्रि होने पर दृढ़ होकर बैठ गई। १२ बजे प्रभाचन्द्र पहलेकी तरह आ धमका। पद्मश्रीने पूछा- तुम कौन हो? किस अभिप्रायसे रात्रिके समय मेरे महलमें आते हो?

प्रभाचन्द्र एकबार सन्नाटेमें आ गया और फिर साहस कर बोला-मैं आपसे शादी करना चाहता हूं। मैं जिनदत्त

सेठका लड़का प्रभाचन्द्र हूं। मेरे यह प्रण है कि मैं शादी आपसे करूंगा, अन्यथा प्राणघात कर लूंगा।

पद्मश्री कुछ विचार कर बोली—कहांतक पढ़े हुए हो?

प्रभाचन्द्र—कुछ संस्कृत पढ़ा हुआ हूं।

पद्मश्री—अच्छा, मेरे पांचसौ श्लोक संस्कृतके ४९ दिनमें कंठस्त कर लोगे तो मैं तुमसे शादी कर सकती हूं।

प्रभाचन्द्र बहुत खुश हुआ और विचार किया कि आज ही-से श्लोक कंठस्त करूंगा। राजकुमारीने उसको १० श्लोक बता दिये और कहा कि ये श्लोक कल मुझे सुना देना और आगेके मुझसे ले जाना।

प्रभाचन्द्र सहर्ष घर लौट गया। वह इतना प्रसन्न था मानों उसे आज कोई निधि मिल गई हो। वह खूब मन लगाकर श्लोक याद करने लगा। नित्य रात्रिके समय इसी प्रकार जाता और पवित्र हृदयसे गुरु शिष्यकी भांति सुनाकर आ जाता था। वह एक—एक दिन गिन—गिन कर निकालता था और ४९ वां दिन आनेकी प्रतीक्षा व्यग्रतासे करता रहा।

जब ४९ वाँ दिन आया तो प्रभाचंद्र जैसे ही महलमें चढ़ने लगा कोतवालने पकड़ लिया और डपटकर पूछा—तुम कौन हो? किसलिए महलमें जाते हो? क्या चोरी करने जा रहे हो या बदमाशीकी नियतसे जाते हो?

प्रभाचन्द्र गिडगिडाकर बोला—मैं राजकुमारीसे पढ़ने जाता हूं, चोरी करने तो नहीं जाता। मैं जिनदत्त सेठका लड़का

हूँ। मुझे आज छोड़ दो क्योंकि आज मेरे श्लोक पूरे होनेवाले हैं फिर पकड लेना। मैं सौगन्ध खाकर कहता हूं कि मैं स्वयं ही तुम्हारे पास आ जाऊंगा, क्योंकि मुझे मरना तो जरूर है। यदि आजके दिन मुझे माफ न किया तो मेरे मनमें अरमान रह जायगा।

कोतवाल बोला—मैं इस प्रकार तुम्हें हरगिज न छोड़ूंगा, तुम झूठ बोलते हो? क्या कोई और पढ़ानेवाला नहीं हैं? राजकुमारी ही पढ़ा सकती है? वो भी आधी रातके समय? बिलकुल गलत है। मैं राजाके सामने पेश किये बिना न छोड़ूंगा।

प्रभाचन्द्र कांपने लगा। और सोचने लगा कि हाय! आज अंतकी रात्रिमें ही पकड़ा गया। किया हुआ परिश्रम सब व्यर्थ गया। उसने फिर कहा—"मुझे एक घंटेकी छुट्टी दीजिए, मैं आपको जमानत दिलवा दूँगा। मैं हाथ जोडता हूँ। आजकी जमानत ग्रहण करो, कल सुबह ही मैं तुम्हारे पास आ जाऊंगा।

कोतवालने मंजूर किया।

प्रभाचन्द्र सभी रिश्तेदारों एवं माता-पिताके पास गया कि मेरी ५००) पांच सौकी जमानत कर दीजिए। तुम्हें नहीं देने पडेंगे। केवल कहना मात्र ही होगा। क्योंकि मैं तो स्वयं मरना चाहता हूं, मैं हरगिज न छिपूंगा। परन्तु सबने इन्कार कर दिया।

माताने कहा—मैंने तुम्हें कितना समझाया था किन्तु तुम न माने। आज वह दिन आ गया। अपने कियेका फल भोगो।

प्रभाचन्द्र सबसे निराश होकर अपने मित्र सुधीरबाबूके पास गया और अपना सारा हाल कह सुनाया।

उसने कहा—पांचसौ रुपये क्या चीज है, मैं तो एक हजार रुपया देकर भी तुम्हें छुड़वा दूँगा।

प्रभाचन्द्रने कहा—नहीं, आपको एक पैसा भी नहीं देना पड़ेगा, सिर्फ कहना मात्र है। सुधीरबाबूने बहुत आग्रह किया पर प्रभाचन्द्र नहीं माने। अन्तमें सुधीरबाबूने पांचसौकी जमानत दे दी।

जमानत पूरी करके प्रभाचन्द्र फिर महल पर चढ़ गया। उसके पीछे पीछे कोतवाल भी इस खातिर चढ़ गया कि देखूं यह क्या करता है? प्रभाचन्द्र नित्यकी भांति हाथ जोड़कर श्लोक सुनाने लगा और आगेको ले लिये। कोतवाल सोचने लगा कि वास्तवमें ये दोनों पवित्र हृदयके हैं।

पद्मश्रीने पूछा—आज इतनी देर कहाँ लगाई? ऐसे भयभीतसे क्यों हो? तब प्रभाचन्द्रने बताया कि "आज मैं पकड़ा गया था, कोतवालको जमानत देकर आपकी आज्ञा पूरी करने आया हूं। मैं कल जरूर मारा जाऊंगा। परन्तु अफसोस है कि आप तो किसी राजकुमारके साथ शादी करके आनन्दमें रहेंगी। तथा आपके लिए मैं इतनी आपत्तियाँ झेलकर मारा जाऊंगा। खैर!

अब मैं अपने अपराधोंकी क्षमा चाहता हूं, यदि कुछ अज्ञानतामें हो गये हों।"

इतना कहकर प्रभाचन्द्र जाने लगा तो पद्मश्रीने कहा—

श्रेष्ठिपुत्र ! तुम निराश न हो, यदि मेरे लिए तुम प्राण त्यागते हो तो मैं भी सुखी न रहूंगी। आजसे तुम मेरे पति हो। मेरा भी यह प्रण है कि शादी तुम्हारे ही साथ करूंगी, यदि तुम इस आपत्तिसे निकल गये। अन्यथा मैं अपने जीवनको नीरस बनाकर ब्रह्मचर्य ही ग्रहण करूंगी।

प्रभाचन्द्रने कहा—न जाने आप कैसे रहेगीं ! मैं क्या देखने आऊंगा !

पद्मश्रीने कहा—यदि तुम्हें विश्वास नहीं है तो तुम्हें ही दिखाऊंगी।

ये बातें कोतवालने भी सुनीं। वह प्रभाचन्द्रसे पहले ही उतर आया। सुबह होते ही प्रभाचन्द्र राजाके सामने लाये गये। और सारा वृत्तांत कह सुनाया गया। राजाने महलमें रात्रिके समय जानेके अपराधमें फांसीका हुक्म दिया। जब फांसीका नियत समय आया तो प्रभाचन्द्र वहां लाये गये। उधर राजकुमारी पद्मश्रीने भी अपने समस्त आभूषण उतार डाले और साधारण वस्त्र पहनकर, केश बिखेरकर, घोड़ेपर सवार होकर उस स्थानपर पहुँची। प्रभाचन्द्र अब फांसीपर लटकाया जानेवाला था। वहां कोतवाल तथा अन्य कर्मचारीगण उपस्थित थे।

पद्मश्रीको ऐसे वेशमें देखकर कोतवालका हृदय दहल गया। वह राजाके पास गया। उसने पद्मश्री और प्रभाचन्द्रकी जो बातें छिपकर सुनी थीं उन्हें बता दिया, और बताया कि ये दोनों बिल्कुल पवित्र हृदय हैं। पद्मश्री अब और किसीसे शादी न करायेगी, यह निश्चय रखें। आप स्वयं जाकर देखलें।

यह बात सुनकर राजा स्वयं वहां गए तथा राजकुमारीको वहाँ उपस्थित पाया।

राजाने पद्मश्रीसे पूछा—तुम यहां क्यों आई? किस प्रयोजनसे तुमने ऐसा ढंग किया है?

पद्मश्री हाथ जोड़कर बोली—पिताजी! आप जिस व्यक्तिको फांसी दिलवाते हैं, उसको देखनेके लिये मैं यहां आई हूँ। क्योंकि इसको मैं अपना पति मान चुकी हूं। यह मेरी प्रतिज्ञा है कि मैं इनके सिवाय किसी औरसे शादी न करूंगी। फांसी दी जायगी अतः इस समय जो दशा पतिको देखकर पत्नीकी होती है वही मेरी है।

पिताने कहा—कैसे तुमने इसे अपना समझा? क्या कारण है कि बिना मेरे कहे तुमने इससे अपना सम्बन्ध कर लिया? कुलीन पुत्रियोंका धर्म है कि माता-पिता जिसके साथ शादी कर देते हैं लड़की उसीको स्वीकार करती है। तुम कैसी निर्लज्जतापूर्वक बातें करती हो? नहीं मैं कभी ऐसा नहीं करने दूंगा।

पद्मश्री—पिताजी! यह बिलकुल सत्य है कि लड़कियां अपने मुंहसे यह नहीं कहतीं कि मैं अमुक व्यक्तिसे ही शादी करूं, परन्तु इस लज्जामें यदि एक मनुष्यकी जान जाती है और यदि वह अपने ही आधार हो तो उस दुःखको मिटानेके लिए प्रथम कर्त्तव्य है कि यथाशक्ति चेष्टा की जाय। भले ही इसमें अपनेको कष्ट उठाना पड़े। अब तक इसका मेरा व्यवहार गुरु-शिष्योंका रहा है।

मैं शपथ खाकर कहती हूँ कि यह बिलकुल निर्दोष है। एक दिन यह अचानक मेरे महलमें आ गया तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। दूसरे दिन भी यह जब आया तो मैंने आनेका कारण पूछा।

इन्होंने बताया—"तुम मेरे साथ शादी करो अन्यथा मैं आत्महत्या कर लूंगा। तब मैंने कहा कि आप मेरे पांचसौ श्लोक याद कीजिए। तबसे अब तक यह बराबर श्लोक सीखता रहा, बादका हाल तो आपको मालूम ही है। आप चाहे जो भी दण्ड दें लेकिन मुझे कदापि मंजूर नहीं कि मेरे कारण इसकी जान जाय और मैं सुख-पूर्वक रहूं। मैं उसी तरह रहूँगी, जिस तरह पतिव्रता स्त्री अपने पतिके बाद रहती है। आप चाहें तो उससे सब बात पूछ लें।

राजा पद्मश्रीकी बात सुनकर स्तब्ध रह गया। सोचने लगा कि अब क्या करूं? मन्त्रीको बुलाया और पूछा।

मंत्रीने कहा—राजन् । आप व्यर्थ ही चिन्तामें डूब रहे हैं ।

प्रभाचन्द्रके साथ राजकुमारीकी शादी करनेमें क्या हर्ज है । संस्कृतज्ञ विद्वान है, फिर पांचसौ अमूल्य श्लोक भी इसके पास हैं, बुद्धिमान है, सत्यवादी है । वरमें होने योग्य जो गुण हों सो इसमें मौजूद हैं । केवल कमी इस बातकी है कि यह सेठका लड़का है । सो आप निसन्देह शादी कर दीजिए ।

मन्त्रीके वचनानुसार राजाने बड़े समारोहके साथ शादी कर दी । दम्पति सुखपूर्वक रहने लगे ।

प्यारी बहनों ! पद्मश्री प्रभाचन्द्रसे कह चुकी थी कि मैं तुमसे विवाह करा लूंगी । वह अपनी प्रतिज्ञापर अटल रही अन्यथा किसी और राजाके घर जाकर सुख भोगती । राजाने उसे छोड दिया । और उसने पतिसुख देख लिया अन्यथा आजन्म कुआरी रहती । आर्य महिलाओंका यही कर्त्तव्य है । जबकि केवल वचनसे कहने मात्रसे दूसरा विवाह नहीं कराया जाता तो फिर शादी होकर कई साल साथ रहनेपर भी किस प्रकार पुनर्विवाह हो सकता है ? कदापि नहीं कराना चाहिए ।

—श्रीमती गुणमालादेवी जैन ।

(१६)

डेनाकी वीरता

किसी समय दो राजकुमार जोनले भाई थे। एकका नाम एक्रीसस और दूसरेका नाम प्रोटियस था। अतः दोनों भाई आरगसके सुरम्यमई बड़े२ पहाडी प्रदेशोंके हरे-भरे मैदानोंके बीच रहते थे। उनके पास सुन्दर सुन्दर हरियाले चारागाह अंगूरोंकी गाडियां, बैल, हजारों घोड़े, मनुष्योचित समस्त सुखकी सामग्री एकत्रित थी।

इतना ऐश्वर्य होते हुए भी दोनों भाई भाग्यहीन थे। इसलिए कि वे एक दूसरेसे द्वेष करते थे। जबसे वे दोनों भाई पैदा हुए थे, बराबर लडा झगड़ा करते थे। जब वे बड़े हो गये तो एक दूसरेके राज्यको अपने आधीन कर लेना चाहते थे। प्रथम एक्रीससने प्रोटियसको राज्यसे निकाल दिया और उसके राज्यको अपनेमें मिला लिया।

प्रोटियस समुद्र पार करके विदेशोंमें घूमा तथा एक अन्य राज्यकी राजकुमारीसे विवाह करके कुछ योद्धाओंको अपनी रक्षार्थ वहांसे साथ ले आया और युद्ध होनेपर प्रोटियसने एक्रीससको हरा दिया।

दोनोंमें कईबार युद्ध हुआ, कभी पानी पर और कभी जमीन पर। अन्तमें युद्ध समाप्त हुआ। एक्रीससने आरगस तथा आधी भूमि-संपत्तिमेंसे लिया। प्रोटियसने टाइरिन्स तथा

बाकीकी आधी भूमि–संपत्ति ली। कहा जाता है कि प्रोटियस और उसके योद्धाओंने टाइरिन्सके चारों तरफ बड़ी भारी पत्थरोंकी सुन्दर मजबूत दीवाल बनाई जो कि सुननेमें आता है कि अभी तक स्थित है।

पाषाण-हृदय एक्रीससके पास एक ज्योतिषी आया और उसने उसके विरुद्ध ये वाक्य कहे—क्योंकि तुमने प्रथम अपने ही भाईके विरुद्ध कार्य कर उसे निकाल दिया इसीलिए तुम्हारी ही सन्तान तुम्हारे विरुद्ध खड़ी होगी। क्योंकि तुमने अपने सहोदरको देश-निकाला दिया था, इसलिए तुम्हारे ही वंशज द्वारा तुम्हें सजा मिलेगी। आपकी पुत्री डेनासे पुत्र उत्पन्न होगा और उसीके द्वारा आपकी मृत्यु होगी। यही विधानका वाक्य है। अर्थात् ऐसा होना अवश्यंभावी है, और किसी प्रकार किंचित् मात्र परिवर्तन नहीं हो सकता।

ऐसी भाग्यकी लीला सुनकर एक्रीससको बडा भारी भय लगा, तौभी उसने सत्मार्गका अवलंबन न करके उल्टे हीं रास्ते पर चलना ठीक समझा। वह अपने कुटुम्बियोंसे निष्ठुर ही होता गया। अपने कुकृत्योंपर पश्चात्ताप करनेके बजाय वह आगेसे अधिक क्रूर कार्य करने लगा।

उसने अपनी सुन्दर डेना नामकी लड़कीको पृथ्वीके नीचेके तोपखानेमें बन्द करवा दिया। उसमें मोटी–मोटी पीतलकी छड़े लगी हुई थीं, जिससे कि उसमें कोई दूसरा व्यक्ति प्रवेश न करने पाये। उसने सोचा कि डेनाको तोपखानेमें बंद

करनेसे उसने अपना भविष्य अच्छा कर लिया। किन्तु उसे यह मालूम न था कि दैवाधीन कर्मोंकी विचित्र गतिको संसारमें कोई भी नहीं फिरा सकता है। अब हमको देखना है कि क्या एक्रीसस वास्तवमें निर्भय हो गया था?

कुछ समयके पश्चात् डेनाको एक अत्यन्त कोमल पुत्र-रत्नकी प्राप्ति हुई जो कि राजवंशी राजपुत्रके सब चिह्नोंसे परिपूर्ण चंद्रमाके समान कांतियुक्त था। एक्रीससके सिवाय कोई ऐसा व्यक्ति संसारमें नहीं था, जिसको इस सुन्दर बालक पर दया न आती। एक्रीससको स्वार्थवश दया कहां?

उसने डेनासहित उस नवजात शिशुको समुद्र तटपर भिजवा दिया और एक बडा संदूक मंगवाकर उसमें डेना और उसके बच्चेको रखकर समुद्रमें उसकी लहरोंकी दयापर छुडवा दिया कि चाहे जिस मार्गको वहाकर ले जावे।

उत्तरी—पूर्वी ताजी हवा नीले पर्वतोंसे उठकर आरगसकी घाटियोंको छूती हुई समुद्रमें चलने लगी। बेचारी अभागी डेना बच्चेसहित समुद्रकी तरंगोंमें हवाके समान बहती हुई अपने भाग्यके निर्दिष्ट स्थानको पहुँच रही थी। जो कोई उस संदूकको देखता था वही हृदयसे रोने लगता था, सिवाय हृदयहीन एक्रीससके।

संदूक बहती जा रही थी, लहरोंकी ऊंची, नीची टक्कर लगती थी, माताके हृदयसे चिपटकर बच्चा सोया हुआ था लेकिन बिचारी डेनाकी आंखोंमें निद्रा कहां थी। वह बच्चेको

देखकर रोती और आह–भर–भरकर गाती थी, जिसे आगे जाकर पाठक स्वयं समझ लेंगे।

अब पृथ्वीका हिस्सा पार हो चुका था। डेनाके चारों तरफ सिवाय समुद्र, ऊपर आसमान तथा हवाके कुछ भी नहीं था। किंतु समुद्रकी लहरें शांत थीं और आसमान भी स्वच्छ था तथा हवा बडी मंद–मंद चल रही थी।

एक रात एकदिन निकल गया, डेनाके लिए एक रात दिन बडे लंबे चौडे वर्षभरसे दिखाई देने लगे। दूसरा रात दिन भी निकला। लेकिन पृथ्वी दिखाई देनेके कोई चिह्न न दिखाई पड़े। डेना रोते रोते भूखसे अधमरी हो गई थी। बच्चा बराबर सो रहा था। आखिरमें बिचारी डेना भी बच्चेके साथ सर झुकाकर सो रही।

कुछ देरके बाद डेना यकायक जाग गई। सन्दूक लहरोंमें टकराने लगा। हवा बड़े जोरसे शब्द करने लगी। डेनाने ऊपरको देखा तो बडी–बडी ऊंची चट्टानें डूबते हुए सूर्यकी किरणोंमें लाल दिखाई देती थीं।

चारों तरफ डरावने पहाडोंके ढोहे और समुद्रके फैन दिखाई पडते थे। डेनाने अपने दोनों हाथ जोरसे बजाकर ईश्वरसे अपनी सहायताके लिए प्रार्थना की तथा जोर–जोरसे चिल्लाकर रोने लगी। डेनाके सहायता मांगनेपर सचमुच उसे कहींसे सहारासा दिखाई देने लगा।

चट्टानके ऊपर एक लम्बा सुन्दर मनुष्य बिचारी डेनाको

सन्दूकमें बैठी हुई समुद्रके हिलोरोंमें देखने लगा। यह मनुष्य एक लंबा चोंगा पहने हुए था। उसके सर पर एक टोपी थी जो उसे पानी और धूपसे बचाती थी। उसके हाथमें धनुष था, कंधों पर थैलीसी पड़ी थी। डेनाने इस मनुष्यको देखते ही समझ लिया कि यह कोई सामान्य मनुष्य नहीं है जिसके पीछे पीछे दो नौकर भी जा रहे थे।

डेना कठिनतासे उसे मात्र देख ही सकी थी कि इतनेमें उस मनुष्यने अपनी एक लंबी लकड़ीसे जिसके किनारेमें हुक लगी थी डेनाको सन्दूकको अटकाकर किनारे पर खींच लिया। तब उस मनुष्यने सन्दूकको खींचकर डेनाको अपने हाथके सहारेसे बाहर निकाला और कहा—

ओह, सुन्दर युवती! कैसी विचित्र घटना द्वारा तुम इस छोटीसी सन्दूकरूपी जहाजके द्वारा यहां पर लाई गई हो। तुम कौन हो? कहांसे आई हो? निश्चयसे तुम कोई राजपुत्री हो और यह तुम्हारा लड़का मनुष्यसा नहीं दिखाई देता, कोई देवपुत्र मालूम होता है।

जब वह बोल रहा था तो बच्चेकी तरफ संकेत करते हुये कहने लगा—देखो, इसका मुख प्रातःकालीन तारेके समान चमक रहा है।

डेना अपना सिर झुकाकर सिसक-सिसककर रोने लगी।

डेना—कृपाकर कहिये मैं कहां पर किस पृथ्वी भागमें

आ गई हूं। मैं स्वयं ही भाग्यहीन दुःखिनी हूं तथा मैं किस प्रकारके मनुष्योंमें आ पडी हूं?

मनुष्य—यह टापू साईप्रिस नामका है। मैं ग्रीकका रहनेवाला हूं लेकिन रहता यहां हूं। मैं पोलीडीक्री राजाका भाई हूं। लोग मुझे डीक्री कहते हैं।

डेना डिक्रीके पैरोंपर गिर गई तथा पैरोंको माथेसे लगाकर कहने लगी—

ओह महाशय! एक अपरिचित जीवकी रक्षा कीजिए। मुझे मेरा खोटा भाग्य आपके टापूमें ले आया है। आप मुझे अपने घरमें काम करनेके लिए रख लीजिए किन्तु मुझसे सभ्य व्यवहार रखिएगा। मैं किसी समयमें राजाकी लड़की थी और यह मेरा लडका भी मामूली वंशका नहीं है। मैं आपके पास भारस्वरूप नहीं रहना चाहती न मैं आलसी होकर निठल्ली रोटी तोडूंगी। मुझे कपडा बुनना वेलबूटेका काम करना मेरी देशकी बहनोंकी अपेक्षा अच्छा आता है। वह कुछ और कहना ही चाहती थी कि डिक्रीने उसको चुप रहनेको कहा तथा ऊपर उठा लिया।

ओह मेरी पुत्री! मैं वृद्ध हूं, मेरे सिरके बाल भी पक गए हैं, मेरे कोई बच्चा नहीं है जिससे कि मेरा घर सुशोभित होता। मेरे साथ चलो, मेरी पुत्री होकर मेरे घर रहना और यह बच्चा मेरा नाती होकर रहेगा। मैं सदैव बुरे कार्योंसे डरता हूँ तथा अपरिचित मनुष्योंका आदर करता हूं क्योंकि मैं अच्छी

तरह जानता हूं कि बुरे कार्योंकी भांति अच्छे कार्योंके भी अच्छा फल मिलता है। इस प्रकार बिचारी डेनाको सान्त्वना मिली। वह उसके घर रहकर पुत्रीवत् व्यवहार करती हुई १५ वर्षों तक रही।

बहनों! इस छोटीसी कहानीसे हमें बहुत बड़ी शिक्षा मिलती है। डेनाका साहस तथा वीरता सराहनीय है। ऐसे अगाध समुद्रकी लहरोंमें भी पड़कर उसने धैर्य नहीं छोड़ा। अपने शिशुको हृदयसे लगाये रही, तथा आपत्तिसे निकलने पर भी अपने आत्म-गौरवको नहीं भूली।

मेहनतकी रोटी खाना चाहती थी और सभ्य व्यवहारके लिए प्रार्थना करती थी। हम लोग थोड़ीसी विपत्ति आने पर धैर्यके हाथ धो बैठते हैं, बिना सोचे-विचारे अनेक कुमार्गोंका सामना कर लेती है। इसलिए डेनाकी वीरतासे वीर साहसी बननेका प्रयत्न करना चाहिए। विपत्ति आनेपर घबड़ाकर गुण्डोंके साथ भाग जाना, तथा उनका शिकार बनना उचित नहीं।

—व्रजबालादेवी जैन।

(१७)

मातृभक्त बालक

शिवचन्द्रकी वकालत अच्छी चल रही थी। इनके पिता रतनचन्द्रने बड़े परिश्रमसे अपने पुत्रको पढ़ाया लिखाया था। शिवचन्द्रने भी पिताको निराश होनेका अवसर नहीं दिया। योग्य पिताकी योग्य संतान बनकर पिताको सुखी कर दिया था। बचपनमें ही माताका देहांत हो जानेके कारण इन्हें मातृ सुखसे वंचित रहना पड़ा था, लेकिन पिताके दुर्लभ स्नेहको पाकर इन्हें किसी प्रकारका अभाव प्रतीत न हुआ। रतनचन्द्रने पुत्रके रहते दूसरा विवाह करना उचित न समझा और पूर्ण प्रयत्नसे शिवचन्द्रके लालनपालनको ही कर्तव्य बना लिना। जब शिवचन्द्रकी अवस्था १८ सालकी हुई तब पिताने बड़े हौसलेसे अपनी चिरसंचित अभिलाषाको पूरा किया।

काशीमें बाबू कमलाकान्तजीका नाम प्रतिष्ठित व्यक्तियोंमें लिया जाता है। कई हजारकी आमदनी है। शहरमें बना हुआ भव्य भवन और उससे मिला हुआ पाईबाग फूलोंकी सुगंधीके साथ२ उनकी कीर्तिको फैला रहा था। उनके दो पुत्र रमाकांत चन्द्रकांत और पुत्री सुधा थी। सुधाकी अवस्था १४ वर्षकी हो गई थी। इससे माता—पिताको विवाहकी चिन्ता हो रही थी।

कई स्थानोंपर वर देखे गये किन्तु मनोनुकूल कोई भी न निकला। कमलकांत पढ़े लिखे आदर्श विचारोंके थे अतः उन्होंने

संतानकी शिक्षामें विशेष सावधानी रखी थी। पुत्री सुधाको भी संस्कृत, धर्म तथा गृहकार्यकी शिक्षा भली-भांति दी गई थी। अतः सर्व गुण सम्पन्न पुत्रीको द्रव्यके लोभमें पड़कर अयोग्य वरके हाथ सौंप देना उन्हें सह्य न था।

संध्याका सुहावना समय था। वृक्षोंसे अठखेलियां करती हुई शीतल वायु चित्तको प्रफुल्लित करती थी। पुत्री-पुत्रोंके साथ बागके मध्यभागमें बने हुये चबूतरे पर बैठे हुये थे। इसी समय नौकरने रमाकांतके मित्रके आनेकी सूचना दी।

मित्रको देखते ही रमाकांतने हंसते हुये कहा—शिवचंद्र, अच्छे तो हो, इतने दिनों बाद कैसे मित्रकी याद आ गई?

शिवचन्द्र—भाई! पिताजीके एक आवश्यकीय कार्यके लिए आया था। सोचा तुमसे भी मिलता चलूं।

रमा०—इस वर्षकी परीक्षा कैसी रही?

शिव०—तुम्हारी दयासे अच्छी ही है, सेकेंड आया हूं।

रमा०—अब तो बी. ए. की डिग्री मिल गई, किधर जानेका इरादा है?

शिव०—पिताजीकी इच्छा वकालतकी है अतः उसीकी तैयारीमें हूं।

दोनों मित्र बात-चीतमें व्यस्त थे। कमलाकान्तने सुधाको जलपान लानेके लिए कहा। पिताकी अवस्थानुसार सुधाने तश्तरियोंमें मीठा नमकीन लाकर रमाकान्तके आगे रख दिया। रमाकांतने मित्रको जलपान कराया। सबको अभिवादन कर

शिवचन्द्र विदा हुए। उन्हें रातकी गाड़ीसे ही घर लौटना था अतः वे शीघ्र ही स्टेशन आ गए।

शिवचन्द्रके जाते ही कमलकांतने पुत्रसे कहा—रमा! शिवचन्द्र कहांके रहनेवाले हैं? इनके घरमें और कौन कौन है?

रमा०—पिताजी! शिवचन्द्रका घर प्रयागमें है। माँ बचपनमें ही इन्हें छोड़कर चली गई। पिताने दूसरा विवाह न कर इन्हींको बड़े प्रेमसे पढ़ाया लिखाया, अब वकालात करेंगे, पिताकी स्थिति साधारण है।

कमला०—यदि सुधाका विवाह इनके साथ किया जाय तो कैसा है? शिवचंद्रको देखकर मुझे तो बड़ी प्रसन्नता हुई है।

रमा०—हां, बहुत अच्छा है, शिवचंद्र सर्वथा हमारी सुधाके योग्य है।

कमला०—तो फिर तुम कल प्रयाग चले जाओ। इनके पितासे मिलकर बात-चीत करना। यदि कहीं ठीक हुआ होगा तो कठिनता है।

रमा०—हां, यदि कहीं निश्चित हो गया होगा तो मजबूरी है। नहीं तो मेरा प्रस्ताव स्वीकार करनेमें कोई आपत्ति न होगी।

दूसरे ही दिन रमाकांत प्रयागके लिए रवाना हो गए। एकाएक मित्रको आते देख शिवचन्द्रने विस्मित होकर पूछा—कहो मित्र! कुशल तो है?

रमाकान्तने हंसते हुए कहा—हाँ हमारी तो कुशल है परन्तु तुम्हारी कुशल नहीं है, तुम्हारी गिरफ्तारीका परवाना लेकर आया हूं। चलो पिताजीके पास ले चलो।

शिवचन्द्रके पिता रतनचन्द्र अपने कमरेमें कुर्सी पर बैठे हुए किसी सुखद कल्पनामें तल्लीन थे, उनके मुखपर आनंदकी झलक दीख पड़ती थी। रमाकान्तने प्रणाम किया, रतनचन्द्रने बड़े प्रेमसे बैठाया।

परस्पर रमाकान्तने मतलबकी बात उठाई। सुधाके रूप गुणकी प्रशंसा सुनकर रतनचन्द्र बहुत प्रसन्न हुए। बातचीत्तमें शिवचन्द्रकी मुखाकृति देख उन्हें स्वीकृति देनेमें कोई आपत्ति न दिखाई दी। रमाकांतको मानों स्वर्ग मिल गया। अपनी आज्ञाको फलवती होते देख किसे हर्ष न होगा?

जिस निश्चयको कल निर्दोष दृष्टिसे देख आये थे आज उसीको अपनी होते देख ईश्वरको बार बार धन्यवाद देने लगे। अस्तु! शीघ्र ही शुभ लग्नमें सुधा और शिवचन्द्र विवाह-बन्धनमें बंध गये।

विवाहके बाद कई साल महीनोंकी भांति कट गये, दंपति प्रेम-स्वरूप एक पुत्रकी प्राप्ति हुई। बालचंद्रकी भांति दिनेश दिन-दिन बढ़ने लगा। सुधाने बचपनसे ही उसमें भक्ति, प्रेम और सेवाका आदर्श कूट२ कर भर दिया था। जो कोई दिनेशको देखता चकित रह जाता।

तुतली बोलीमें जब वह माताके समीप बैठकर प्रार्थना करता तो भक्ति प्रेमसे गद्-गद् हो जाता। रातभर सुधाको बड़ी बैचेनी रही, प्याससे गला सूख रहा था, बार बार उठकर पानी पीती किंतु प्यास न बुझती। सुबह शिव० उठे तो देखा कि सुधाको बहुत ज्वर है। डाक्टर आये।

रोगीकी परीक्षा कर कहा कि निमोनिया हो गया है, दवा ठीक ठीक होनी चाहिए। शिवचंद्रके तो प्राण सूख गये किंतु किसी पर प्रकट न होने दिया। रात-दिन बैठकर दवा देते रहे। दो दिन बीत गए किन्तु ज्वरका वेग कम न हुआ। तीसरे दिन उसने और भयानक रूप धारण किया। डाक्टरने देखा तो मुंह सूख गया, उनके भावसे किसीको समझते देर न लगी।

कालकी गति विचित्र है। कौन जानता था कि दिनेशको मातृस्नेहसे वंचित होना पड़ेगा। स्नेहकी बढ़ती हुई धाराका प्रवाह असमयमें ही सूख जायगा। दिनेशकी अवस्था ८ वर्षकी थी। मांकी दशा देखकर उसे भी बड़ी वेदना हो रही थी।

वह चुपचाप मांके पास बैठ गया। सुधाने पतिकी ओर कातरदृष्टिसे देखा और कहा—नाथ! मैं अब थोड़े समयकी अतिथि हूं। मेरी बातोंको वृथा न समझियेगा। मेरे बाद दिनेशको किसी प्रकारका कष्ट न हो, इसका भली-भांति ध्यान रखियेगा। अभीतक पिता बनकर लालन-पालन करते थे, अब

मातृ-हृदयसे करना होगा। शिवचंद्रने कहा–प्रिये! जबतक दिनेश मेरी आंखोंके सामने रहेगा तुम्हारी प्रतिमूर्तिकी भांति दुगने प्रेमसे रखूंगा। संतान दंपति प्रेमका सुखदायी फल है। उसीको देखकर मैं तुम्हारे वियोगको सहन कर सकूंगा। इतना कहकर शिवचन्द्र फूट–फूट कर रोने लगा।

सुधाने दिनेशके सिर पर हाथ रखा। प्रेम और दुःखके कारण मुंहसे कोई बात न निकली। दिनेशकी दयनीय दशा देखकर किसका हृदय दुखित न होता था? देखते–देखते सुधाके प्राण–पखेरू उड़ गये। वेदनासे तडपते हुए शरीरको छोड अमर आत्माने नवीन शरीर धारण करनेके लिए प्रस्थान कर दिया। घरमें हाहाकार मच गया। संसारका कोई कार्य किसी समय रुकता नहीं। अस्तु! लोगोंने किसी प्रकार शिवचन्द्रसे अन्तेष्टि करवाई।

समय जाते देर नहीं लगती। दिनके बाद रात और रातके बाद दिन इसी प्रकार फेरा लगा करता है, चाहे कोई समयको घटाना चाहे अथवा बढाना चाहे, वह अपनी ही चालसे चलता है।

सुधाकी मृत्युको दो वर्ष बीत गये। शिवचंद्र दिनेशको ही देखकर धैर्य धारण करते थे, किंतु दिनेशकी अवस्थामें विचित्र परिवर्तन हो गया। सुधाकी मृत्युके बाद उसकी बाल-सुलभ चंचलता न जाने कहां चली गई।

पढ़ना-लिखना और दोनों समय एकांतमें बैठकर माताका

ध्यान करना यही उसके मुख्य कार्य हो गये थे। शिवचंद्र शक्तिभर उसे प्रसन्न करनेकी चेष्टा करते, किंतु मांके स्थानकी पूर्ति न हो सकी।

पड़ोस हीमें केशवप्रसादका मकान था। उनकी कमलाका संबंध धनाभावके कारण कहीं न लग रहा था। जिस दिनसे सुधा गई उसी दिनसे मन ही मन उन्होंने शिवचंद्रको दामाद बना लिया और कमलाकी चिंतासे छुटकारा पा गये।

नित्य ही किसी न किसी प्रकार शिवचंद्रके पास संदेशा भेजते। इधर इष्ट-मित्रोंने भी संसारके नमूने दिखला-दिखलाकर उन्हें बाध्य करना प्रारम्भ कर दिया।

रात्रिका समय था। शिवचन्द्र कई इष्ट-मित्रों या विवाहके दलालोंसे घिरे बैठे थे तथा विवाहकी चर्चा चल रही थी। विशेश्वरदासने खाँसते हुए कहा—अरे, अभी तुम लड़के ही हो, ३४-३५ वर्षकी आयु कुछ अधिक है ? मर्दोंके तो ६०-६० वर्षोंमें व्याह होते हैं।

शिवरामने कहा—और क्या ! कोई घर गृहस्थी सम्हालने-वाला भी तो चाहिए, यह रोज-रोजकी तकलीफ तो नहीं देखी जाती। कहा भी जाता है कि "बिन घरनी घर भूतका डेरा।" महावीरप्रसादने हांमें हां मिलाते हुए कहा—भाई ! मुख्य बात तो लड़कीकी थी सो लड़की पासमें तैयार ही है।

कमला रूप गुणमें सब तरह अच्छी है तथा केशवप्रसाद

करनेको तैयार ही हैं। जब कोई स्वयं ही आकर दे तो आयी हुयी लक्ष्मीको लात मारना भी अच्छी बात नहीं है।

विशेश्वरदासने कहा—भाई करना तो हमीं लोगोंको है, लज्जा-वश न कहते होंगे! 'मौनं सम्मत्ति-लक्षणम्' के अनुसार कार्यारम्भ कर देना चाहिए।

शिवराम—हां, ठीक है, बड़ोंकी बात माननेमें भलाई ही है। चलो भाई, रात बहुत हो गई, कल केशवप्रसादसे जाकर कह दिया जायगा। सभा विसर्जित हुई। आपसमें काना-फूसी करते हुए सब लोग विदा हो गए।

एकने कहा—बड़े ब्रह्मचारी बनते थे, दो ही सालमें अक्ल ठिकाने आ गई। अब तक किये होते तो गृहस्थी बसी होती। दूसरेने कहा-चलो अच्छा हुआ, एक दिन कचौरी मिठाई तो खानेको मिलेगी ही।

शिवचन्द्रने भी सोचा, क्या बुराई है, रोटी पानीका प्रबंध भी ठीक होगा, फिरसे घरमें सुख शांतिकी स्थापना होगी। दिनेशने भी नई मां के आनेका सुना। उसने सोचा शायद मां ही नवीन रूपमें फिरसे आयेगी, अतः उसे भी प्रसन्नता ही हूई।

कमलाके हर्षका पारावार न था। जो सखी सहेलियोंके एक-एक कपड़ेको देखकर तरसा करती थी वही आज गहनोंसे लदी हुई फूली न समाती थी। अपने घरकी स्वामिनी बननेका उसे बड़ा भारी गर्व हो गया।

थोड़े ही दिनोंमें घरमें पूर्णरूपसे शासन करने लगी। शिवचन्द्रकी अवस्था ही बदल गयी। जो दिन-रात कभी पुत्रको आंखोंको ओट न होने देते थे वही अब नई वधूके नये-नये चोंचले पूरे करनेमें तल्लीन हो गये। पत्नीने पुत्रके स्थानपर भी घर कर लिया। कमला जैसा कहती वैसा ही करते।

दिनेशने प्रथम दर्शनमें बड़ी भक्तिसे मांको प्रणाम किया था। किन्तु सरल ममतामय मुस्कानके बदले वक्र दृष्टिको देखकर ही उसका हृदय सहम गया। भक्तिके स्थानमें भयका प्रादुर्भाव हो गया। मातृ-स्नेहकी आशा सदाके लिए अन्तस्तलमें विलीन हो गई। कमला दिनेशके प्रति जो विषम भाव लेकर आई थी उसका दिग्दर्शन धीरे-धीरे होने लगा। नित्य ही एक न एक बातको लेकर क्लेश किया करती। शिवचन्द्र भी उसकी बातोंमें आकर दिनेशको ही डाँट-फटकार दिया करते थे। इन सब बातोंसे दिनेशका हृदय बिंध जाता।

अभागा मातृ-स्नेहसे पहले ही वंचित हो गया था, पिताके स्नेहसे भी हाथ धोना पडा। एक मात्र माताकी प्रतिमूर्ति ही मूक भावसे सांत्वना देती थी। उसीके सामने वह अपने हृदयकी सारी प्रसन्नता सारा दुःख बटोरकर आंसुओंके रूपमें चढा देता था। भक्तिके बलसे उसमें नवीन बलका प्रादुर्भाव होजाता था। उसीके सहारे धीरे-धीरे काल व्यतीत हो रहा था।

भाग्यचक्रके सामने मनुष्यको न जाने क्या-क्या कष्ट उठाने पड़ते हैं। दिनेशका इतना सुख भी उसे असह्य हो उठा। जिस दिन कमलाको पुत्र उत्पन्न हुआ उसी दिन दिनेशके भाग्यका अंतिम फ़ैसला हो गया। अब उसकी कोई आवश्यकता न थी। कमला चाहती थी कि वह किसी तरह आंखोंसे दूर हो जाय।

प्रातःकालका समय था, शिवचंद्र सवेरेकी ही नींदका आनन्द ले रहे थे दिनेश भी नियमानुसार माताकी मूर्तिके सामने बैठा हुआ प्रसन्न मुख हो ध्यानमें लीन था। ऐसा विदित होता था मानो सचमुच ही मातृ-सुखको पा रहा हैं। इसी समय क्रोधमें भरी हुई कमलाने किवाड़को खोलकर भीतर प्रवेश किया।

कमला कईबार उसे इस प्रकार ध्यानमग्न होकर बैठनेसे मना कर चुकी थी, वह जानती थी कि इसमें कोई मंत्र जंत्र है, इससे मेरा अनिष्ट हो जायगा। अतः आज फिर वही दृश्य देखकर उसके क्रोधकी सीमा न रही। उसने दिनेशके सामनेसे चित्र उठाकर खिडकीसे बाहर फेंक दिया। दिनेश पागलोंकी भांति दौड़ा हुआ सड़कपर आया और चित्रको उठाकर दौड़ने लगा। जिस घरमें मांका इतना अपमान हुआ उस घरमें पैर रखना उसके लिए असम्भव हो गया। कई मीलतक दौड़नेके बाद उसे यमुनाकी शीतल धारा बहती हुई दिखाई दी।

वृक्षोंके झुरमुट आगन्तुकोंका स्वागत करनेके लिए प्रसन्न-

तासे खडे थे । दिनेश भी एक वृक्षके नीचे जाकर गिर पड़ा । थकावटके कारण उसे कुछ सुध न थी । टूटे हुये कांचके गड़नेसे कई जगह हाथ कट गया था । सारे कपडे लाल धब्बोंमें रंगे हुये थे । न जाने कितनी देर बाद उसे होश हुई ।

वह अकचका कर उठ बैठा । उसने देखा कि उसकी मां साक्षात् उसके सिरहाने खड़ी है, दयापूर्ण नेत्रोंसे उसे देख रही है । भक्तिसे विह्वल होकर वह माताके चरणोंमें गिर पड़ा । माताने उठाकर हृदयसे लगा लिया ।

× × ×

भोजनका समय हो गया, पर दिनेश लौटकर न आया । शिवचन्द्रने पहले तो कुछ ध्यान न दिया, सोचा थोडी देरमें खुद ही आ जायगा । किन्तु जैसे-जैसे समय बीतने लगा उसे चिन्ता होने लगी, खाने बैठे तो कुछ खाया न गया । कचहरी भी न जा सके, संध्या तक राह देखी, किन्तु जब दिनेश लौटकर न आया तो इधर-उधर पूछ-ताछ की, कई आदमी दौड़ाये थानेमें इत्तिला कराई किन्तु कोई फल न हुआ ।

कमलाको कोई दुःख न हुआ । उसने सोचा चलो बला टल गई । जब शिवचन्द्र दिनेशका नाम लेते तो कहती-पाल पोसकर इतना बड़ा किया, जब कमानेका समय आया तो निकल गया । शर्म भी न आई । ऐसी बातोंसे शिवचन्द्र कुढ़ जाते, मनका दुःख क्रोध बनकर उबल पडता । उनकी आँखों परसे कमलाका नशा दूर हो गया था ।

जरा जरासी बात पर रोज ही चख-चख मची रहती। जिस पुत्रको सामने रहने पर चित्तसे भुला दिया था दूर होने पर प्रति-समय वही आंखोंके सामने फिरने लगा। जिस कमलाको अपनाकर वे सुखी हुए थे वही उन्हें कांटे समान प्रतीत होने लगी। घंटो बैठकर अतीत जीवनपर विचार करते तो ग्लानिसे उनका हृदय भर आता और सुधाकी प्रार्थना (अन्तिम) हजार डंकके समान उनके हृदयको बेंधने लगती। तब करुण रुदनको छोड़ दूसरा कोई निवृत्तिका मार्ग न दीखता।

× × ×

राजदरबार लगा हुआ था। सभी सामन्त अपने-अपने स्थानपर बैठे हुए थे। सारी प्रजा समुद्रकी भांति उमड़ी चली आ रही थी। किन्तु-राज्य सिंहासन शून्य था। एकाएक घंटेका शब्द हुआ, सभी लोग सावधान हो गए, कोलाहलके स्थानपर पूर्ण शांतिका साम्राज्य छा गया। मंत्रीने खड़े होकर "रानी फूलकुंवर" के आदेश पत्रको सुनाना प्रारम्भ किया।

मेरे राज्यके शुभ-चिन्तको! आज महाराजको स्वर्गवासी हुए ५ वर्ष व्यतीत हो गये तबसे जहाँ तक हो सका आप लोगोंकी सेवा कर रही हूं और आपने भी माताके समान भक्ति कर उसका प्रतिफल दिया है—

इस राज्यका कोई उत्तराधिकारी न होनेके कारण सबके हृदयमें बड़ा क्षोभ है, और किसी योग्य व्यक्तिको चुननेमें कई महानुभाव व्यस्त हैं। महाराजकी अन्तिम इच्छा थी कि मेरी

प्रजाकी पुत्रकी भांति रक्षा हो और ऐसे ही व्यक्तिको राज्य-भार सौंपा जाय। मैं महाराजके सामने वचनबद्ध हो चुकी थी इससे अब तक राज्य—कार्य कर रही हूं और थोडे दिनों तक और भी करती रहूंगी।

आप लोगोंको सुनकर हर्ष होगा कि आप लोगोंके शुभ भाग्यसे अनायास ही मुझे सवगुणोंसे युक्त १२ वर्षका बालक दैवने मिला दिया है। लगभग छः महीने हुए होंगे एक दिन यमुना स्नान करके लौटते समय रास्तेमें एक वृक्षके नीचे इसे पड़ा हुआ पाया। कुछ पूर्वजन्मके संबंधवश हठात् मेरा मन उधर ही खिंच गया।

पालकी खड़ी करवाकर मैं उसके पासमें गई और उसके भव्य रूपको देखकर तथा सब हाल सुनकर भाग्यकी प्रेरणा समझ अपने साथ ले आई। तबसे वह बराबर मेरे साथ रहता है और इसमें सभी राज्योचित गुण विद्यमान हैं। आज आप लोग भी देखकर अपनी सम्मति प्रदान करें।

नाना प्रकारके बहुमूल्य वस्त्राभूषणोंसे वेष्टित मातृभक्त दिनेशने दरबारमें प्रवेश किया। उसके तेजोमय मुखको देखकर सभी लोग रोमांचित हो उठे, प्रजाजनोंके हर्षका पारावार न रहा।

एक स्वरसे सबने रानीके प्रस्तावको स्वीकार किया। कुमारने भी सबको प्रणाम किया और राजगुरुने उन्हें राज-तिलक किया। आशीर्वाद देते हुए राजगुरुने कहा कि इस

बालकमें सब श्रेष्ठ लक्षण हैं। अभी अवस्था थोड़ी है इसलिए सात वर्षतक मेरे पास रह कर राजनीतिका ज्ञान प्राप्त करेगा। तथा आजसे इसका नाम "कुमार दिनेशप्रताप" हुआ। २० वर्षकी अवस्था होनेपर फूलपुरका राज्यभार ग्रहण कर प्रजाजनोंका पालन करेंगे। अपने रक्षकको पाकर सभी लोग हर्षित हुए और अपने-अपने घर विदा हुए। महलमें जाकर दिनेशने माताके चरणोंमें प्रणाम किया। माताने उठाकर हृदयसे लगा लिया। जिस प्रेमका निराकार रूप शेष रह गया था वही फिर साकार रूपमें दिनेशने पा लिया।

—श्रीमती सुशीलादेवी, प्रयाग।

(१८)

पद्मश्री और रामकली

सेठ बैनीरामजी बड़े प्रसिद्ध व्यापारी हैं। इस समय आपकी धाक पूरे रामगढ़में फैली हुई है। जनता आपसे ऋण लेकर व्यापार करती है। इसीसे दबी हुई है। आपके इकलौते पुत्र जीवनदासका स्वभाव इतना परिश्रमशील नहीं है। होनेकी आवश्यकता भी नहीं दिखती। क्योंकि बैनीरामजीने काफी रुपया जमा कर लिया है, उन्हें इसीका भोगना पर्याप्त होगा।

इतना द्रव्य होनेपर भी सेठजीके पौत्र-पौत्रियां अधिक नहीं हैं। केवल एक पौत्री ललिता है, वह भी बीमार रहती है। इसकी मां भी दुबली-पतली बीमार-सी ही रहती है। अब सेठजीने सोचा कि अपने पुत्र जीवनदासका एक और विवाह कर दिया जाय तो अच्छा होगा। बस, इस विचारको कार्यमें परिणत कर दिया। एक अति सुन्दर व चटपटी कन्यासे पुत्रका विवाह कर दिया। जीवनदास भी नई वहूके प्रेममें मस्त हो गये। यह स्त्री पहलेसे सुन्दर और चालाक होनेके कारण घरभरका कंठाभरण बन गई।

बेचारी पहली वधू पद्मश्री एक सतीकी भांति चुपचाप घरमें पड़ी रहती थी। और पतिदेवकी व सबकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझती थी। इधर नववधू रामकलीका समय नाना प्रकारके लाड-चावमें जाने लगा।

एक दिन रामकली सिनेमा देखनेके लिये कपडा पहनकर व सखी सहेलियोंको साथ लेकर जानेको तैयार हुई तब सासने कहा कि हमारे यहाँ स्त्रियाँ बाहर नहीं घूमती हैं। घर पर तमाशा करवाकर देख लेना। लेकिन रामकलीको यह बात पसन्द न आई, वह अपने पतिकी सहायतासे घूमने लगी। शुभोदयका और भी उदय आया जिससे इनको एक पुत्रकी प्राप्ति हुई। पैनीरामजी पौत्रको देखकर बडे प्रसन्न रहते हैं। पुत्रवधूके कमरेमें कई-कई वार बहाना बनाकर चले जाते हैं। शिशुको तो दिनभर ही दादा-दादी उछालते और चूमते रहते हैं। इस अवसरपर सेठजीने बड़ी-बड़ी बधाईयां बांटीं। जन्म-भर जिन भाई बहनोंको एक टका भी नहीं दिया था और सेवक-सेविकाओंको पूछातक न था उनको सोनेके आभूषण बनवा दिये व मालोमाल कर दिया।

इधर पहली बधू पद्मश्रीका भी भाग्य चमका। उसे भी पुत्ररत्नकी प्राप्ति हुई। इस लड़केका भी सबने लाड़-प्यार किया, पर दोनों माताओंके दो हृदय हो गये।

पद्मश्री अपना सर्वस्व इसको समझती थी तो रामकली शत्रु समझने लगी। अब रामकलीके निर्द्वन्द राज्यमें खटका होने लगा, क्योंकि घरमें जो वस्तु आती है आधी-आधी बंट जाती है। शिशुका प्यार भी समानरूपमें रह गया। इस ईर्षाने इसे दुबली बना दिया व अब वह उतनी प्रसन्न भी नहीं रहती है। कोई उसके बच्चेको कुछ देता तो उसे पसन्द नहीं आता

न वह पति और ससुर-साससे ही खुश रहती। वह एकान्तमें विचार करती कि पद्माका लड़का न होता तो मुझे यह सब क्यों भोगना पड़ता। कभी सोचती यह न रहता तो अच्छा था मुझे कुछ यत्न करना चाहिए इत्यादि। बस इन्हीं कुविचारोंसे घरमें वैमनस्य बढ़ता ही गया।

पद्माका लड़का प्रसन्नकुमार बड़ा विनम्र और श्रद्धालु निकला है। वह प्रातःकाल उठकर माता-पिताको प्रणाम करता है व भगवानके दर्शन-पूजन करके भोजन करता है। पतिव्रता पद्मा पुत्रको देखकर फूली नहीं समाती है। वह विचार करती है कि यह धर्मज्ञ विद्वान बने ऐसा प्रयत्न मुझे करना चाहिए। इधर रामकली कुछ और ही सोच रही है।

षड् ऋतुओंमें बसन्त ऋतु बड़ी सुहावनी होती है। उस समय शीतका अन्त व ग्रीष्मका आरंभ होता है। वन-उपवनमें आम्र पल्लवित होकर मंजरीकी प्रतीक्षा करते हैं। मंद सुगंध वायुका संचार होता है। ऐसे समयमें उद्यानोंमें विचरना सबको अच्छा मालूम होता है। अतएव जीवनदास भी सकुटुम्ब भ्रमण करनेकी इच्छा करने लगे।

परन्तु प्रवास बड़ा लम्बा था, क्योंकि रामकली पद्माके साथ नहीं जा सकती। उसको तो अपना सब प्रबन्ध पृथक् ही करना होगा। इधर जीवनदास भी पद्माको छोड़कर जा नहीं सकते हैं। अतः दोनों स्त्रियोंका पृथक्-पृथक प्रबन्ध करना बड़ी कठिनता है। तो भी सब किया ही गया। लक्ष्मीकी कृपासे

सब काम हो जाते हैं। अधिक रुपया खर्च करके अधिक आनंद उठाना यह प्रगति देशके धनाढ्योंकी भांति जीवनदासकी भी हो गई। ये सब लोग हरिद्वार व जंबूकी ओर रवाना हुए। मार्गमें कई विश्राम लिये। कितने ही देश देखे व बहुत-सा माल भी खरीद किया।

एक जगह सेठ-साहब माल खरीद रहे थे, उनको बड़ा आदमी समझकर एक अनाथालयके संचालक बड़ी विनम्रतासे अपना वास्ता लेकर उपस्थित हुये व संस्था देखनेको चलनेकी भी प्रार्थना की। तब सेठजी कहने लगे—अरे महाराज! हम लोगोंको दम मारनेकी फुर्सत नहीं है, कामसे थककर दस बीस रोजके लिए घरसे भागे हैं।

संचालकने कहा-महाशयजी! संस्था तो रास्तेमें पड़ेगी, मांजी लोग भी देख लेंगी, यहांकी सब चीजें देखी है तब संस्था भी देखनी चाहिए।

सेठ साहब व रामकली तड़पकर बोले-अजी हमें अवकाश नहीं है। तब संचालकजी चुप बैठ गये व इन लोगोंकी खरीद फरोस देखने लगे। लगभग चारसौका कपड़ा खरीदकर जब दूसरी दुकान पर जाने लगे तब संचालकजी बोले—आप लोग यह रिपोर्ट ले लीजिये अवकाशमें देखियेगा। हमें आशा है कि आपसे संस्थाको अवश्य सहायता मिलेगी।

यह बात सुनकर तो रामकली बड़बड़ाने लगी व सेठजी भी गिडगिडाने लगे और कहने लगे कि आप जानते ही हैं कि

वर्तमान समय मंदीका है। कोई व्यापार पहली शानका नहीं है। इस समय चन्दा देना किसी तरह नहीं हो सकता माफ़ करिये। इतना कहकर ये लोग मोटरोंमें बैठकर नौ दो ग्यारह हो गये।

इधर संचालकजी अपना बस्ता बांधते हुए हंस पडे और दुकानदार भी हंस पड़े। एक दूसरेसे कहने लगे, देखो जीवनदासकी लीला। दान-धर्मके लिये गरीब बन गए, भाई हमीं लोग अच्छे हैं जो कम कमाते और कम खर्च करते हैं।

दूसरा कहने लगा—अरे भई, रुपया मनुष्यकी बुद्धिको बरबाद कर देता है।

तीसरेने कहा—लो संचालकजी, ये १०) रुपये हमारे अनाथालयमें जमा कर लो। बस, संचालकजी अपने स्थानको गये, दुकानदार काममें लग गए।

इधर मोटर जाते-जाते जीवनदासके संग एक खतरा हो गया। पद्माका पुत्र यकायक मोटरसे गिर पड़ा। उसके माथेमें चोट लगी, खून बहनेके साथ-साथ बेहोश हो गया। मोटर रुकी सब लोग उतरकर हाय-हाय करने लगे। पद्मा तो मूर्च्छित होकर गिर पड़ी।

जीवनदास सिर धुनकर पछताने लगे कि हाय! मैं घूमने क्यों निकला था। इधर पुलिसने आकर घेर लिया। ड्राइवरको घेरा, सेठ साहबसे कोतवाली चलनेको कहा कि चलकर रिपोर्ट लिखा दीजिए। इधर पानी डालनेसे बच्चेको

कुछ-कुछ होश आया और वह बड़-बड़ाने लगा कि छोटी मांने ढकेल दिया। बस अब क्या था, कोतवाल साहब भी आ पहुँचे और जांच पडताल होने लगी। जब उन्हें पता चला कि जीवनदासकी दो बीबियां हैं तो प्रसन्न हो गये और मूछों पर ताव देकर दारोगाकी ओर कुछ इशारा किया। उन्होंने भी शुभावसरकी स्वीकृति दी। तब तो बडी सरगर्मीसे पूछताछ होने लगी।

कोतवाल सा०—इस लड़केके सही-सही इजहार लिखनेसे यह माळूम हो गया कि इसकी सौतेली मांने ढकेल दिया है, और मौका देखनेसे भी साबित होता है कि यहां कोई गिरनेकी बजह नहीं है। क्यों सेठजी, दोनों बीबियोंमें झगड़ा रहता होगा, अजी दो विवाह करना बड़ा खराब है।

जीवनदास—अजी आप क्या कहते हैं, मेरे यहाँ झगड़ा वगैरह कुछ नहीं है। लड़का बेहोशीमें बकता है। देखिए अभी होशमें आता है यह कहकर सब मोटरमें बैठने लगे तब कोतवाल साहबने रोका और कहा—अभी आप अस्पताल और थानेपर चलिये, इसतरह नहीं छूट सकते, आपकी छोटी स्त्रीका चालान होगा, इत्यादि।

अब तो सेठजीके होश उड़ गए। उधर रामकली फूट-फूट कर रोने लगी। कोतवाल साहब—अपना कसूर साफ-साफ कहदो तो कुछ न होगा। अस्तु! जीवनदासको थानेमें जाना पड़ा। खरीद किया हुआ कपड़ोंका बंडल कहीं गिर पड़ा उसे

किसी पुलिसमैनने चटपट उठाकर घरकी हवालातमें बन्द कर दिया। थानेमें जाकर जीवनदासजी सोचने लगे कि यहां कोई जानकार तो है नहीं, कैसे छुटकारा हो। केवल अनाथालयके संचालक ही हमें जानते हैं, परंतु उनसे किसमुंहसे सहायता मांगूं और वे बेचारे कर ही क्या सकते हैं; अब तो रुपयोंसे ही छूटना होगा। बस जीवनदासने निर्ममत्व होकर थैलीका मुंह खोल दिया; तीन हजार देकर जीवनदासकी सकुटुम्ब मुक्ति हुई। ये लोग सीधे स्टेशन पर आ गये और धर्मशालासे अपना असबाब मंगा लिया। ट्रेनके आते ही उसपर सवार हो गये और तीसरे दिन अपने घर पहुँच गए। प्रसन्नकुमारकी चोटकी ड्रेसिंग भी अस्पतालमें हुई थी।

यहां आकर फिर उपचार किया गया, परन्तु घावमे पीप पड़ गई। अब वह बिस्तर पर ही पडा रहता। नगर भरके नरनारियोंमें अफवाह थी कि रामकलीने बच्चेको ढकेला। है जब इस बातको वह सुनती तो बकनेका पार न था। इसी कलह-कांडमें जीवनदासका स्वास्थ्य भी खराब हो गया। उन्हें तपेदिक यानी पुराना बुखार आने लगा। धीरे-धीरे प्रसन्नकुमार अच्छा हो गया पर जीवनदासके दिन पूरे हो गये। वे इस संसारसे चल बसे। रामकलीका आवारा लड़का उसे बहुत कष्ट देता। ये दोनों अलग-अलग रहती हैं। अमीरसे गरीब और सुखीसे दुःखी बनकर रहती हैं।

(१९)

रानी-रामा

रामकलीके पति सेठ श्रीनाथजी बड़े प्रसिद्ध व्यक्ति थे। पंचोंमें वही अगुआ माने जाते थे किन्तु अपने कामोंमें वैसे चतुर न थे। इनके यहाँ गृह-कलह बराबर होता रहता था। प्रकृतिकी दया अधिक न थी। सेठजी धनवान अवश्य थे किन्तु सन्तानमें केवल दो पुत्रियां ही थीं।

पुत्रियोंका लालन-पालन बड़े चावसे होता था। पौष्टिक पदार्थ खानेसे और स्वच्छ वायुके सेवनसे दोनों कन्याएं क्रमशः ९ और १० सालकी उम्रमें ही बडी लगने लगीं। अब तो इनके विवाहकी चिन्ता श्रीनाथको सताने लगी। इधर नगरके लोगोंने भी यही प्रस्ताव सेठजीसे करना प्रारम्भ कर दिया।

एक दिन भोजनोपरान्त सेठ साहब अपने दीवानखानेमें बैठे थे, रामकली पासमें बैठी एक जरीका फीता बना रही थी।

श्रीनाथजी-आजकल यह क्या धुन सवार हुई है आरामके समयमें भी यही ले बैठती हो, क्या बनाती हो, ऐसे-ऐसे दस-बीस फीते कल ही बाज़ारसे आ जायेंगे।

रामकली—रानी-रामाके विवाहके लिए बना रही हूं। क्या एक चीज़ भी स्वयं बनाकर न दूंगी? पुत्रियाँ बड़ी लाड़ली हैं इनके लिए कुछ तो करूं।

सेठजी—अभी तो कहीं ठीक भी नहीं हुआ है। तुम तो जिकर चलाकर और भी चिन्तामें डूबो देती हो। कहाँ देखूँ क्या करूं, कुछ समझमें नहीं आता है। नगरमें तो कोई अच्छा घर वर दिखता नहीं है।

रामकली—नगरमें करोड़पति क्या लखपति भी विरले हैं लेकिन अब ढूंढनेका मौका ही कहां है, जो भी हो इस जाड़ेमें तो विवाह अवश्य हो जाना चाहिए।

सेठजी—हां, अवश्य करूंगा और दोनोंका करूंगा। मेरी सलाह तो यह है कि रामदासजीके दो पुत्र हैं। वे भी लगभग १० और ११ वर्षके ही होंगे। उनके साथ दोनों पुत्रियोंका विवाह एक ही साथ कर दूँ। क्योंकि रामा भी रानी-हीके बराबर लगती है। हमारे इस काममें राजा-महाराजा भी आयेंगे। ऐसा उत्सव बार-बार करनेमें कष्ट है, एकबार आनन्दसे सब काम हो जायगा।

रामकली—अजी, दोनों एक-साथ चली जायँगी तो मैं घरमें कैसे रहूंगी? अभी तो रामा छोटी भी है, पर साल उसका विवाह होगा। लड़के तो अच्छे है। घर भी साधारण ही है, परन्तु लडके छोटे लगेंगे।

सेठजी—हूं, छोटे काहेसे होंगे। उम्रमें तो शायद महीना दो महीना छोटे हों तो हों, वरन् बराबर होंगे। मैं ही तुमसे सालभर छोटा हूं कहो याद है न?

रामकली—सब याद है तभी तो कहती हूं छोटा न होना

चाहिए । पहले जमाने अब नहीं है कि लड़कियां तपस्या करती रहेगी । अतः जो इच्छा हो करिये, परन्तु विवाह जाडेमें अवश्य हो जाय । इतनेमें बाहरसे आवाज आयी कि वकील साहब मिलनेके लिए आए हैं । यह सुनकर दीवानखानेसे सेठ साहब चले गये और अपनी गद्दीपर आकर सबसे मिलने-जुलने लगे ।

इस बातको गुजरे लगभग एक महीना हुआ होगा कि रानी-रामाका विवाह रामदासके लड़कोंसे करना निश्चित हो गया । लेन-देनकी रसम बड़ी धूमधामसे पूरी हुई । दावतें दी गयीं, नृत्य और गानोंका तो ठिकाना ही न था । रामकली अब तो सचमुच ही दहेजकी तैयारी होने लगी ।

यह समाचार स्थानीय कन्याशालाकी अध्यापिकाओंको भी मिला । क्योंकि अब दोनों कन्याओंका पाठशाला गमन रोक लिया गया था । वे कहने लगी-सेठको क्या हो गया है ? इतने छोटे लड़कोंके गलेमें अबोध बालिकाएं बांध रहा है । इनका पढ़ना भी रोक लिया । अतः दोनों अध्यापिकाएं सेठ साहबके घर पहूंची ।

अध्यापिकाएं—बहूजी, जयजिनेश, कहिये सब कुशल मंगल तो है । रानी-रामाका पढ़ना क्यों छुड़ा दिया ? अभी तो इन्हें बडी कठिनतासे कुछ सिखाया है । कुछ दिन और पढ़-लिख लेतीं तो शास्त्र पढने लायक हो जातीं ।

सेठानी—अजी, बस पढ़ना था सो पढ़ चुकी अब तो

उनकी शादी होगी अपने घर जांयगी। मैंने तो कहा था कि रामाका विवाह अभी न करो लेकिन उसके पिता तो सुनते ही नहीं। कहते हैं कि विवाह तो हो जाने दो, ससुराल न भेजना। जब बडी हो जायगी तो भेज देना।

अध्यापिका—खैर, बस सब तय हो चुका है तो अब कुछ कहना बेकार है। परन्तु इस शुभावसर पर आप लोगोंको कुछ दान अवश्य करना चाहिए। स्थानीय पाठशाला तथा अनाथालयमें कोई महत्वका कार्य कर दीजिए। वर्तमानमें वहां द्रव्यकी बहुत कमी है।

सेठानी—अजी हमारी ऐसी सामर्थ्य कहां है कि विवाहका इतना बड़ा कार्य भी करें, और दान भी दें। हमें तो दर्जियों और सुनारोंसे ही अभी भुगतना बाकी है। देखो इस थानका रेशम कितना बढ़िया है। १०) गज आया है। ऐसी-ऐसी ५० साड़ियां तो जरूरी हैं।

अध्यापिका—अजी काम तो सभी जरूरी हैं। जिसको जितनेमें निवटाया जायगा, उतनेमें निवट जायगा। इस रेशममें तो बड़ी भारी हिंसा होती है। इसी थानमें दो लाखके लगभग कीड़े मारे गये होंगे। इसकी जगहपर आप सूती कपड़ोंसे व नगद दामसे भी काम चला सकती हैं।

सेठानी—अध्यापिकाजी, मुझे तो रेशम खरीदनेका स्वयं त्याग है परन्तु सेठजी ला देते हैं तो पहनना ही पड़ता है।

आखिर बड़े घरकी इज्जत कैसे बचे ? क्या पहनकर दस आदमियोंमें बैठा जाय ? आप ही बतावें वह अच्छा लगेगा ?

अध्यापिका—बहूजी ! यह यों दूना पापका काम है कि आपने त्याग कर दिया और फिर पहनने लगी हैं। बड़े आदमी स्वयं तो कोई नहीं खरीदते हैं। सब काम इशारोंसे होता रहता है। आप पहनती हैं, पसन्द करती हैं और पहनती हैं यही दोषका कारण हो जाता है। इसके स्थानपर बढ़िया मलमलपर जरीका काम करके व बनारसी काम कराकर पहन सकती हैं। इतनेमें एक मुनीम साहब हांफते हांफते कपडोंका गट्ठर बगलमें दबाये हुए आये। बोले—लीजिये सब दुकानों परसे खोजकर लाया हूं। अब इससे बढ़िया कपडा कहीं नहीं है।

सेठानी—देखूं क्या लाए हो, अजी बस इसमें तो दो रेशमी थान अच्छे हैं। हाँ, एक यह थान अच्छा है इसकी कांचली (चोली) बन जायगी।

अध्यापिकाएं—(परस्पर मुस्कुराकर) बहूजी, अब हमें आज्ञा हो हम जाती हैं। पुनः निवेदन करती हैं कि दान-धर्मका याद रखियेगा। यही सब सुखोंका मूल है। पुण्यके विना संसारी सुख भी नहीं ठहरते हैं।

इतनेमें आवाज आई—बहूजी ! दर्जी खडा है सीनेको कपड़े दीजिए, पांचों दर्जी खाली बैठे हैं, लंहगे सब मिल चुके। अब क्या सिलाना है कृपया आज्ञा दीजिएगा। बहूजी उठी और एक थान लेकर चोली नपाने लगी। जवान दर्जी चोलियोंको

तरह-तरहसे नापने लगा। ठीक बैठ जाय इसकी चिन्ता बहू-जीसे ज्यादा दर्जी मियांको थी।

अध्यापिकाएं अपनी हंसी दबाकर किसी तरह वहांसे निकल आईं। बाहर आकर खूब हंसी। बहन अच्छा चंदा मिला। खैर, चोलीका सिनेमा तो देख लिया। महीने दिनके पश्चात् सुना गया कि रानी-रामाका विवाह बडी धूम-धामसे हो गया है। अस्तु, कुछ दिनों तक नगरमें यही चर्चा रही, कोई कहता कि दहेज खूब दिया है, कोई कहता कि परस्पर झगडा हो गया, कोई कहता कि रंडियोंका नाच खूब हुआ, कोई कहता कि नेताओंको धक्के दिये गये। बराबर ऐसी चर्चा सुनी जाने लगी।

समय बीतते देर नहीं लगती। रानी रामाका विवाह हुए पाँच वर्ष हो गये हैं। लड़के व लड़कियां १४-१५ वर्षमें पहुँच गये हैं। परन्तु खेदका विषय है कि रामा क्षय रोगसे पीडित है और रानीका पति गायब हो गया है। सुना जाता है कि वह किसी फकीरके साथ चला गया है। इसके पिताको बडा रंज है क्योंकि एक दिन गांजा पीते हुये उन्होंने अपने पुत्रको देख लिया था। इस अपराध पर पीटा था, तभीसे वह लापता है। इधर रामकली और रामदास भी दुःखी हैं, क्योंकि दोनों पुत्रियां घरमें ही पडी रहती हैं। एककी दशा अब-तबकी है और दूसरी विरहिणी है।

(२०)
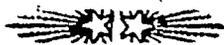
राजा कनकसेनके नेत्र

कनकावती नगरीमें भूधरसा नामके नगरमें सेठ रहते थे। उन्हें तीन पुत्रियां थीं। उनमें सबसे छोटी पुत्री चपला सुन्दरी और बुद्धिमान थी। उसे गरीबोंपर बड़ी दया आती थी। गरीबोंको अन्याय सहन करना पड़ता था, सो उसे सहन नहीं होता था। उसे मन ही मन बहुत दुःख होता था।

कनकावतीके राजा कनकसेनके राज्यमें गरीबोंको हक नहीं मिलते थे। धनिक लोग अदालतमें जीत जाते।

कनकसेनसे यह स्थिति कहनेकी किसीकी हिम्मत नहीं होती। सबको ऐसा विचार होता कि राजासे सत्य बात कहेंगे तो उनको सत्य नहीं जंचेगा, सत्य कथन करनेवाले भी कम होते हैं और सुननेवाले भी।

एक दिन सेठानीका जन्म दिन था। इसलिए उनके यहां यहां हर्ष मनाया जा रहा था। सेठानीका मन भी प्रफुल्लित था। अगले वर्ष व्यापारमें बहुत नफा हुआ था। इस हर्षमें उनका मन फूला न समाता था। उन्होंने तीनों पुत्रियोंको कहा—आज तुम तीनोंको मनचाही भेंट देनी है जिसकी जो इच्छा हो मांग लो।

चपला—ऐसा अनिश्चित वचन न बोले। जो मैं मांगूंगी

वह अपन न दे सकेंगे। आपके पास पैसे बहुत हैं लेकिन दुनियामें सब कुछ पैसेसे ही नहीं मिलता।

सेठजी—उसकी चिन्ता तू क्यों करती है? बिना संकोच मांग लें, मैं वही दूँगा।

चपला—पिताजी! मेरी मांग ऐसी होगी कि आपकी जिन्दगी डगमगा जावेगी। इसलिए मुझे नहीं मांगना है।

सेठजी—अब तो मैं तभी सच्चा होऊंगा जब तेरा मांगा हुआ वरदान दूँ। न मांगेगी तो मुझे आहार पानीका त्याग है।

एक लड़कीने नौ हजार रुपयोंकी मोतियोंका माला मांगी, दूसरीने रहनेको एक बडा महल मांगा। बाकी चपला बच गई।

चपला—पिताजी देने हो तो मुझे कनकसेनके नेत्र चाहिए। और मैं कुछ नहीं मांगती।

सेठजी इस बातको सुनकर मूर्छित हो पृथ्वी पर जा गिरे। बहुतसे शीतोपचार करनेके उपरांत उनकी मूर्छा दूर हुई। उन्होंने कहा—चपला! तू क्या बोली है? फिरसे विचार कर मांग।

चपला—न दीजिए तो भी मुझे कोई क्रोध नहीं है। अगर देना है तो वही दीजिए।

सेठजी—ऐसा कैसे हो सकता है?

चपलाने रास्ता बताया।

अपनी नगरीमें शुक्रवारका बाजार लगता है। वहां नौकरको घरकी पुरानी शीशियां बेचनेको भेंजे और उसकी कीमत पूछनेपर राजाके नेत्र कहलावें। नौकरके ऐसा कहनेपर राजाके सिपाही उसे पकड़कर राजाके पास ले जावेंगे। नौकर कह देगा कि "चपलाने ऐसी कीमत बतलानेको कहा है। मेरा कुछ अपराध नहीं है, मैं क्या जानूं ऐसा क्यों कहा है? राजाजी मेरा नाम सुनकर मुझे तुरन्त बुलावेंगे। फिर मुझे जो उचित उत्तर मिलेगा वह कहूंगी। इस बातके लिए आप किसी तरहकी चिन्ता न करें।

शुक्रवारका दिन आ पहुंचा। नगरसेठजीने नौकरको सब बात समझा दी और उसे पुरानी शीशियां वेचनेको भेज दिया। बाजारमें कितने ही किस्मकी नई व पुरानी चीजें मिलती थी। एक जगह सेठजीका नौकर भी शीशियां लेकर बैठ गया। सैंदू नामके मुसलमानकी नजर एक खूबसूरत बोतल पर पडी। नौकरने पूछा—लेनी है? सैंदूने एक बोतल उठाकर पूछा क्या कीमत है? नौकरने कहा—इसकी कीमत राजा कनकसेनके नेत्र हैं।

"सैंदु" छोटी पुलिसका आदमी था। उसने अपने अधिकारियोंको कहा और अधिकारियोंने यह बात राजाके कान तक पहुँचाई।

राजाके कोपकी सीमा न रही। थोड़ी ही देरके बाद सेठजीके नौकरको पकड़ मंगाया गया। राजाने उसे पूछा—मूर्ख!

तेरी अकल क्यों मारी गई है ? क्यों मरना चाहता है ? क्या तू शीशियोंके बदले मेरे नेत्र मांगता है ?

नौकर बोला—जहां-पनाह ! मेरी अकल मारी नहीं गई है । मैं मरना भी नहीं चाहता । इसमें मेरा कोई दोष नहीं है । दूषित तो "चपला" सेठकी पुत्री है । उसके कहनेसे ही मुझे आपके नेत्र मांगने पड़े हैं ।

चपलाको तुरत बुलाया गया । चपला आकर विनयसे खड़ी हो गई । और बोली—राजाधिराज ! क्षमा कीजिए, नौकरकी कही हुई बात मैंने ही कहलाई थी ।

राजाने कहा—चपला, ऐसा क्यों कहा ? क्या करूं तू नगरसेठकी पुत्री है, कोई गरीबकी पुत्री होती तो प्राणांत दंड मिल जाता । तुझे तो देश-निकालेकी ही सजा भुगतनी पड़ेगी ।

चपला—यदि मैं दूषित होऊं तो जरूर देश निकालेकी सजा भुगत लूंगी । दूषितका दोष बतानेके लिए यदि सत्य बोलनेमें दोष गिना जाता हो तो मैं गुनाहगार हूं । सत्य पूंछे तो राज्यमें आप ही सबसे बड़े गुनाहगार हैं ।

राजा—तूँ क्या बोलती है, मै गुनाहगार हूं ? कैसे ? देखिए राजाजी ! राजा तो प्रजाके पिता-तुल्य हैं । जैसे पिता सब बालकोंको एक समान चाहता है वैसे ही राजाका कर्तव्य है कि धनिक और गरीबको समान अधिकार दे । जिस राज्यमें धनिक और गरीबकी ओर समदृष्टि नहीं रहती उस राज्यमें न्याय नहीं है ऐसा समझना चाहिए । खबर होनेपर भी राजा

जैसे तैसे राज्य व्यवस्था चलने देता है। प्रजाका कोई हित नहीं चाहता, वह राजा सनेत्र होते हुये भी अँधेके समान है। आपने तो अभी ही कहा है कि "तू नगरसेठकी पुत्री है गरीबकी पुत्री होती तो देहांत दण्डकी सजा होती।"

क्या नगरसेठकी पुत्री होनेसे मेरा दोष कम हो जाता है?

इन बातोंको सुनकर राजाकी बुद्धि ठिकाने आ गई। उन्हें मालूम हो गया कि लड़की सत्य कहती है।

कठोर वचन होने पर भी सत्य वचन निडरतासे कहनेवाले विरले होते हैं। चपलाके शब्दोंसे राजा प्रसन्न हुए और अपने न्यायचक्षु खोलनेवाली चपलाको छोड दिया। चपलाको बहुत–बहुत धन्यवाद दिया।

नगरमें लोग चपलाकी चपल (चंचल) तीक्ष्ण बुद्धिकी प्रशंसा करने लगे।

लेखिका:–श्री पं० प्रभावतीबाई–खंडवा